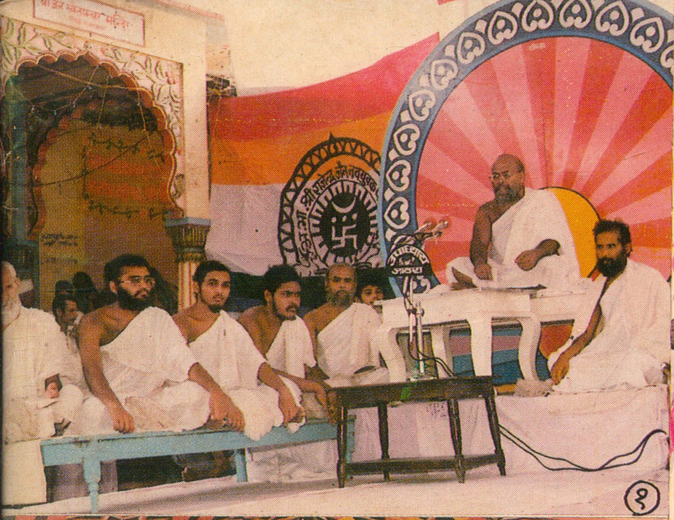

शाश्वत धर्म

नवम्बर +
दिसम्बर १९९१

८-९

संपादक - जे. के. संघवी

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
  नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)
* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
  (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)
* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
  (विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)
* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
  (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)
* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
  (नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)
* चिर प्रवासी — चार रूपये
  (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)
* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
  (श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)
* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
  (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)
* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) — बीस रूपये
  (आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)
* भक्ति सागर — दो रूपये
  (स्तवनों का संकलन)
* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती) — दस रूपये
* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
  (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)
* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये
* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये
* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
  (नवकार पर मननीय प्रवचन)
* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
  (पर्युषण व्याख्यान)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
  (विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
  (विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)
* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) — दस रूपये
  (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये ।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)

* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
(मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)

* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
(विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)

* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
(ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)

* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
(नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)

* चिर प्रवासी — चार रूपये
(जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)

* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
(श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)

* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
(विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)

* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) — बीस रूपये
(आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)

* भक्ति सागर — दो रूपये
(स्तवनों का संकलन)

* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती) — दस रूपये

* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
(मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)

* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये

* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये

* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
(नवकार पर मननीय प्रवचन)

* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
(पर्युषण व्याख्यान)

* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद्) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
(विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)

* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
(विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)

* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) — दस रूपये
(प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक
संस्थापक : व्या. वा. आचार्यदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

जावरा अधिवेशन विशेषांक

सम्पादक : जे. के. संघवी
सहसम्पादक - शांतिलाल सुराना
सहयोग - सुरेन्द्र लोढ़ा

संपर्क सूत्र

फोन नं. - ५३४ ०७ २४
शाश्वतधर्म कार्यालय,
जामली नाका, थाने - ४०० ६०१.

सदस्यता शुल्क :
बीसवर्षीय : तीन सौ रुपये
पांचवर्षीय : एक सौ रुपये
वार्षिक : पच्चीस रुपये
यह अंक : दस रुपये

वर्ष : ३९ * अंक : ६ - ७ * नव. + दिस. १९९१

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

शाश्वत धर्म

अनुक्रम

१.	सम्पादकीय	३
२.	परिषद गीत	४
३.	स्व. पू. गुरुदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी म. द्वारा दिया गया आशीर्वाद	५
४.	स्व. पू. श्रीमद्विजयविद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म.का प्रेरणादायी संदेश	६
५.	समय की पुकार	७
६.	पू. आचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. द्वारा परिषद अधिवेशन के लियेकिया गया आशीर्वाद पूर्ण आव्हान	८
७.	जावरा अधिवेशन - कार्यक्रमों का क्रम	९
८.	पन्दहवें अधिवेशन में पारित प्रस्ताव	१५
९.	परिषद के नये पदाधिकारीगण	१९
१०.	राष्ट्रीय कार्यसमिती मध्यप्रदेश ईकाई	२१
११.	महामंत्री का प्रतिवेदन	२३
१२.	प्रगति विवरण	२५
१३	इतिहास के आईने में परिषद की तस्वीर	२७
१४.	अ.भा. परिषद के अधिवेशन	३८
१५.	परिषद के नए पदाधिकारियों का परिचय	४५
१६.	अधिवेशन को सफल बनाने में जुटे कर्मवीर	४५
१७.	केन्द्रीय पदाधिकारी एवं सदस्यों के नाम एवं पत्ते	४८
१८.	समाचार दर्शन	५३
१९.	चित्रदर्शन	६६

महत्वपूर्ण निर्णय

वर्तमान में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के विविध आयोजनों को देखकर कभी-कभी लगता है कि धर्मोन्नति हो रही है। लोगों में धर्म के प्रति रुचि बढ़ रही है। लेकिन जरा गहराई में झांककर देखे तो अनुभव होता है कि कोरा दिखावा बढ़ रहा है। अधिकांश तप एवं विभिन्न अनुष्ठानों की पृष्ठभूमि मे नामना, कुछ कर दिखाने की होड़ नजर आती है। असल में विभिन्न आयोजनों का मकसद हमारे जीवन में सुसंस्कारों को जागृत/जीवित रखना है। हम बाहरी एवं आंतरिक जीवन में एक बनें। जब तक हमारे दैनंदिन कार्यक्रम में धर्म के संस्कारों की झलक नहीं मिलती, हमारी दिनचर्या मंदिर, धर्मशाला, दूकान व घर मे एक नहीं होती तब तक बाहरी क्रिया मात्र धन,शक्ति व समय का दुरूपयोग ही है। वर्तमान स्थिती बड़ी दुःखद है। हमारे अंतरंग जीवन में धर्म के संस्कार निरंतर तेज गति से कम होते जा रहे हैं, जिसका मूल कारण है कि आज जैन समाज धार्मिक निरक्षरता से पीड़ित है। हमारी युवा पीढी तो लगभग जैन सिध्दान्तों, आचारों एवं भव्य भूतकाल के इतिहास से अपरिचित सी है। तेज रफ्तार से भौतिकता की आंधी में वह भटकती जा रही है।

सारी समस्याओं के मूल में है धार्मिक अज्ञानता। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के जावरा में सम्पन्न पन्द्रहवें अधिवेशन में धार्मिक ज्ञान की ज्योति जलाने की ओर विशेष ध्यान दिया जाकर नगर-नगर में धार्मिक पाठशालाऐं प्राथमिकता के तौर पर खोलने का अनुमोदनीय निर्णय लिया गया है। धार्मिक शिक्षा कार्यक्रम को गति प्रदान करने हेतु 'श्रीमद् यतीन्द्र-जयन्त ज्ञानपीठ' की स्थापना की गयी है जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम व्दारा सुर्वाहित ढंग से धार्मिक शिक्षा प्रदान की जायेगी। परिषद व्दारा समयानुरूप यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है।

दूसरी समस्या हमारे सामने है खान-पान की अशुध्दि। आहार का प्रभाव विचार एवं स्वास्थ्य पर पड़ता है। जो भी मिला, जैसा भी मिला एवं जब भी मिला, मात्र जीभ के स्वाद को दृष्टि सन्मुख रखकर आज लोग जी रहे है। मानव प्रकृति से शाकाहारी है किन्तु आज उस पर प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से मांसाहार के दुष्परिणाम पश्चिमी देश भुगत रहे है एवं वैज्ञानिकों, शोधसंस्थानों (लेबोरेटरी) व्दारा इसे स्वास्थ्य घातक सिद्ध किया गया है फिर भी इसे बराबर बढावा दे रही है। नये-नये कत्लखाने खोलकर हमारी पशु संपदा को निरंतर समाप्त करने पर तुली है। महावीर, राम, बुद्ध, गांधी की इस पावन धरा पर अहिंसा का गला घोंटा जा रहा है। जहां इस देश में दूध एवं घी की नदियॉ बहती थी, आज पशुसंपदा के नष्ट होने के कारण दूध व घी के भाव आसमान को छू रहे हैं। अशुध्द आहार के प्रयोग से लोग नाना प्रकार के रोगों के शिकार बन रहे हैं। मांसाहार तामसिक आहार है, जिसके सेवन से व्यक्ति में क्रोध, हिंसा का प्रादुर्भाव होता है। फलस्वरूप आज आतंकवाद मुंह खोलकर खड़ा है। जानवरों को मार-मार कर निर्दय बना मानव आज बिना हिचकिचाहट के मानव संहार कर रहा है। उसमें संवेदनशीलता समाप्त हो गयी है। मांसाहार विक्री करने वाले व्यापारिक संस्थान मात्र अपनी आय की ओर ध्यान केन्द्रित

कर खपत बढाने के लिये आये दिन प्रचार माध्यमों व्दारा विभिन्न प्रकार के भ्रम पैदाकर लोगों को मांसाहार की ओर योजनाबध्द तरीके से प्रवृत्त कर रहे हैं।

ऐसे समय में हमारा मानवीय, सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्य हो जाता है कि मानवता पर कलंक के समान मांसाहार की हिंसक प्रवृत्ति को रोकने के लिये कमर कस कर तैयार हो जायें। लोगों के सामने असली बात को रखें। प्रचार/विज्ञापन युग में उपलब्ध साधनों द्वारा जनहित में शाकाहार का व्यापक प्रचार/प्रसार करें। परिषद के अधिवेशन में प्रस्ताव पारित किया जाकर शाकाहार के व्यापक प्रचार का समयानुरुप योग्य निर्णय लिया गया है।

परिषद अधिवेशन में लिये गये धार्मिक शिक्षा एवं शाकाहार प्रसार के दोनों महत्वपूर्ण निर्णयों को कार्यान्वित करने में परिषद के हजारों पार्षद जुट जायें, इसी आशा के साथ विराम लेता हूँ।

J. K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)

ध्वज वंदन हेतु परिषद् गीत

(राष्ट्रगीत जन मन गण अधिनायक की धुन)

जन गण मंगल दायक जय है, जैनाकाश प्रकाशी,
आत्मीय भाव अविरोध जगाकर, दर्शन ज्ञान उतुंग,
मार्ग सुदर्शक तब आज्ञा में, है कल्याण अभंग।
तन मन धन तव आगे, विश्व प्रेम नित जागे,
चाहे सब सुख शान्ति।

जन मन शान्ति प्रदायक जय हे, जैनाकाश प्रकाशी,
अज्ञान तिमिर को दूर हटाने, शक्ति हमें दे अखूट,
संगठन प्रबल बना करके, कार्य करे हम अटूट।
नत मस्तक तव आगे, अर्पित भाव प्रकाशे,
शान तिहारी विकासी।

जन–जन शान्ति प्रदायक जय है, जैनाकाश प्रकाशी,
सद शिक्षा का प्रचार करें हम, ज्योति हमें दे आज,
रीति रिवाज सुधार करे हम, उन्नत करे समाज।
शुभ मति गति अति राजे, राज जयन्त विराजे,
जय राजेन्द्र तिहारा।

सब जय शान्ति प्रदायक, जय है जैनाकाश प्रकाशी,
जय हे, जय हे, जय जय जय जय है, जैनाकाश प्रकाशी,
जैन धर्म की जय हो।

स्व. पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्‌विजयविद्याचंद्रसूरीश्वरजी महाराज के द्वारा परिषद को दिया गया

प्रेरणादायी सन्देश

परिषद के समस्त कार्यकर्तागण !

धर्मलाभ !

मुझे अतीव ही प्रसन्नता है कि आप सभी स्व. पू. पा. गुरूदेव श्री के सन्देश को ध्यान में रखते हुए समाज व संघ के कार्य करने में उत्साहित हैं । वैसे सभी एक विचार धारा के नहीं होते फिर भी सभी से सहयोग व सद्भावना रखते हुए परिषद् की भावना को साकार करने का लक्ष्य दृष्टि के सामने रखकर सक्रिय हो काम करें ।

मैं आप सभी से यही अपेक्षा करता हूँ !

श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामी का २५०० वाँ निर्वाण उत्सव भी आ रहा है उस प्रसंग को भी रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न करने की दिशा में कदम बढाना है । परिषद कार्यालय से समय-समय पर सूचनाएँ मिलती रहेगी, तदनुसार कार्यक्रम की सफलता के लिए आप सभी अवश्य ही संकल्प कर ले !

मैं आप सभी को निरुत्साही नहीं किन्तु प्रबल उत्साही के रुप में देखना चाहता हूँ !

यह निश्चित मान लें कि गुरुदेव द्वारा जो मार्ग मिला है उस पर दृढता से चलें, यही कर्तव्य पालन का सच्चा स्वरुप है ।

संगठन ही शक्ति है, संप स्नेह और सद्भावना बढने पर ही संगठन दृढ होता है और ऐसा दृढ संगठन ही समाज, संघ और राष्ट्र के लिए आशीर्वाद रुप बन सकता है ।

स्व. पू. गुरुदेव श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज से प्रेरणा पाकर समाज के युवकों ने ऐसा संगठन बनाया है जो अ.भा. श्री राजेद्र जैन नवयुवक परिषद के नाम से सक्रिय हुआ है और पू. पा. गुरुदेव श्री से मार्गदर्शन पाकर गतिविधियाँ संचालित की ।

मुझे प्रसन्नता है कि गुरुकृपा से समाज की यह संस्था अभी स्थिर रह सकी है। समयानुसार उतार-चढाव आते ही रहते हैं फिर भी युवा पिढी व युवक विचार धारा के गुरुभक्तों ने इस संस्था के प्रति अपनी निष्ठा कायम रखी है । मैं समाज के हर व्यक्ति से यही चाहता हूँ कि आप तन-मन-धन से समाज की इस संस्था को पूरा-पूरा सहयोग देकर प्रगतिशील बनावें और हर गांव/नगर में इसकी शाखाएँ स्थापित कर संगठन को दृढ बनावें !

परिषद द्वारा आयोजित किये जा रहे हर सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में आप सभी का पूरा-पूरा योग रहना चाहिए।

आज के युवक ही तो भविष्य की आशाएँ बने हुएँ हैं। उनको गतीशील बनाने का काम समाज का है।

मैं चाहता हूँ प्रत्येक गावं में परिषद के माध्यम से धार्मिक पाठशालाएँ, वाचनालय, और समय-समय पर अन्य धार्मिक उत्सवों को भी संचालित किया जाये और उसमें समाज की ओर से सहयोग दिया जाये।

देश काल की स्थिति हमें जागृत होने का जोरों से आव्हान कर रही है, हम जागें और सक्रिय कार्यकर्ताओं को पूरा योगदान दें।

खाचरौद **विजय विद्याचंद्रसूरि का धर्मलाभ**
दि. ७-४-१९७४

परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष का प्रतिवेदन.......

श्रमण भगवान महावीर के परिनिर्वाण एवं गुरु गौतमस्वामीजी के केवल्यज्ञान की स्मृति कराता हुआ नव वर्ष आप सभी के लिये सुखदायी हो, यह मंगलकामना करता हूँ।
नववर्ष के नवप्रभात में यह आशा करता हूँ कि गुरुदेव श्रीमद्‌यतीन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा प्रज्वालित युवा चेतना की मशाल अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के चहुंमुखी उद्देश्यों की पूर्ति में वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा से तन-मन-धन से अर्पित रहेंगे।

इन्ही आशाओं के साथ
सेवंतीभाई मोराखिया
अध्यक्ष- अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

पंद्रहवें अधिवेशन के लिए प्रेरणादाता का आशीर्वादपूर्ण आव्हान

प्रभुश्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरगुरुभ्यो नमः

सुश्रावक श्री

धर्मलाभ। परम कृपालु पूज्यपाद गुरुदेवश्री की परम कृपा से हम सुखशाता में हैं, यहाँ पर संघ में आनंद मंगल प्रवर्तमान है।

विशेष अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद जिसकी स्थापना स्व. परम पूज्य गंभीर गणनायक गुरुदेवाचार्य भगवन्त श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के द्वारा की गई है। गुरुदेव के मंगल एवं सुखद आशीर्वाद से परिषद अद्यापि पर्यन्त विभिन्न स्थानों पर कार्य कर रही है।

परिषद् का त्रिवार्षिक अधिवेशन दि. १५/१६ अगस्त १९९१ श्रावण सुदी ६,७ को जावरा (म.प्र.) में सम्पन्न होने का तय हुआ है। परिषद् के इस पावन प्रसंग की प्राप्ति से स्थानीय संघ एवं शाखा परिषद में हर्षोल्लास छा गया है।

"परिषद की प्रगति समाज की प्रगति है।" के सूत्र को देकर स्व. गुरुदेवश्री ने सभी को अपना कर्तव्य मार्ग प्रदर्शित किया है।

अ.भा. स्तर की यह सामाजिक संस्था परिषद के थे, है और होंगे सभी सदस्यों के लिये गौरव प्रदायिनी हैं।

इसके अधिवेशन में सभी अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर परिषद् के प्रति अपनी समर्पित भावना का परिचय देंगे।

मैं चाहता हूँ परिषद् का प्रत्येक सदस्य समाज की जन्म पत्रिका को बनानेवाला है। प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है वह स्वयं आये और अन्य सदस्यों को लेकर के आवे। यह अधिवेशन जिसमें परिषद् प्रगति हेतु कई कार्यक्रम तय किये जावेंगे।

आप को इस अधिवेशन में अवश्यमेव आना है, इस बात को भूलें नहीं। धर्म उद्यम रखें/पत्रोत्तर दें।

- आचार्य जयंतसेनसूरि का धर्मलाभ

जावरा. - दि. २/८/९१.

जावरा अधिवेशन, - कार्यक्रमों का क्रम

- श्री अशोक श्री श्रीमाल - टांडा द्वारा

अखिल भारतीय श्री राजेंद्र नवयुवक, परिषद का पन्द्रहवाँ अधिवेशन परिषद के प्राण पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में उनके चार्तुमास काल में ही १५ व १६ अगस्त १९९१ मिती श्रावण शुक्ला ६ व ७ विक्रम संवत २०४८ गुरुवार तथा शुक्रवार को मध्य प्रदेश के रतलाम जिले में जावरा नगर में आयोजित किए जाने की ज्योंही घोषणा हुई, परिषद के दूर-दूर तक फैले कार्यकर्ताओं तथा स्नेहियों में हर्ष की लहर आंदोलित हो उठी । श्री त्रिस्तुतिक संघ जावरा तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, शाखा जावरा उत्साह व उल्लास से भर गया । पूज्य आचार्य देवश्री का चातुर्मास विविध ऐतिहासिक आयोजन के साथ धर्मलाभ प्रवर्तन कर ही रहा था । जावरा में सुविशाल पैमाने पर तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई । पिपली बाजार स्थित श्री राजेन्द्र जैन पौषधशाला के सन्मुख विशाल मंच तथा मंडप बनाने की योजना बनाई गई । कोई डेढ़ हजार प्रतिनिधि देश भर से आने की संभावना बलवती हो उठी । पूज्यपाद जैनाचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजीमहाराज ने एक पत्र लिखकर समस्त परिषद सदस्यों से समाज संगठन के इस महायज्ञ को सफल बनाने में जुटने का आव्हान किया । परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीभाई मोरखिया (बम्बई), महामंत्री - श्री बाबुलालजी बोहरा (नागदा जक्शन), प्रदेशाध्यक्ष - डॉ. श्री सोहनलालजी सुराणा एवं मंत्री श्री प्रकाशचंदजी जैन तथा जावरा शाखा परिषद के अध्यक्ष - श्री बाबुलालजी रुणवाल, तथा महामंत्री महेन्द्रजी सुराणा ने अलग-अलग या संयुक्त अनुरोध पत्र भेजकर अधिकाधिक संख्या में अधिवेशन में भाग लेने का आग्रह किया । जावरा में अधिवेशन को सफल बनाने हेतू विभिन्न उपसमितियाँ गठित कर तैयारी प्रारम्भ कर दी गई ।

निश्चित दिनांक १५ अगस्त भारत की स्वतन्त्रता का गौरवमयी वार्षिक दिवस है । इसी के शुभ प्रभात में जावरा की ओर दूर-दूर से परिषद प्रतिनिधि लगातार बढ़ते हुए चले आ रहे थे । ये न केवल मध्यप्रदेश बल्कि देश के तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश जैसे प्रांतों से भी समाज विकास के लिए बढ़ रहे थे । जावरा शाखा परिषद ने अधिवेशन को सुव्यवस्थित बनाने के लिए कई प्रयोग किए थे । प्रतिनिधियों की सही संख्या प्राप्त करने के लिये प्रातः से उनका पंजीयन प्रारम्भ कर दिया गया । ठीक प्रातः दस बजे परिषद ध्वज के

आरोहण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुए। ध्वजारोहण परिषद के केन्द्रिय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया ने किया। परिषद गीत का उच्चारण कल्पना जागीरदार ने किया। उपरान्त पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में अधिवेशन का उद्घाटन समारोह प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथी के रुप में मध्यप्रदेश के लोकनिर्माण मंत्री- श्री हिम्मतजी कोठारी पधारे थे। मंच पर अ.भा. श्री सौ धर्म वृहत्तपागच्छीय जैन श्वे. संघ के अध्यक्ष - श्री गगलदास हालचंद संघवी, अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपागच्छीय श्वेताम्बर जैन संघ के केद्रींय महामंत्री श्री भवंरलालजी छाजेड़, केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया, जावरा चातुर्मास समिति के अध्यक्ष - श्री शांतिलालजी दसेड़ा, केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप, महामंत्री श्री बाबुलालजी बोहरा, शिक्षामंत्री - श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा शाश्वत धर्म के सम्पादक - श्री जे.के. संघवी, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश चन्द्रजी कांठेड़, प्रचारमंत्री श्री अशोकजी श्री श्रीमाल, संगठन मंत्री श्री भीकमचंदजी आजाद, श्रीमद् राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर भरतपुर के ट्रस्टी श्री सोबतराजजी दोषी, परिषद प्रादेशिक पदाधिकारी श्री अम्बालालजी जैन (पेद्दापुरम), श्री घीसुलालजी जैन (काकीनाड़ा), श्री पारसमलजी भंडारी (सियाणा), श्री जसवन्तजी सोलंकी (जालोर), श्री हिम्मतभाई (अहमदाबाद) आदि थे। कार्यक्रम प्रारम्भ होने के पूर्व श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने प्रमुख समाज सेवियों तथा परिषद पदाधिकारियों का परिचय दिया।

मुख्य अतिथि म.प्र. के लोकनिर्माण मंत्री - श्री हिम्मतजी कोठारी का आगमन प्रात: ११ बजे हुआ। आपने सर्वप्रथम जैनाचार्य श्री मधुकरजी को वंदन किया तथा स्व. गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के चित्र को माल्यार्पण किया। श्री सिद्धार्थ कश्यप ने मंगलाचरण धुन प्रस्तुत की। स्वागत गीतों को श्री कल्पना जागीरदार तथा श्री गोपालजी ने स्वर दिया। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष - श्री शांतिलालजी दसेड़ा तथा जावरा शाखा परिषद के अध्यक्ष - श्री बाबुलालजी रुनवाल ने स्वागत भाषण दिये। केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया ने परिषद का समाज के प्रति दायित्व विषय पर उद्बोधन दिया। महामंत्री - श्री बाबुलालजी बोहरा ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

श्री हिम्मतजी कोठारी ने अपने भाषण में कहा कि मालवा क्षेत्र में पूज्य आचार्य श्री के पधारने से धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित हो गई है। आपके प्रवचन हमारे व हमारे समाज के लिए काफी लाभप्रद है। पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज ने फरमाया कि श्रोता सुनते हैं, वक्ता बखानते है, दृष्टा देख रहे हैं, चंचलता को निश्चलता में बदलने के लिए कठोर साधना की आवश्यकता है परिषद के प्रत्येक कार्यकर्ता को परिषद हित का विचार करना हैं क्योंकि समाज हित में ही परिषद हित समाया हुआ है। कार्यकर्ताओं के परिश्रम, तन,मन और धन के त्याग का परिणाम ही परिषद का इतना विरत् स्वरुप है। हम सभी गुरुदेव के बताए मार्ग पर चलने के लिए कटिबद्ध है। गुरुदेव द्वारा बोया गया यह बीज

सद्भावना तथा समर्पण भाव से ही वटवृक्ष में परिणत होकर सभी को छाया प्रदान करनेवाला होगा। इस अधिवेशन में कार्यकर्ता विभिन्न प्रान्तों से आए हैं, यही समर्पण भाव है। हमें परिषद के माध्यम से समाज की सुन्दर जन्म पत्री बनानी है।

समारोह में मासिक 'शाश्वत धर्म' को निरन्तर चालीस वर्षों से अपनी लेखन शक्ति के माध्यम से सेवाएं प्रदान करने वाले यशस्वी लेखक श्री लक्ष्मीचंदजी 'सरोज' जावरा का परिषद की ओर से श्रीफल, शाल व रोकड़ रक्कम अर्पित कर स्वागत किया गया। स्वागत शाश्वत धर्म के सम्पादक - श्री. जे.के. संघवी ने किया। श्री सरोज ने आभार प्रदर्शन करते हुए शाश्वत धर्म के स्तर के कलेवर की प्रशंसा की। समारोह के कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाशजी कांटेड तथा डॉ. सुरेशजी मेहता ने दिया।

बाद में पूज्यगुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की क्रियोद्धार भूमि पर निर्माणाधीन श्रीमद् राजेन्द्रसूरि वाटिका में लोकनिर्माण मंत्री श्री हिम्मतजी कोठारी, परिषद पदाधिकारियों व जिला अधिकारियों ने वृक्षारोपण किया।

दोपहर भोजन के पश्चात परिषद प्रतिनिधि सभा की बैठक प्रारम्भ हुई। परमपूज्य आचार्य देव श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज मुनिमंडल सहित मंच पर बिराजमान थे। विभिन्न महानुभवों ने गीत तथा स्तवन प्रस्तुत किए उपरांत निम्नलिखित परिषद शाखाओं के सम्बन्धित पदाधिकारियों ने अपनी शाखाओं के प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

मेघनगर, जोगेश्वरी (बम्बई), जावरा,पारा, चौराऊ, कुक्षी, इन्दौर, अलिराजपुर, महिदपुर, लाबरिया, राजगढ़, झाबुआ, नागदा,/महिला परिषद - जावरा, संजीत, पेटलावद, रतलाम, मंदसौर, धुंधड़का, रानापुर, बड़नगर, सूरत महिला परिषद खाचरोद, आलोट, बाग, टाण्डा, दलौदा, सरसी नीमच, पिपलौदा, जमुनिया, कला, निम्बाहेड़ा, आदि। परिषद की मध्यप्रदेश ईकाई का प्रगति विवरण भी पढ़ा गया, इस सत्र की अध्यक्षता केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीलाल एम. मोरखिया (बम्बई) ने की तथा संचालन श्री बाबुलालजी बोहरा (नागदा जंक्शन) एवं श्री सुरेद्रजी लोढ़ा (मन्दसौर) ने किया। पूज्य आचार्यदेव श्री ने अपने उद्बोधन में शाखाओं से आव्हान किया कि वे अपने कर्तव्य मार्ग पर निरन्तर गतिशिल रहें। यह सत्र कोई चार घंटों तक चला। इसी सत्र में कई महानुभावों ने अपने प्रस्ताव रखे।

रात्री को पूज्य आचार्य देवश्री के सानिध्य में केन्द्रीय कार्यसमिति की बैठक प्रारम्भ हुई। यह बैठक रात्रि दो बजे तक हुई। इस बैठक में काफी प्रस्तावों पर विचार विमर्श किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री सेवंतीलाल एम. मोरखिया ने की तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप (रतलाम) ने पूर्ण मार्गदर्शन दिया। इस बैठक मैं तैयार की गई योजनाएं तथा पारित किए गए प्रस्ताव इसी अंक में अन्यत्र दिये जा रहे हैं। प्रस्तावों पर सदस्यों ने खुलकर बहस की। बैठक में केन्द्रीय कार्य समिति के अधिकांश सदस्य उपस्थित

थे। रात्रि में ही मंच पर जावरा शाखा परिषद द्वारा मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जो रात्रि ग्यारह बजे तक चलता रहा। पहले दिन की कार्यवाही पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुई। अधिवेशन के दूसरे दिन १६ अगस्त को प्रातः एक विशाल शोभा यात्रा परिषद सदस्यों तथा पदाधिकारियों की निकली। इसमें पूज्य आचार्यदेव श्री मद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज मुनिमंडल व साध्वी मंडल भी पधारे थे। शोभायात्रा में केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीलाल मोरखिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप तथा अन्य पदाधिकारियों का स्थान - स्थान पर स्वागत किया गया। रोटरी क्लब की ओर से भी स्वागत समारोह का आयोजन हुआ।

शोभायात्रा में भी परिषद शाखाओं के कार्यकर्ता अपने-अपने बेनर लिये व्यवस्थित रुप से अनुशासन बद्ध चल रहे थे। राजगढ़ बालिका परिषद की कन्याओं का डांडिया नृत्य विशेष आकर्षक था।

समारोह पिपली बाजार श्री राजेन्द्र पौषधशाला के बाहर बने सुविशाल पण्डाल में आकर सभा में परिवर्तित हो गया। श्री भीकमचंदजी आजाद, श्री सोहनलालजी सुराणा, श्री अम्बालालजी जैन तथा श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप आदि वक्ताओं ने परिषद के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। श्री सुरेश समीर (राणापुर) ने गीत गाया। बाद में नए केन्द्रीय अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। श्री सौभाग्यमलजी सेठिया ने पुनः अध्यक्षपद के लिए श्री सेवंती भाई एम. मोरखिया के नाम का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव का समर्थन श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप तथा श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने किया। उपरान्त कई परिषद शाखाओं की ओर से श्री सेवंतीभाई मोरखिया के नाम का समर्थन किया गया। सर्वानुमति से श्री मोरखियाजी को केन्द्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उपरान्त श्री मोरखियाजी ने वरिष्ठ उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप (रतलाम) को, उपाध्यक्ष - श्री मिठालालजी हिराणी (मद्रास) को, महिला प्रभारी उपाध्यक्ष - डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय (खाचरोद) को, एवं महामंत्री - श्री सुरेद्रजी लोढ़ा (मन्दसौर) को बनाए जाने की घोषणा की। शेष पदाधिकारियों व पूरी कार्य समिति की घोषणा दोपहर के सत्र में किये जाने की सूचना दी गई। इसी सत्र में पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज ने पाठशालाओं के लिए पाठ्यक्रम लागू कर परीक्षा लेने का बोर्ड गठित करने की घोषणा की। श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप ने इस बोर्ड का नाम श्रीमद् यतीन्द्र-जयंत ज्ञानपीठ रखने का सुझाव दिया, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया। इस सत्र का संचालन श्री बाबूलाल बोहरा ने किया। बाद में भोजन के लिए सत्र स्थगित हो गया।

दोपहर को पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के पवित्र सानिध्य तथा नवनिर्वाचित अध्यक्ष - श्री सेवन्ती भाई मोरखिया की अध्यक्षता में परिषद का खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। विभिन्न गीत, कविताएं तथा भाषण हुए। नवनिर्वाचित

महामंत्री - श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने इस अवसर पर प्राप्त शुभकामना संदेशों का वाचन किया। उपरान्त आपने केद्रीय कार्यसमिती द्वारा पारित किए गए प्रस्ताव पुष्टि हेतु खुले अधिवेशन में प्रस्तुत किए। एक शोक प्रस्ताव तेरह नवकार के मौन स्मरण के साथ पारित किया गया। बाद में केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री मोरखियाजी ने शेष पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की। शाश्वत धर्म तथा श्रीमद् यतीन्द्र-जयंत ज्ञानपीठ की संचालन समिति के नाम घोषित किए गए। परिषद की प्रादेशिक इकाइयों तथा महिला समिति के पदाधिकारियों का मनोनयन किया गया। सभी को पूज्य जैनाचार्य श्री के सानिध्य में राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष - श्री गिरिजाप्रसादजी तिवारी ने शपथ दिलाई। शपथ समारोह के पश्चात विभिन्न वक्ताओं के भाषण हुए। परिषद के संकल्पों पर प्रकाश डाला गया। शाश्वत धर्म (मासिक) का आय व्यय - पत्रक श्री जे.के. संघवीजी तथा श्री शांतिलालजी सुराणा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में श्री चम्पालालजी ने चिन्तन निधि 'पुस्तक तथा श्री भंवरलालजी ने अरिहंते सरणं पवज्झामि' पुस्तक का विमोचन किया। श्री चम्पालालजी ने पांच हजार एक तथा श्री भंवरलालजी ने ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये श्रीमद् राज राजेद्र प्रकाशन ट्रस्ट को देने की घोषणा की।

खुले अधिवेशन का समापन करने के लिए मुख्यमंत्री - श्री सुन्दरलालजी पटवा का आगमन हुआ। इस समय कोई दस हजार भक्तों व प्रतिनिधियों की विशाल जन मेदिनी उपस्थित थी। आपके साथ सांसद - डॉ. लक्ष्मीनारायणजी पांडे, म.प्र. के लोक निर्माण मंत्री - श्री हिम्मतजी कोठारी, राज्यमंत्री - श्री थावरचंदजी गेहलोत क्षेत्रिय विधायक - श्री रघुनाथसिंहजी आंजना तथा गरुभक्त विधायक - श्री पारसजी जैन भी थे। सभी का स्वागत श्री सेवन्तीभाई मोरखिया, श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप, श्री मीठालालजी हीराणी ने किया। स्वागत भाषण देते हुए श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप ने परिषद की गतिविधियों एवं पारित किये गये प्रस्तावों पर प्रकाश डाला।

सांसद - डॉ. लक्ष्मीनारायणजी पांडे ने कहा कि यह ऋषि-मुनियों का देश है जो रामकृष्ण महावीर के नाम से जाना जाता है इस देश ने दुनिया को ज्ञान दिया, ऐसी धार्मिक परम्परा अन्य देश नहीं दे सकता है। पूज्य आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी ने जो ज्ञान गंगा प्रवाहित की, उसके प्रति में कृतज्ञ हूँ। इस संसार में देनेवाला तो सिर्फ ऋषि है, शेष सभी लेने वाले हैं।

समारोह में मुख्यमंत्री - श्री सुन्दरलाल पटवा को म.प्र.में गौवंश वध पर प्रतिबन्ध लगाने का कानून बनाए जाने हेतु अ.भा. त्रिस्तुतिक समाज तथा अ.भा. श्री राजेद्र जैन नवयुवक परिषद की ओर से अभिनन्दन - पत्र भेंट किया गया। अ.भा. श्री सौधर्मवृहत्तपागच्छीय जैन श्वे. संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गगलदास हालचंदजी संघवी ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया ने शाल ओढाई। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री - श्री सुन्दरलालजी पटवा ने श्रेष्ठता के लिए पुरस्कृत

परिषद शाखा जोगेश्वरी बम्बई, (महाराष्ट्र) तथा पिपलौदा (म.प्र.) को शिल्ड प्रदान की। सम्पादक - श्री जे. के. संघवीजी ने शाश्वत धर्म की प्रति भेंट की। श्री पटवा ने श्रीमद् जयंतसेनसूरि मित्र मंडल, जावरा द्वारा प्रकाशित 'समर्पण' पुस्तक का विमोचन किया। इसके लेखक पूज्य मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी महाराज हैं। पुस्तक का विमोचन मंडल के संरक्षक श्री विजयकुमारजी दरोड़ा तथा श्री विजयकुमारजी आंचलिया ने करवाया।

मुख्यमंत्री - श्री पटवाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह मेरा स्वागत नहीं बल्कि उन विचारों का स्वागत है जिसके हम समर्थक हैं। मैं यहां श्रोता तथा श्रावक के रुप में उपस्थित हुआ हूँ। रतलाम में मैंने पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के दर्शन किये थे तथा आशिर्वाद प्राप्त किये, उसी का सम्बल बनाकर मैंने गौवंश वध निषेध का कानून पारित करवाया। गोवंश वध निषेध पर गांधीजी तथा विनोबाजी ने पूरा बल दिया था। मध्य प्रदेश देश का पहला ऐसा मात्र राज्य है जहां ऐसा कानून बनाया गया। अब मध्य प्रदेश की भूमि पर गोवंश के रक्त की एक बुन्द नहीं गिरेगी। यह भी गुरुदेव के चरणों का प्रताप है। राजनीति काजल की कोठरी के समान है। मैनें इसमें प्रवेश किया है। आपके आशीर्वाद के सहारे में जनहित के कार्य करुंगा कृपा कर मुझे इस काजल की कोठरी से बेदाग बाहर निकालें। मेरे जीवन में धर्माचरण तथा सदाचरण बुद्धि कायम हो।

केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया ने इस कानून निर्माण के लिये मुख्यमंत्री - श्री सुन्दरलालजी पटवा की प्रशंसा की।

पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज ने कहा कि भारत कृषि प्रधान तथा ऋषि प्रधान देश है। ऋषियों ने संस्कार दिए जबकि कृषि ने विचारों को निर्मल रखने के लिये जीवन दिया है। आज मानव चक्कर में पड़कर अनर्थ कर रहा है। वह रक्षक बनने के स्थान पर भक्षक बन रहा है। ऐसे वातावरण में मुख्यमंत्री - श्री पटवाजी ने धर्म के प्रति लगाव रखकर उसका मर्म समझा। पूण्य कार्य करने की एक मिसाल पेश की। गौवंश वध निषेध कानून बनाकर आजादी के बाद इन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। आपने कहा कि विक्रम संवत २०१७ में श्री पटवा के गृहग्राम कुकड़ेश्वर गया था। आपके पूज्य पिताजी श्री मन्नालालजी पटवा हमें नीमच से कुकड़ेश्वर ले गये थे। श्री मन्नालालजी पटवा गुरुदेव श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के भक्त थे। तब श्री सुन्दरलालजी पटवा हमसे मिले थे तब मैंने कहा था कि राजनीति में धर्मनीति के साथ बढ़ो। प्रसन्नता है कि उन्होंने आज ऐसा कार्य कर दिखाया।

अंत मे श्री संघ जावरा के अध्यक्ष - श्री शांतिलालजी दसेड़ा ने आभार माना। कार्यक्रम का संचालन परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री - श्री सुरेद्रजी लोढ़ा (मन्दसौर) ने किया।

परिषद का पन्द्रहवाँ अधिवेशन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

पंद्रहवें अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

१. अधिवेशन में सर्वप्रथम श्रद्धांजली प्रस्ताव तेरह नवकार के स्मरण के साथ पारित किया गया जो इस प्रकार है -

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का जावरा नगर में आयोजित यह पंद्रहवां अधिवेशन परमपूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में इस श्रद्धांजली प्रस्ताव को स्वीकृत करते हुए निम्नांकित पूज्य जैनाचार्यों; पूज्य मुनिवरों पूज्य साध्वीगण, तथा माननीय समाजसेवियो के दुःखद निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है तथा मानता है कि इनके निधन से समाज को अपूरणीय ऐसी क्षति उठानी पड़ी है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है। शासनदेव से प्रार्थना है कि वे अपने प्रभाव से दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें -

१) पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयरामचंद्रसूरीश्वरजी महाराज सा.

२) पूज्य मुनिराज श्री विनयविजयजी महाराज सा.

३) पूज्य मुनिराज श्री चेतनविजयजी महाराज सा.

४) पू. साध्वी श्री गंभीरश्रीजी महाराज सा.

५) पू. साध्वी श्री शिवश्रीजी महाराज सा.

६) पू. साध्वी श्री हीरश्रीजी महाराजसा.

७) पू. साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी महाराज सा.

८) पू. साध्वी श्री लावण्यश्रीजी महाराज सा.

आ श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा,
जि गांधीनगर

९) श्री जीतमलजी हीराणी - दिवंगत अध्यक्ष - अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

१०) श्री छोटालालजी अमुलखभाई देसाई कार्यवाहक अध्यक्ष - अ.भा. श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छीय श्वे. जैन संघ.

११) श्री चांदमलजी मेहता पूर्व उपाध्यक्ष - अ.भा. श्री. सौधर्म वृहत्तपागच्छीय श्वे. जैन संघ.

१२) श्री छोटालाल जी भूखणदासजी अध्यक्ष - त्रिस्तुतिक संघ थराद

१३) श्री रजनीकांतजी देवड़ी- पालीताना तीर्थ पर महाभिषेक आयोजक.

१४) श्री अध्यक्ष अ.भा. श्रीरा. जै. न. परिषद शाखा - धामन्दा.

१५) उन सभी दिवंगत पूज्य जैनाचार्यों, पूज्य मुनिराजों, पूज्य साध्वीजी महाराज तथा माननीय श्रावक - श्राविकागणों की स्मृति में जिनका निधन गत अधिवेशन के बाद हुआ।

२. धार्मिक पाठशालाओं को सुव्यवस्थित किया जाए एवं धार्मिक परीक्षा हेतु एक बोर्ड स्थापित किया जाए।

प्रस्तावक :- शाखा परिषद, पेटलावद

समर्थक :- शाखा परिषद, मेघनगर

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि धार्मिक शिक्षा प्रसार को व्यापक बनाने के लिए श्री यतींद्र - जयंत ज्ञानपीठ की स्थापना की जाए। इसके माध्यम से धार्मिक पाठशालाओं को नियमित बनाया जाए, स्वीकृत पाठ्यक्रम लागु किया जाए तथा परीक्षा बोर्ड संचालित किया जाए। ज्ञानपीठ का संचालन पूज्य वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के मार्गदर्शन में किया जाए। ज्ञानपीठ को संयोजित करने के लिए समिति का मनोनयन करने हेतु परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज से निवेदन किया जाता है। इस समिति के ज्ञानपीठ की नियमावाली तैयार करने हेतु एक समिति को अधिकृत किया जाता है।

३. परिषद के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को सन्मानित करने हेतु योजना बनाई जाए।

प्रस्तावक :- परिषद शाखा - जोगेश्वरी (बम्बई)

समर्थक :- परिषद शाखा - मद्रास

सर्वानुमति से निर्णय लिया जाता है कि जो परिषद शाखाएं चिकित्सा, सेवा तथा शिक्षा के क्षेत्रों में श्रेष्ठ कार्य करें उन्हें पुरस्कृत किया जाए। साथ ही लेखन एवं शाश्वत धर्म प्रचार के क्षेत्र में जो महानुभाव श्रेष्ठ कार्य करें उन्हें व्यक्तिगत स्तर पर पुरस्कृत किया जाए। जो महानुभाव एक मुश्त संस्था को छह हजार रु. प्रदान करें उनके नाम से प्रत्येक पुरस्कार दिया जाए। इन पुरस्कारों को अगले वर्ष से प्रारंभ किया जाए।

बैठक में निम्नांकित महानुभावों ने उक्त निर्धारित राशि प्रदान करने का अभिवचन देकर पुरस्कार प्रारंभ करने की घोषणा की।

चिकित्सा - श्री सेवंती भाई एम. मोरखिया

सेवा - श्री चेतन्यकुमारजी कश्यप की ओर से श्री अशोकजी कश्यप पुरस्कार

लेखन - स्व. श्री जीतमलजी हिराणी स्मृति पुस्तकार में मीठालालजी हिराणी द्वारा

शिक्षा - स्व. श्री कुन्दनमलजी संघवी स्मृति पुरस्कार

शाश्वतधर्म प्रचार - श्री सुखराजजी चमनाजी कबदी धाणसा

पुरस्कारों का निर्णय करने हेतु निर्णायक समिति का गठन इस प्रकार किया जाता है।

१) भवरलालजी छाजेड़ २) चेतनकुमारजी कश्यप ३) श्री सुरेन्द्रजी लोढा

शाश्वत धर्म के अधिकाधिक ग्राहक बनाने के लिये प्रत्येक पदाधिकारी को सहयोग करना है। शाश्वत धर्म को पूर्णतः मजबूत किया जाना है।

शाश्वत धर्म प्रचार का पुरस्कार उन्हें दिया जाए जो सर्वाधिक ग्राहक बनाएं

४. केद्रीय परिषद द्वारा पर्यूषण पर्व पर व्याख्यान देने के लिए स्वाध्यायी पार्षद तैयार किये जाएं व जहां आवश्यक हों उन्हें भेजा जाए।

प्रस्तावक :- श्री जे. के. संघवी, ठाणे
समर्थक :- भँवरलालजी छाजेड़, नीमच

सर्वानुमति से निर्णय लिया जाता है कि ऐसे स्वाध्यायी पार्षद पूज्य आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के मार्गदर्शन में प्रशिक्षित किये जाएं। इनका बहुमान परिषद के सम्मेलन में किया जाए। इस बहुमान के लिए संपूर्ण राशि श्री पारसमलजी भगवानजी कोठारी मद्रास द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने की घोषणा की गई। कल्पसूत्र वाचन करने वालों की सूची तैयार की जाए तथा अगले वर्ष मांग आने पर भिजवाएं जावे।

५. जबलपुर में वधशाला की योजना के संबंध में

प्रस्तावक :- परिषद शाखा - निम्बाहेड़ा
समर्थक :- परिषद शाखा, नीमच

सर्वानुमति से इस वधशाला की स्थापना के प्रस्ताव का विरोध - पत्र राज्य सरकार को भिजवाने का निर्णय किया गया किंतु खुले अधिवेशन में श्री समीरमलजी जैन (टांडा) ने सूचित किया कि इस प्रस्ताव को राज्यशासन ने वापस ले लिया है अतएव निर्णय किया गया कि इस हेतु राज्यशासन को धन्यवाद प्रस्ताव प्रेषित किया जाए।

६. समाज के प्रौढ़ व्यक्तियों के लिये धार्मिक शिविर आयोजित किया जाए।

प्रस्तावक :- परिषद शाखा, - इंदौर
समर्थक :- श्री पारसमलजी भंडारी, - सियाणा.

सर्वानुमति से निर्णय लिया जाता है कि समाज के प्रौढ व्यक्तियों के लिए धार्मिक शिक्षण शिविर पूज्य आचार्य देवश्री के सानिध्य में आयोजित किया जाए लेकिन ऐसे शिविर का आयोजन प्रक्षिणार्थियों की संख्या पर निर्भर करता है।

७. परिषद शाखाओं के पते प्रकाशित किए जाए।

प्रस्तावक - परिषद शाखा, - चौराऊ
समर्थक :- श्री जसवंतसिंहजी सोलंकी , जालौर.

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि केन्द्रीय पदाधिकारियों, केंद्रीय कार्यसमिति के सदस्यगणों तथा परिषद शाखाओं के पते शाश्वतधर्म मासिक में प्रकाशित किए जाएं। इस हेतु केंद्रीय कार्यालय कार्यवाही करें।

८. परिषद शाखाओं द्वारा स्वधर्मी सहायता कोष स्थापित किया जाए।

प्रस्तावक :-परिषद शाखा, - कुक्षी
समर्थक :- परिषद शाखा, - महिदपुर

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि परिषद शाखाओं के अंतर्गत स्वधर्मी सहायक कोष बनाया जाए तथा ऐसे कार्यकर्ताओं की सूची बनाई जाए जो इसके लिए शेयर ले सके। इसके अंतर्गत कोई भी राशि स्थाई रुप से जमा नहीं करवाई जाए। बल्कि एकत्र संपूर्ण राशि

प्रतिवर्ष वितरित कर दी जाए। इस योजना को परिपत्र के माध्यम से प्रकाशित किया जाए।

९. परिषद शाखाओं के अंतर्गत पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना की जाए।

प्रस्तावक :- श्री शांतिलालजी गोखरु, बड़नगर

समर्थक :- श्री सुरेंद्रजी लोढा, मंदसौर

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि परिषद शाखाएं ग्रामो व नगरों में श्रीमद् जयंतसेनसूरि पुस्तकालय तथा वाचनालय स्थापित करें। इनका संचालन परिषद शाखाओं द्वारा किया जाए।

१०. शाकाहार प्रचार के लिए व्यवस्थित कार्यक्रम चलाया जाए।

प्रस्तावक :- श्री कांतिलालजी के. संघवी, ठाणे

समर्थक :- श्री अशोकजी श्री श्रीमाल टांडा

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि शाकाहार प्रचार के लिये परिषद शाखाएं सक्रिय रहें। इस हेतु साहित्य मंगवाने के लिए डॉ. नेमीचंद्रजी जैन इंदौर से संपर्क स्थापित करें विशेषतः यह प्रचार उस वर्ग में अधिकाधिक किया जाए जो कि अशाकाहारी है।

११. केंद्रीय कार्यालय की ओर से सामान्य ज्ञानोत्तेजक परीक्षाओं का आयोजन किया जाए।

प्रस्तावक :- श्री प्रकाशजी छाजेड़, पारा

समर्थन :- श्री सौभाग्यमलजी सेठिया निम्बाहेड़ा

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि इस संबध में आवश्यक कार्यवाही केंद्रीय कार्यालय द्वारा की जाए।

१२. परिषद शाखा की सदस्यता पंजीयन एवं चुनाव नियमित कराए जाने के संबंध में

प्रस्तावक :- डॉ. सोहनालालजी सुराना- दलौदा

समर्थक :- श्री कांतिलजी भंडारी, - राजगढ़

सर्वानुमति से निर्णय किया जाता है कि -

१) परिषद शाखा स्थानीय स्तर पर चाहे जो सदस्यता शुल्क रखे लेकिन केंद्रीय कार्यालय द्वारा उनसे एक रुपया वार्षिक प्रत्येक सदस्य के हिसाब से प्राप्त कर शाखाओं का पंजीयन किया जाए।

इस संबंध में पूर्व विधान में परिषद शाखाओं के लिए संबद्धता का जो प्रावधान है उसे निरस्त किया जाता है।

२) प्रत्येक वर्ष शाखाओं के चुनाव जून माह में होना अनिवार्य हैं। जिले के अध्यक्ष अपने जिलों में चुनाव संपन्न करवा कर प्रदेश अध्यक्षों को सूचित करें।

उक्त निर्णयों के अनुरुप विधान में संशोधन स्वीकृत किया जाता है।

सुरेंद्र लोढा — महामंत्री

सेवन्तीभाई मोरखिया — अध्यक्ष

परिषद के नए पदाधिकारीगण

केन्द्रीय

अध्यक्ष	-	श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया (बम्बई)
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	-	श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप (रतलाम)
उपाध्यक्ष	-	श्री मीठालालजी हीराणी (मद्रास)
उपाध्यक्ष (महिला प्रभार)	-	डॉ. श्रीमती कोकिलाजी भारतीय (खाचरौद)
महामंत्री	-	श्री सुरेंद्रजी लोढ़ा (मंदसौर)
सह- महामंत्री	-	श्री पारसमलजी भगवानजी (मद्रास)
सहमहामंत्री	-	श्री नवीन चंदजी हालचंद जी देसाई (थराद)
सहमंत्री (महिला प्रभार)	-	श्री कांता बहन आंचलिया (रतलाम)
कोषाध्यक्ष	-	श्री प्रकाशजी कांठेड (जावरा)
संगठन मंत्री	-	श्री कांतिलालजी भण्डारी (राजगढ़)
अल्पबचत मंत्री	-	श्री जवाहरलाल जी काकड़ीवाला (अलिराजपुर)

प्रांतीय इकाईयाँ

मध्यप्रदेश

अध्यक्ष	-	डॉ. सोहनलालजी सुराना (दलौदा)
उपाध्यक्ष	-	श्री विजयकुमारजी दसेडा (जावरा)
मंत्री	-	श्री ओच्छवलालजी नानालालजी जैन (राणापुर)
सहमंत्री	-	श्री महावीरजी जैन (रतलाम)
कोषाध्यक्ष	-	श्री रमणिकलालजी तलेसरा (उज्जैन)

राजस्थान

अध्यक्ष	-	श्री पारसजी भंडारी (सियाना)
उपाध्यक्ष	-	श्री भंवरलालजी हीरानी (रेवतड़ा)
मंत्री	-	श्री हुक्मीचंदजी भण्डारी (सूरा)
सहमंत्री	-	श्री दूदमलजी मांडोत (बाकरा)
कोषाध्यक्ष	-	श्री रुपचंदजी जैन (मांडवला)
सदस्य कार्यसमिति	-	श्री जसवंतसिंहजी सोलंकी (जालोर)
		श्री चम्पालालजी हीराणी (रेवतड़ा)
		श्री सुखराजजी कबदी (धानसा)
		श्री सुमेरचंदजी जैन (भरतपुर)

गुजरात

अध्यक्ष - श्री चंद्रकातभाई वोरा (थराद)

उपाध्यक्ष - श्री धुडालाल छोटालाल संघवी (अहमदाबाद)

मंत्री - श्री हिम्मतलाल भाई वीरचंदजी वोहेरा (अहमदाबाद)

सहमंत्री - श्री भूपेन्द्रभाई भणसाली (सूरत)

उत्तरप्रदेश

अध्यक्ष - श्री कन्हैयालाल जी बांठिया (कानपुर)

पश्चिम बंगाल

अध्यक्ष - श्री भानमल जी वस्तीमलजी जैन (कलकत्ता)

दक्षिण भारत

अध्यक्ष - श्री अम्बालालजी जैन (पेद्दापुरम)

उपाध्यक्ष - श्री शांतिलालजी जैन (नैलूर)

मंत्री - श्री शांतिलालजी पुखराजजी (बैंगलोर)

महिला परिषद समिती :-

१. श्रीमती नीता कश्यप (रतलाम)

२. श्रीमती पारसमणी मारवाड़ी (जावरा)

३. श्रीमती तारादेवी सुराना (दलौदा)

४. श्रीमती मधुकांता (अलिराजपुर)

५. श्रीमती कैलाशीबाई कर्नाकट (जावरा)

श्री यतीन्द्र जयंत विद्यापीठ :-

१. श्री सुरेंद्रजी लोढ़ा (मंदसौर)

२. श्री मोहनलालजी एच ढालावत (बंबई)

३. श्री प्रवीणभाई भोगीलालजी शेठ (अहमदाबाद)

४. श्री प्रकाशचंदजी लुणावत (बामनिया - कोषाध्यक्ष)

५. श्री भीकमचंदजी आजाद (जावरा)

६. श्री अनिलजी जैन (अलिराजपुर)

७. श्री चंपालालजी मनोहरलालजी (सुराना - राजस्थान)
कमल स्टील्स, भादर्बाजी पोल, मानक चौक, अहमदाबाद

८. श्री. गेंदालालजी जैन (सरसी)

९. श्री बाबुलालजी बोहरा (नागदा)

१०. श्री अशोकजी श्री श्रीमाल (टांडा)

राष्ट्रीय कार्य समिति म. प्र. ईकाई

१. प्रदेश अध्यक्ष - डॉ. सोहनलालजी सुराना, चौपाटी **दलौदा स्टेशन**-जिला मंदसौर (म.प्र.)।

२. वरिष्ठ उपाध्यक्ष - श्री मोतीलालजी हरण, **राजगढ** जिला धार (म.प्र.)।

३. उपाध्यक्ष - श्री विजयकुमारजी देवडा ठि. सागरमलजी मोतीलालजी जैन नई धानमण्डी, **जावरा** (म.प्र.)।

४. मंत्री - श्री ओच्छवलालजी जैन २०- चंद्रशेखर मार्ग, **रानापुर,** जिला-झाबुआ (म.प्र.)।

५. सहमंत्री - श्री महावीर कुमारजी जैन, द्वारा- अरिहंत ट्रेडर्स, ४२, नीम चौक, **रतलाम** (म.प्र.)।

६. कोषाध्यक्ष - श्री रमणीकलालजी तलेसरा, द्वारा- तलेसरा ट्रेडर्स, मुसद्दीपुरा, **उज्जैन** (म.प्र.)।

७. संगठन मंत्री. श्री सज्जनसिंहजी लौढ़ा द्वारा मोहनसिंहजी सज्जनसिंहजी, मोती बाजार, **निम्बाहेड़ा** जिला- चित्तौड़गढ़, (राजस्थान)।

८. शिक्षा मंत्री - श्री माणकलालजी छाजेड, ४४,- जवाहर मार्ग, **महिदपुर** जिला -उज्जैन (म.प्र.)।

९. सदस्य - श्री महेंद्र कुमारजी डुंगरवाल, **नयागांव** जिला मंदसौर (म.प्र.)।

१०. सदस्य - श्री हंगामीलालजी बाबेल, रायल टेन्ट हाऊस, **नीमच** जिला- मंदसौर (म.प्र.)

११. सदस्य - श्री हरिशकुमार चपरोत, द्वारा- राजेंद्र टेण्ट हाऊस, नयापुरा मार्ग, **मंदसौर** (म.प्र.)।

१२. सदस्य - श्री हीरालालजी जैन, ,द्वारा एस.एल. सुराना चौपाटी, **दलौदा स्टेशन** जिला मंदसौर (म.प्र.)।

१३. सदस्य - श्री पारसमलजी डोसी , द्वारा - श्री राजेन्द्र मेडिकल स्टोअर्स, जिला चिकित्सालयमार्ग, **मंदसौर** (म.प्र.)।

१४. सदस्य - श्री महेंद्र कुमारजी रुपचंदजी जैन, मु. पो. **धुंधड़का,** व्हाया दलौदा जिला- मंदसौर (म.प्र.)।

१५. सदस्य - श्री प्रदीपजी मेहता , द्वारा - श्री कन्हैयालालजी मेहता, गांधी कॉलोनी, **जावरा** (म.प्र.) - ४५७२२६।

१६. सदस्य - श्री शांतिलालजी जैन कमेड़ जिला रतलाम (म. प्र.)

१७. सदस्य - श्री ज्ञानचंदजी मेहता , द्वारा - श्री बापुलालजी मेहता, शीतला माता बाजार, **खाचरौद** जिला - उज्जैन (म.प्र.)

१८. सदस्य - श्री एस. एम. जैन सा. कर सलाहकार, नया बाजार, इन्दौर (म.प्र.)।

१९. सदस्य - सुरेशचंदजी भण्डारी, कर सलाहकार, बडा रावला, सेलटेक्स ऑफीस के पास, **धार** (म.प्र.) ।

२०. सदस्य - श्री जिनेंद्रकुमारजी बांठिया , द्वारा - लालचंदजी कस्तुरचंदजी, मु.पो., **टाण्डा** जिला धार (म.प्र.) ।

२१. सदस्य - श्री ओच्छबलालजी सागरमलजी जैन द्वारा राजेन्द्र केश क्लाथ स्टोअर्स, ३०३, महात्मा गांधी मार्ग **अलिराजपुर** जिला - झाबुआ (म.प्र.)पिन. ४५७ ८८७.

२२. सदस्य - श्री अरविंदजी लोढ़ा, सहकारी उपभोक्ता भण्डार, कपड़े की दुकान, झाबुआ (म. प्र.) ।

२३. सदस्य - श्री प्रकाशचंदजी जैन द्वारा राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, मु.पो. **भाटपचलाना** जिला उज्जैन (म.प्र.) ।

२४. सदस्य - श्री आर.के. जैन द्वारा- दैनिक ध्वज कार्यालय, एफ.(८९/३४), १२५०, टी.टी. नगर **भोपाल,** (म.प्र.) ।

२५. सदस्य - कमलेशजी भण्डारी द्वारा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा- **पारा,** झाबुआ, (मध्य प्रदेश) ।

२६. सदस्य - श्री मोहनलाले जी जैन (बाबुजी) द्वारा डॉ. एस.एल. सुराना सा. चौपाटी दलौदा स्टेशन जिला मन्दसौर (म.प्र.) ।

२७. सदस्य - श्री शांतिलालजी गोखरु बर्तन की दुकान, जैन मंदिर के नीचे, गांधी चौक, पोस्ट **बड़नगर,** जिला उज्जैन (म. प्र.) ।

छपते - छपते.................

* **मद्रास** - *केसरवाड़ी में शिवगंज निवासी संघवी बाबुलालजी अचलाजी की ओर से आचार्य श्री राजयशसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में ३० दिसम्बर से उपधान प्रारंभ होगा। समापन एवं माल महोत्सव १६ फरवरी को सम्पन्न होगा। आराधकों को लाभ लेने हेतु भाव भरा आमंत्रण है।*

* **थाने** - *श्री आहोर जैन सेवा संघ (बम्बई) के कार्यकारिणी की बैठक दि. १-१२-९१ को श्री जे.के. संघवी के ब्लॉक पर सम्पन्न हुयी। सम्मेलन में आर्थिक स्थिती से कमजोर साधर्मिकों की मेडिकल सहाय हेतु लिये गये निर्णय का कार्यान्वियन करने हेतु समिति बनाकर जिम्मेदारी सौंपी गयी।*

महामंत्री का प्रतिवेदन

- (श्री बाबुलाल बोहरा)

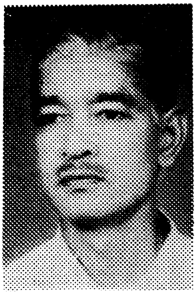

विश्ववंद्य गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहब को एवं अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के संस्थापक व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्रीमद् विजय्द्यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा को शतशत वंदन। परमपूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं सभी मुनिराज एवं साध्वीजी म.सा. को सादर वंदन । आदरणीय मुख्य अतिथि, लोक निर्माण मंत्री म.प्र. शासन श्री हिम्मतजी कोठारी जैनरत्न सेठ श्री गगलदास भाईसा. केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीलाल भाई, परिषद के संस्थापक अध्यक्ष श्री साभाग्यमलजी सेठिया, पूर्व अध्यक्ष - श्री भंवरलालजी छाजेड़ एवं परिषद के सभी पदाधिकारी गण एवं कार्यकर्ताओं तथा उपस्थित सभी भाई बहनों का हार्दिक अभिनंदन ।

मैं आपके सम्मुख परिषद के रजत जयन्ति समारोह एवं १४ वें अधिवेशन दि. २७-२८ व २९ मई १९८८ के पश्चात परिषद द्वारा अपने निर्धारित चार उद्देश्य- १. समाज संगठन २. धार्मिक शिक्षा प्रचार ३. समाज सुधार ४. एवं आर्थिक विकास की प्रगित हेतु किये गए प्रयासों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

१४ वें अधिवेशन के पश्चात केन्द्रीय कार्यकारिणी की भाण्डवपुर थराद खिमेल, बंबई, अहमदाबाद, आनंद एवं पानसरतीर्थ में ९ बैठकें विभिन्न दि. को आयोजित की गई दि. २२ अक्तूबर ८८ को धार एवं झाबुआ जिले का संयुक्त सम्मेलन मुनिराजश्री सौभग्यविजयजी आदि के सानिध्य में श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आयोजित किया गया । दि. १६/११/८८ को अ. भा. सम्मेलन थराद में परमपूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में हुआ । दि. ५ जून ८९ से १६ जून ८९ तक एवं दि. १६ जून ९० से २५ जून ९० तक जैन ज्ञानशिक्षण शिविर १२ दिवसिय एवं १० दिवसिय पानसर तीर्थ पर हुए ।

दि. १०-९-८९ को रतलाम एवं उज्जैन जिले का संयुक्त सम्मेलन की नागेश्वर तीर्थ आयोजित किया गया ।

दि. २,३ जुलाई ९० को राणी स्टेशन पर पाली एवं सिरोही जिले के विकलांग भाई बहनों की सहायता हेतु शिविर आयोजित किया जिसमें विकलांग भाई बहनों को केलीपर्स,

ट्रायसायकलों, सिलाई मशीन, नगदी, पढाई खर्च आजीविका का साधन, आदि अनेक प्रकार से समुचित सहायता प्रदान की कई ।

दि. १३-६-९१ से २२-६-९१ को आचार्य श्री की निश्रा में रतलाम में जैन ज्ञान शिक्षण शिविर लगाया गया । भरतपुर, किशनगढ, जालोर एवं राणी स्टेशन पर परम विदुषी साध्वीजी डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डॉ. सुदर्शनाश्रीजी की निश्रा में कन्या शिविर लगाए गए ।

केन्द्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों ने जिला पदाधिकारियों को साथ लेकर उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, धार, झाबुआ जिला परिषदों एवं बैंगलौर, मैसूर प्रवास कार्यक्रम विभिन्न दिनांकों को किया । प्रवास के दौरान धार्मिक पाठशाला, सिलाई, स्कूल शुरु किये गये । सिलाई मशीन आदि वितरित की गई ।

परिषद को किसी भी सामाजिक धार्मिक कार्यक्रम में आयोजकों द्वारा आमंत्रित किए जाने पर अपनी सेवाए देने में विशेष उत्साह रहता है । इसी तारतम्य में भाण्डवपुर में श्री गुरु मंदिर प्रतिष्ठा उत्सव के अवसर विभिन्न शाखाओं से लगभग ७०० स्वयं सेवकों ने अपनी सेवाएं प्रदान की हैं । इसके साथ ही परमपूज्य आचार्य श्री की निश्रा में होने वाले सभी कार्यक्रमों में स्थानीय शाखा परिषद के कार्यकर्ता अपना सम्पूर्ण सहयोग एवं सेवाएं देने हेतु तत्पर रहते हैं ।

जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने की दृष्टि से परिषद शाखा जोगेश्वरी (बम्बई) द्वारा विडियो कैसेट बनाई गई एवं उसका वितरण देश के सभी भागों में करने का प्रयास कर रहे हैं ।

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों को सुचारु रुप से आयोजित करने हेतु महामंत्री कार्यालय से इस अवधि में ६४४६ पत्र भेजे गए । महामंत्री कार्यालय द्वारा भेजे गए परिपत्रों को सभी शाखाओं द्वारा अपनी बैंठकों में प्रस्तुत करने के बाद उस अनुसार कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं ।

परिषदरुपी इस वटवृक्ष को (परिषद) शाखाएं अपनी सेवा एवं कर्तव्य परायणता से समाज के बहुमुखी विकास में सहयोग दे रही हैं ।

जड़ कभी शाखाओं को धन्यवाद नहीं देती है कि उसने पार्थिकों को छाया या फल दिए, बल्कि जड़ स्वयं सींचित होकर शाखाओं को हरी भरी बनाए रखती है ।

इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय परिषद आपसे सदा इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रखती है । साथ ही अपनी ओर से हर सम्भव सहयोग देने के लिए कृत संकल्प है ।

इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ आप के स्नेह सहयोग एवं सामीप्य की अपेक्षा के साथ आप सभी का हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूँ ।

जय राजेन्द्र/जय जिनेन्द्र ।

प्रगति विवरण

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद अपने जीवन के बत्तीस वर्ष पूर्ण करने जा रहा है जावरा श्री संघ तथा जावरा शाखा परिषद द्वारा आयोजित यह पंद्रहवां अधिवेशन इसके प्रगति मार्ग का महत्वपूर्ण पड़ाव है । हमने इन वर्षों में परिषद के प्रेरणादाता वर्तमान आचार्य श्री विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महा. के सानिध्य तथा मार्गदर्शन में समाज ज्योति की मिसालको ज्योतिर्मय रखने का प्रयत्न ही नहीं किया है बल्कि उसके आलोक को समाज की सभी प्रवृत्तियों तक पहुँचाने का प्रयास किया है । समाज संगठन की दृष्टि से देश भर में फैली हुई ढाई सौ शाखाएँ तथा दस हजार की सदस्य संख्या परिषद के दिनोंदिन हो रहे विस्तार की परिचायक है । परिषद के माध्यम से ग्रामों से होकर नगरों तक की युवा शक्ति एक माला में आबद्ध होती जा रही है । कई स्थानों पर संगठन शक्ति के प्रबल होने के कारण नई चेतना का विकास हुआ है । पूज्य वर्तमानाचार्य श्रीमद विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज संगठन के प्रबल पौषक के रुप में समाज मंच पर अवतरित है । कई स्थानों पर विघटन की प्रवृत्तियों को दूर कर आपने संगठन का सूर्य उदय किया है । गत दिनों मदसौर की त्रिस्तुतिक समाज में एकता स्थापित करने का आपका भगीरथ कार्य उल्लेखनीय है । धार्मिक शिक्षा प्रसार के लिए अ.भा. परिषद द्वारा प्रतिवर्ष जैन शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सैंकड़ों छापों ने ज्ञान-दर्शन व चारित्र की आराधना का सुन्दर प्रशिक्षण प्राप्त कर सुसंस्कारों को ग्रहण किया । परिग्रद पाठ्यक्रम निर्धारित हो चुका है एवं उसकी पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है । परिषद द्वारा एक सुविशाल ग्रंथ श्रीमद् जयंतसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है ।

अखिल भारतीय आदर्श जीवन पत्राचार स्पर्धा के आयोजन ने सैकड़ों युवाओं में आदर्श जीवन की ज्योति जलाई है । कई शाखा परिषदों द्वारा पाठशालाओं का संचालन किया जा रहा है । केन्द्रिय कार्यालय द्वारा कुछ स्थानों की पाठशालाओं को मासिक अनुदान भी दिया जा रहा है । जोगेश्वरी बंबई परिषद शाखा ने दृश्य श्रव्य साधनों के माध्यम से संस्कृति के विकास की दृष्टि से 'अमर कुमार' विडियो कॅसेट तैयार की गई है । पारा शाखा परिषद ने शिक्षा समिति बनाकर शिशु मंदिर की स्थापना की है । कई शाखा परिषदें शैक्षणिक कार्यों को सम्पन्न कर छात्रों के नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान में जुटी हुई है । समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक विकास हेतु, अलिराजपुर, पारा आदि शाखाओं में अल्पबचत योजनाएँ चल रही हैं जिनसे काफी राहत मिली है । समाज सुधार उद्देश्य की पूर्ति के लिए परिषद ने मृत्युभोज तथा उससे संबंधित कुरीतियों पर प्रहार करने के लिए वातावरण तैयार किया ।

जनकल्याण के कार्यों को संचालित करने में भी परिषद तथा शाखाएँ पीछे नहीं हैं । राणी स्टेशन (राज.) पर पाली व सिरोही जिलों के चार सौ ग्रामों में प्रचार कर विकलांग शिविर

का आयोजन जोगेश्वरी शाखा ने किया जिसमें विकलांगों को कैलिपर्स, सिलाई मशीन, ट्राय साइकलें, नगद राशि, पाठ्यपुस्तकें आदि सहायता के रुप में दिए गये। समाज की कमजोर वर्ग की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें सिलाई मशीनें प्रदीन की गई। शाखाएँ सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र भी संचालित कर रही है। आंधप्रदेश की काकीनाडा शाखा परिषद ने सामाजिक कार्यक्रमों में परिषद के सैंकडों स्वयं सेवकों की शक्ति सेवा के महामंत्र को सार्थक बनाने में जुट जाती है, जो परिषद की रेखांकन योग्य उपलब्धि है।

अ.भा. परिषद द्वारा परिषद की प्रादेशिक इकाइयों के माध्यम से जिला इकाइयों का गठन किया गया तथा जिला सम्मेलन आयोजित किए परिषद की केंद्रीय कार्यसमिति तथा पदाधिकारियों की बैठकें समय-समय पर हुई जिनमें विकास व विस्तार के निर्णय लिए गये। परिषद का प्रतिनीधि सम्मेलन भी थराद में आयोजित किया गया। केन्द्रीय महामंत्री कार्यालय ने ६४४६ पत्र भेजकर सम्पर्क - सुत्र बनाए रखा। सहमति से संबंधित समस्याओं पर भी परिषद ने अभियान प्रारंभ किए। देश में बनने वाली वधशालाओं का घोर विरोध किया। लोकसभा में गौवध निषेध विधेयक चर्चा के दिन आयंबिल की तपस्या का आयोजन किया गया।

परिषद द्वारा तीन वर्षों में सम्मेलन तथा बैठकों में निम्नानुसार प्रस्ताव पारित किए गये।

१) जैसलमेर मे आयकर विभाग द्वारा मारे गये छापे के विरोध में सभी परिषदों के द्वारा विरोध पत्र भारत शासन को भेजा गया।

२) राजगढ़ 'परिषद भवन' पर धार्मिक उपकरण एवं जिन मंदिरों के उपयोगार्थ आवश्यक सामग्री विक्रयार्थ उपलब्ध कराने के संबंध में।

३) परिषद पाठ्यक्रम भाग १,२,३,४ का पुनः प्रकाशन करवा कर विक्रयार्थ उपलब्ध कराना।

४) अपने - अपने नगर। ग्राम में शासकीय मान्यता प्राप्त "श्री राजेन्द्र जैन विद्या मन्दिर" के नाम से स्कुल शुरु किए जावे जिसमें बालकों की नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दियां जावे।

५) भारत के किसी भी भूभाग पर मुक पशुओं के वध हेतु बनाए जाने वाले बुचड़खानों की समस्त योजनाओं को तत्काल निरस्त किया जावे तथा गाय बछड़ों को राष्ट्रीय पशु घोषित कर उनका वध संघातिक अपराध घोषित किए जाने हेतु भारत शासन एवं कर्नाटक राज्य शासन को सभी परिषदों की ओर से प्रतिवेदन भेजे गये। एवं कई नगरों में जुलूस निकाल कर शासकिय पदाधिकारियों को ज्ञापन दिए जाएँ।

६) "आदर्श जीवन पत्राचार स्पर्धा" का आयोजन कर स्पर्धा में भाग लेकर प्रथम पांच प्रात्याशियों को विशिष्ट पुरस्कार दिए गये।

७) गौवध पर प्रतिबंध लगाने हेतु पुनः भारत शासन से पुरजोर मांग एवं सैकड़ों पोस्ट कार्ड भारत शासन को भेजने की प्रतिबद्धता के साथ आत्मिक बल हेतु आयंबिल की तपस्या की

गई ।

८) संसद में श्री गुमानमलजी लोढ़ा द्वारा प्रस्तुत देश में गौवध पर प्रतिबंध लगाने के संबंध मं उन्हें परिषद के सम्पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया गया ।

९) श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर गुरुसप्तमी के अवसर पर परिषदों का स्टाल लगाना जिसमें सत साहित्य विक्रय के साथ-साथ परिषद की गतिविधियों की जानकारी एवं परिचय स्पर्धा आदि की समुचित व्यवस्था की जावे ।

परिषद रुपी इस वटवृक्ष को (परिषद) शाखाएँ अपनी सेवा एवं कर्तव्यपरायणता से समाज के बहुमुखी विकास में सहयोग दे रही है ।

जड़ (मूल) कभी शाखाओं को धन्यवाद नहीं देता है, कि उसने पथिकों को छाया या फल दिए बल्कि जड़ (मूल) स्वयं सीचित होकर शाखाओं को हरी भरी बनाये रखती है ।

इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय परिषद आपसे सदा इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रखती है । साथ ही अपनी ओर से हरसम्भव सहयोग देने के लिये कृत संकल्प है ।

"नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है ।
इशारा कर वही इस विश्व को फिर लहलहाओ तुम ।
धरा के शुष्क नूर में खींचकर श्रम की सुधा पावन
नया जीवन जगाओ तुम नये सपने सजाओ तुम ।"

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आप सभी के स्नेह सहयोग एवं स्वमित्व की अपेक्षा के साथ आप सभी का हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूँ ।

जय राजेन्द्र /जय जिनेंद्र ।

राजमहेन्द्री के भाई - बहनों के लाभार्थ सूचना

राजमहेन्द्री (आं. प्र.) से श्री एस. जे. क्रीस्टोफर सूचित करते हैं कि किसी जैन भाई-बहन को प्राकृत सीखने की इच्छा हो तो वे सेवा-भाव से मुफ्त में सीखाएंगे । **संपर्क सूत्र -**

Shri S.J. CHRESTOPHER
(Telgu Pandit)
G.T. College, KOTHAPETHA
Pin - 533 223 (Dist. East Godavari)

इतिहास के आईने में परिषद की तस्वीर

" समाज का विकास समाज के प्रत्येक अंग की समुन्नति पर निर्भर है और उसके अभ्युदय का आधार प्रत्येक व्यक्ति की सक्रियता है ।" इसी उक्ति की पृष्ठभूमि से समाज की प्रगति तथा विकास की योजना का आविर्भाव हुआ । अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के रुप में उस योजना ने आकार गृहण किया.

संवत् २०१६ का चातुर्मास, परमपूज्य स्व. गुरुदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की जावरा में स्थिरता हुई । पूज्य गुरुदेव को समाज की चारों दिशाओं में तिमिर की परतें दिखाई दे रही थी । उन्होंने पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज ' मधुकर ' को निर्देश दिया की समाज को संगठन के आलोक से भरने के लिये वे परिषद का ज्योति पुँज अपने हाथों में थामें । पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी ने गुरु की भावना को तत्काल शिरोधार्य किया और युवकों में शक्ति तराशना प्रारंभ की । पूज्य गुरुदेवश्री ने मुनिराजश्री में न केवल ज्ञान व आचार के अपितु समाज संगठन के शिल्पिकार की उठाव लेती योग्यता का आभास भी कर लिया, पूज्य गुरुदेवश्री का आगमन रतलाम हुआ । वे वहाँ से जावरा पधारे । पुनः रतलाम आने के उपरांत पूज्य गुरुदेवश्री ने राजगढ विहार किया । पूज्य मुनिराज श्री रतलाम ही रहे । पूज्य मनिराजश्री में ज्योतिपुंज को प्रज्वलित करने की इच्छा शक्ति गतिशील होने लगी । रतलाम के युवकों के सम्मुख उन्होंने भावना प्रकट की और ज्योतिपुंज को समाज शिखर तक आरोहित करने की चुनौती दी । रतलाम में कर्मठ युवक अगली पंक्ति पर आये । एक संकल्प का उद्घोष करने के लिये वे ' करमदी' की ओर बढ गये । रात्री का निरव शांत वातावरण चारों ओर कालिमा का विस्तार । दिखावे व प्रदर्शन से कोसों दूर शान्त-गंभीर वातावरण । मन्द-मन्द बयार बहने लगी । युवक अपने उद्देश्यों के निर्णायक बिंदू पर पहुँचे । घनघोर अंधेरे को चीर कर ज्योतिपुंज सार्थक संगठन के रुप में उभरने लगा । युवकों ने प्रतिज्ञा कर ली कि इस समाज चेतना की मशाल का उद्योत वे समाज के घर-घर तक पहुँचाएंगे ।

पूज्य गुरुदेवश्री के साथ पूज्य मुनिराज श्री मधुकरजी का पदसंचलन राजगढ की ओर हुआ । संवत् २०१७ की कार्तिक पूर्णिमा को श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का प्रथम अधिवेशन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में आमंत्रित कर लिया गया । युवकों में जागृति की लहर बल खाने लगी । मालव, निमाड़ के कोने-कोने से प्रतिनिधियों में भाग लेने की होड़ लगी । पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के सान्निध्य में परिषद् ने विधिवत् स्वरुप प्राप्त कर लिया । अधिवेशन की अध्यक्षता - श्री सौभाग्यमलजी सेठिया (निम्बाहेड़ा) ने की । प्रथम कदम के रुप में परिषद का कार्यक्षेत्र मालव-मेवाड़ प्रान्तीय निर्धारित किया गया । लक्ष्य यह

निश्चय हुआ कि कदम बढते रहेंगे और विकास का विस्तार अखिल भारतीय स्तर तक हो जावेगा ।

परिषद ने अपनी स्थापना के साथ ही चार उद्देश्यों-समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, समाज सुधार तथा आर्थिक विकास का घोष किया । एक आदर्श समाज के संजीवन की स्विकारोक्ति की गई ।

युवा शक्ति से समाज आन्दोलन की तरंगे टकराने लगी । स्वयं युवक जुड़ने लगे, अपनी समाज से, अपनी संस्था से, जिन नगरों अथवा ग्रामों में श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक सभा, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक मंडल, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक संघ आदि विभिन्न नामों से युवा संगठन संस्थाओं के रुप में संचलित हो रहे थे, वे एकसूत्र में आबध्द होने लगे । जहाँ कोई युवा संगठन नही था, वहाँ परिषद का बीज आरोपित करने का प्रयत्न किया गया । फलतः एक साथ सत्रह शाखाओं का अस्तित्व उभर कर दैदिप्यमान हो गया ।

परिषद के प्रति समाज के स्नेह की धाराएँ प्रभावित होने लगी । पदाधिकारियों के दौरे हुए । प्रवृत्तियों का जन्म होने लगा, योजनाएँ मूर्तरुप तक पहुँचने लगी, कदम निरंतर अग्रशील होते गये । बुजुर्गों से आशीर्वाद बौछारों की भांति उछलने लगे । द्वितीय अधिवेशन रतलाम के प्रांगण में हुआ, दिशादर्शन के लिये पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के पास श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर श्री सौभाग्यमलजी सेठिया तथा रतलाम के कार्यकर्ता पहुँचे । गुरुदेवश्री का आशीर्वाद प्राप्त कर अधिवेशन का कार्य प्रारम्भ किया । पूज्य मुनिराज श्री कल्याणविजयजी महा., मुनि श्री हेमेंद्र विजयजी म., मुनि श्री सौभाग्यविजयजी म., मुनिश्री रसिक विजयजी म., मुनि श्री जयन्तविजयजी म., 'मधुकर', मुनिश्री जयप्रभविजयजी म., मुनि श्री पुण्यविजयजी म., मुनि श्री लक्ष्मण विजयजी आदि अधिवेशन में विद्यमान थे । श्री सौभाग्यमलजी सेठिया की अध्यक्षता में द्वितीय अधिवेशन १४ व १५ मई १९६० को दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ । परिषद के कार्यकर्ताओं ने संगठन व सेवाओं की शपथ ली ।

सेवा के संकल्प का साकार दृश्य समाज के धरातल पर उतरने लगा । परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के सान्निध्य में श्री मोहनखेडा तीर्थ पर उपधानतप का आयोजन हुआ । परिषद शाखाओं से स्वयंसेवकों के दल उपधानस्थल की ओर उमड़ने लगे । श्रम तथा पुरुपार्थ का इतिहास अपना अध्याय अंकित करने के लिये सामग्री जुटाने लगा । परिषद के कार्यकर्ता तप करके खरे उतर आए । पूज्य गुरुदेवश्री ने स्वंय परिषद् कार्यकर्ताओं की कर्मठता की प्रशंसा प्रदान की । भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित रिलिजियंस ट्रस्ट बिल का तीव्र विरोध किया । गाँवों व शहरों से सेकड़ों विरोधी पत्र भेजे गये देवनार में प्रस्तावित बूचड़खाने की राक्षसी योजना का परिषद ने प्रतिकार किया । श्री भोयणीजी तीर्थ

पर लगाये गये यात्री दर्शन कर के विरुद्ध अलख जगाया । जबलपुर में गुण्डों द्वारा किये गये जिन प्रतिमाओं के ध्वन्स के विरुध्द जनमत जागरण किया ।

परिषद के लिए दो वर्ष का कार्यकाल अपने प्रति समाज में विश्वास संचालित करने के लिये पर्याप्त था ।

इस मध्य त्रिस्तुतिक समाज तथा परिषद पर तीव्र वज्रपात हुआ । पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजययतीद्रसूरीश्वरजी महाराज का दुःखद स्वर्गवास हो गया । अपने जन्मदाता को खोकर परिषद किंकर्तव्यमूढ हो गयी लेकिन पुनः आत्मविश्वास के साथ उसने अपना कदम संभाला ।

तृतीय अधिवेशन की बिगुल खाचरौद नगर में गुंजने लगी । १९ व २० मई १९६१ परिषद जीवन के अमृत दिवस सिध्द हुए । मार्गदर्शन से अमृत वृष्टि करने के लिये इन्दौर विराजित पूज्य गणाधीश मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज से अध्यक्ष महोदय व प्रधानमंत्री महोदय मिले व उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर लौटे । पूज्य मुनिराज श्री सौभाग्यविजयजी महा. मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी म, मुनि श्री रसिकविजयजी म, मुनि श्री जयन्तविजयजी म. ' मधुकर' मुनि श्री जयप्रभविजयजी महाराज ,मुनि श्री पुण्यविजयजी महा., मुनि श्री भुवन विजयजी महा. का सान्निध्य परिषद अधिवेशन को प्राप्त था । इसी अधिवेशन में परिषद को अखिल मालवा-मेवाड़ प्रान्तीय सीमा से विस्तृत कर अखिल भारतीय रुप में अंतरित करने का ऐतिहासिक निर्णय किया गया । इसी अधिवेशन में " नवयुवक " शब्द लेकर उग्र विचार विमर्श हुआ एवं अन्त में निश्चय किया गया कि परिषद् के नाम की यथास्थिति बनाई रखी जावे ।

तृतीय अधिवेशन के तत्काल बाद केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सौभाग्यमलजी सेठिया तथा केन्द्रीय प्रधानमंत्री श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने परिषद् प्रचारार्थ दौरा प्रारम्भ किया । इन्दौर में गणाधीश पूज्य मुनि श्री विद्याविजयजी महा. (बाद में आचार्य) तथा पूज्य मुनि श्री कल्याणविजयजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त कर उन्होंने राजगढ़ से निमाड़ क्षेत्रीय दौरा प्रारम्भ किया । वे टांडा, बाग, कुक्षी तथा अलीराजपुर होते हुए दोहद से गुजरात में प्रविष्ट हुए । गुजरात में पहली शाखा के रुप में आनन्द ने अखिल भारतीय स्वरुप का शुकुन किया । वहाँ से उन्होंने अहमदाबाद तथा थराद जाकर परिषद् का ज्योतिपुञ्ज आलोकित किया ।

इस सारी अवधि के दर्मियान परिषद शाखाओं की संख्या में अभिवृद्धि होती गई । शाखाएं अपने यहाँ गतिविधियों के द्वारा समाज जागरण को एक के बाद दूसरी उपलब्धियों से संयुक्त करने लगी । उत्सव आयोजनों के अन्तर्गत महावीर जयन्ती, राजेन्द्र जयन्ती, धनचन्द्र जयन्ती, भूपेन्द्र जयंती, यतीन्द्र जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा आदि पर्वों को कार्यक्रमों से सजाया जाने लगा । स्थान-स्थान पर धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना हो गई । तीसरे वर्ष के अन्त

तक इन पाठशालाओं मे छात्रों की संख्या पांच सौ तक पहुँच गई। केन्द्रीय कार्यालय ने स्वंय भी सहायता देकर पांच नवीन पाठशालाओं का शुभारम्भ करवाया। पाठशालाओं के साथ ही स्वाध्याय मण्डल, वाचनालय, पुस्तकालय, भाषणमालाएँ, हस्तलिखित पत्रिकाएँ, व्यायाम केन्द्र भी परिषदों के माध्यम से जन्म तथा जीवन पा गये। इन प्रवृत्तियों की संख्या बराबर बढ़ती गई। परिषद् की केन्द्रीय कार्यसमिति की बैठकें समय-समय पर होती रहीं जो अपने निर्णयों से शाखाओं को मार्ग दर्शन, परिपत्र प्रचारित करती रहीं। पदाधिकारियों के दौरे से समग्र परिषद् शाखाएँ तेजी से अपने लक्ष्य प्राप्त करने हेतु प्रेरित हो उठीं। परिषद् की सदस्य संख्या का आँकड़ा निरन्तर बढ़ता जा रहा था। शाखाओं के विधिवत् चुनाव केन्द्रीय प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किये जाते रहे। विधान और उसकी परम्पराओं का निर्वाह परिषद कार्य समिति की बैठकों व अधिवेशनों के निर्णयों के प्रकाश में होने लगा। परिषद् का सन्देश सर्व तक पहुँचाने के आन्दोलन ने गति पकड़ ली। आर्थिक विकास की दृष्टि से उद्योग केन्द्र, अल्पबचत योजना, सिलाई प्रशिक्षण शालाएँ आदि बनाने के लिये परिषद् की प्रेरणा प्रवाहमान थी।

नवयुवक परिषदों के साथ ही बाल व कन्या परिषदों का निर्माण भी हुआ। कई स्थानों पर बालकों व कन्याओं ने इन शाखाओं का फैलाव किया।

मरुधर की ओर परिषद् क्रान्ति की लहरें बढ़ने लगी। चौथा अधिवेशन परिषद् ने मरुधर में करने हेतु जालोर जिले की बागरा तहसील के एक ग्राम आकोली का चयन किया। वहाँ प्रतिष्ठोत्सव का कार्यक्रम पूज्य मुनिराज गणाधीश श्री विद्याविजयजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहा था जिसमें हजारों धर्मभक्तों के भाग लेने की संभावना थी। परिषद् को मरुधर प्रदेश में प्रचार हेतु एक उत्तम प्रसंग की प्राप्ति हुई और उसने उसका उपयोग धर्म प्रभावना के साथ संगठन शक्ति सबल करने के लिये भी कर लिया। अखिल भारतीय स्वरुप देने के एक वर्ष में ही जहाँ उसका गगनघोष गुजरात में गूँजा, वहीं उसका अधिवेशन दिनांक ७ व ८ मई ६२ को मरुधर में सफलता प्राप्त करने लगा। अधिवेशन को मार्ग-दर्शन प्रदान करने हेतु पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी महा., ने उपस्थिति प्रदान की। प्रतिष्ठोत्सव के अवसर पर परिषद् के स्वयंसेवक दल ने भी तनतोड़ काम किया जिससे सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त हुई। मरुधर में परिषद् के उद्देश्यों के सम्बन्ध में रुचि बढ़ने लगी। अधिवेशन की अध्यक्षता श्री सौभाग्यमलजी सेठिया ने की।

पांचवां अधिवेशन पुनः परिषद की जन्मभूमि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर हुआ। श्री मोहनखेड़ा पर स्वर्गस्थ आचार्य देव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के बिम्ब का प्रतिष्ठोत्सव २० फरवरी १९६४ को सम्पन्न हुआ। उसी प्रसंग पर आचार्य पाटोत्सव का समारोह भी हुआ एवं पूज्य गणाधीश श्री विद्याविजयजी महाराज को पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के रुप में पदासीन किया गया। इस अवसर पर परिषद्

के सेकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने तनझोंक कर उत्सवों की शानदार व्यवस्था में अपनी सेवा समर्पित की। इसके उपरांत नूतनाचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज की पवित्र निश्रा में मोहनखेड़ा तीर्थ पर १६ व १७ मार्च १९६४ को परिषद का पांचवा अधिवेशन श्री सौभाग्यमलजी सेठीया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। पूज्य नूतनाचार्य श्री ने परिषद को आशीर्वाद प्रदान करते हुए इसकी सफलता के लिये अपनी शुभ-कामनाएँ व्यक्त कीं। उनके आशीर्वाद से परिषद् में नवीन उत्साह दौड़ने लगा।

परिषद् की शाखाएँ चलती रहीं। प्रवृत्तियाँ समाज को उन्नत करने के लिये क्रियाशील रहीं, लेकिन पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज, 'मधुकर' के गुजरात प्रदेश में विचरण से परिषद् की गति मन्द हो गई। पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर' ने इसे जागृत करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने १९६५ में अहमदाबाद में परिषद के समस्त कार्यकर्त्ताओं की एक विशाल बैठक आमंत्रित की। परिषद् के कार्यकर्त्ता नयी दिशा प्राप्त करने अहमदाबाद की ओर अग्रसर हो गये। कार्यकर्ताओं का अभियान शिथिल अवश्य हुआ था किन्तु अपने संकल्पों के प्रति समर्पण की भावना उनमें जीवित थी। अहमदाबाद की बैठक में परिषद् की पिछली समस्त गतिविधियों का अवलोकन किया गया एवं नये सिरे से कार्य में जुट जाने का आव्हान किया गया।

गतिविधियों में उठाव आया। परिषद् की शाखाओं में जीवन फूँका जाने लगा। उन्हें केन्द्रीय कार्यालय से परिपत्र जारी किये गये। बैठक नियमित होने लगीं। पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयी 'मधुकर' का चातुर्मास रानापुर में हुआ। २१ अगस्त १९६६ को पूज्य मुनिराज की निश्रा में परिषद् कार्यकत्ताओं की एक विशाल बैठक आयोजित की गई। इसी ने छठे अधिवेशन का भी रुप ले लिया। अध्यक्ष - श्री सौभाग्यमलजी सेठिया ने अपने समस्त पदाधिकारियों सहित त्यागपत्र प्रस्तुत कर दिया। श्री सेठियाजी परिषद् की स्थापना से अध्यक्ष पद पर थे। उन्होंने पूरी निष्ठा व कर्त्तव्य परायणता के साथ अपने पद का निर्वाह किया। व्यस्तता के कारण उन्होंने अपने पद से निवृत होने की इच्छा प्रकट की। भारी ह्रदय के साथ सभी ने श्री सेठियाजी व उनके सहयोगियों का त्यागपत्र स्वीकार किया। केन्द्रीय कार्य समिति के स्थान पर एक तदर्थ समिति नियुक्त कर दी गई। परिषद् के केन्द्रीय संयोजक पद पर श्री शांतिलालजी भंडारी (झाबुआ) नियुक्ति किये गए। श्री भंडारीजी ने परिषद् को पुनर्गठित करने का प्रयत्न किया। १९६७ में श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर पुनः परिषद् की बैठक हुई जिसमें श्री हुकुमीचन्दजी पारिख (इन्दौर) संयोजक मनोनीत किये गये। रानापुर चातुर्मास के पश्चात् पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर' ने चातुर्मासों के लिये राजस्थान तथा गुजरात की ओर प्रयाण कर दिया। अपने प्रेरणा केन्द्र से सम्पर्क टूट जाने के कारण परिषद् गतिहीन होने लगी। केन्द्रीय कार्य समिति की बैठक भी नहीं हुई। कहीं-कहीं शाखाएँ कार्य करती रहीं किन्तु उनमें विशेष प्राण नहीं था। मार्ग-दर्शन के अभाव में परिषद् के जीवन

का कृष्ण पक्ष प्रारम्भ हो गया। आपसी सम्पर्क टूटने लगा। फिर भी परिषद् दीप की टिमटिमाती लौ मारवाड़ बागरा (राजस्थान) में तेजी से ऊर्ध्वित होती रही। बागरा शाखा परिषद् ने समाज क्रांति के निनाद की प्रतिध्वनि की। पूरी ढंढार पट्टी में एक चेतना - सी फैल गई। समाज के पुराने बन्धन चरमराकर गिरने लगे। सुधार का परिवर्तन सामने आया।

पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर' ने पुनः मालव क्षेत्र में पदार्पण किया। १९७० तक परिषद् धुंधली हो चुकी थी। उन्होंने कार्यकर्ताओं को जगाकर समाज सेवा के महायज्ञ में जुटने के लिये प्रेरित किया। परिषद् के कार्यकर्ता श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर एकत्र हुए। श्री मधुकरजी की मधुरवाणी ने कर्त्तव्यपथ पर जुट जाने की गर्जना की। कार्यकर्ताओं ने अलसायापन दूर करने की तत्परता दिखाई। सभी ने खड़े होकर पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के समाधि मन्दिर के सम्मुख प्रतिज्ञा की कि वे कर्त्तव्यमार्ग से पराङ्मुख नहीं होंगे। बैठक में इस तथ्य के प्रति काफी खेद था कि जिस परिषद् ने उन्हें विकास से परिपूर्ण किया, उस परिषद् के प्रति वे उदासीन हो गये। एक ही स्वर गूँजने लगा। "जब जागे तभी सवेरा।" नैराश्यता व उदासीनता को समाप्त करने की तैयारी से परिषद् के प्रति आशाओं का नया धरातल खड़ा हो गया। नई तदर्थ समिति का गठन किया गया। श्री भंवरलालजी छाजेड़ (नीमच) संयोजक के रुप में मनोनीत किये गये।

इसके साथ ही परिषद् के मुखपत्र 'शाश्वत धर्म' का प्रकाशन भी नियमित किया गया। उसके प्रकाशन में आर्थिक अभाव के कारण गतिरोध ने जन्म ले लिया था। इस अवरोध को दूर करने हेतु पूज्य मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज 'मधुकर' ने सदुपदेश दिये। शाश्वत धर्म को पाक्षिक रुप में प्रकाशित करने के लिये निर्णय किया गया। शाश्वत धर्म की स्थापना भी पूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने की थी। वे अपने सामने ही इसे साहित्यिक तथा सामाजिक प्रवक्ता के रुप में देखना चाहते थे। पूज्य मधुकरजी ने उनकी इस कल्पना को शाश्वत धर्म के कलेवर में साकार करने के लिये इसे जीवनदान दिया।

नव पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों के सिंचन एवं युवाओं को ज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्रभावना से श्रद्धायुक्त सम्बन्धित करने के लिये त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर समाज में जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का पहला प्रयोग पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महा. के सदुपदेश से अ. भा. श्री राजेनेद्र जैन नवयुवक परिषद् ने श्री मोखनखेड़ा तीर्थ में करने की घोषणा की। परमपूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजयविद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महा. के तत्वावधान में १९७१ में मई-जून मास में शिविर का (एक मास की अवधि के लिये) श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसे पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर' ने वाचना प्रदान की। शिविर का संचालन श्री सुरेद्र लोढ़ा (मंदसौर) ने किया। शिविर में ८४ छात्रों ने नियमित दिनचर्या, आध्यात्मिक हवामान तथा नैतिक वातावरण के मध्य जैन संस्कृति के विविध विषयों

का पारदर्शन प्राप्त किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की बैठक हुई जिसमें श्री महेन्द्रकुमार भंडारी (झाबुआ) को संयोजक नियुक्त किया गया।

पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज "मधुकर" के उज्जैन चतुर्मास काल में ही शिविरार्थियों का सम्मेलन आयोजित किया गया। इसी अवसर पर अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का आठवां अधिवेशन सम्पन्न हुआ। शिविरार्थियों ने परिषद् के कार्य संचालन में भाग लेने का आश्वासन अर्पित किया।

पूज्य मुनिराज श्री मधुकरजी का दिव्य उपदेश रंग लाने लगा। १९७५ के मई मास की चार व पांच तारीख को जावरा में परिषद् का नवां अधिवेशन आयोजित किया गया। दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ उठाया गया इस बार का कदम परिषद् के ग्रहयोगों को बदलने वाला साबित हुआ। इससे पूर्व रतलाम नगर में परिषद् कार्यकर्ताओं की एक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी 'मधुकर' ने कार्यकर्त्ताओं को गुरुदेव की वाणी, परिषद् के उद्देश्य, परिषद् कार्यकताओं द्वारा एकाधिक लिये गये संकल्पों का स्मरण करवाया। खाचरौद में सम्पन्न परिषद् कार्यसमिति की बैठक में जावरा परिषद् की ओर से आमंत्रण दिया गया कि गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की क्रियोद्धार भूमि पर निर्मित विशाल दादावाड़ी के पवित्र प्रांगण में ही परिषद का पुनर्जागरण किया जाए। रतलाम की बैठक में डॉ. श्री प्रेमसिंहजी राठौड़ (रतलाम) को परिषद का संयोजक मनोनीत किया गया। म.प्र. राज्य. परिवहन कर्मचारियों की हड़ताल चल रही थी। यातायात साधन ठप्प पड़े हुए थे। शिविर स्थल तक पहुँचने में काफी असुविधा थी लेकिन भारी संख्या में कार्यकर्ता एकत्र हुए। पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर', पूज्य मुनिराज श्री लक्ष्मण विजयजी म., पूज्य मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी तथा पूज्य मुनिराज श्री लेखेन्द्रशेखर विजयजी के सान्निध्य तथा डॉ. प्रेमसिहंजी रोठौड़ की अध्यक्षता में अधिवेशन भारी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के साथ ही परिषद् की नसों में नया रक्त प्रवाहित हो गया। समस्त शाखाएँ सक्रिय हो उठीं। इससे पूर्व समस्त शाखाओं में विधिवत् चुनाव करवाये गये और उनके अधिकृत प्रतिनिधियों ने उसी हैसियत से सम्मेलन में भाग लिया। आठ वर्षों के उपरांत परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति तथा पदाधिकारियों के निर्वाचन हुए। डॉ. श्री प्रेमसिंहजी राठौर केन्द्रीय अध्यक्ष पद पर आरुढ किये गये।

इस अधिवेशन की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि समाज के साधनहीन छात्रों के लिये श्री राजेन्द्र छात्रवृत्ति योजना का अस्तित्व उभरा। साथ ही तीर्थंकर देव श्री महावीर स्वामी के २५०० वें निर्वाण वर्ष की स्मृति में चांदी के सिक्के बनवाने का निर्णय किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि इनके एक पहलू पर अभिधान राजेन्द्रकोष की छबि एवं राजेन्द्र संवत् अंकित किये जावें। साथ ही इस अधिवेशन में महिला प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् शाखाएँ गठित करने का मंगल प्रारंभ भी हुआ। कुछ स्थानों

पर महिला परिषदों के गठित हो जाने की सूचना भी प्राप्त हुई। परिषद् के विधान को युक्ति-युक्त बनाने हेतु कई संशोधन किये गये। परिषद की केन्द्रीय कार्यसमिति में महिला प्रतिनिधियों का समावेश किया गया। जावरा का अधिवेशन परिषद् प्रगति की राह में नया सीमा चिन्ह बन गया। परिषद् की गति को दक्षिण भारत की ओर प्रवृत्त करने हेतु प्रयत्न किया गया। भूतपूर्व अध्यक्ष - सौभाग्यमल जी सेठिया तथा कोशाध्यक्ष - श्री शांतिलालजी सुराणा ने मद्रास तथा बैंगलौर क्षेत्र की यात्रा की। यह दौरा १९७५ के नवम्बर मास के द्वितीय सप्ताह में हुआ। समाज के महानुभवों ने परिषद् को अपनाने का आश्वासन दिया।

दसवें अधिवेशन की तैयारी परिषद् की अलिराजपुर शाखा ने श्री लक्ष्मणतीर्थ की पवित्र भूमि पर की। इस अधिवेशन को सान्निध्य पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी 'मधुकर' ने प्रदान किया। अध्यक्षता डॉ. प्रेमसिंहजी राठौड़ ने की। १८ व १९ दिसम्बर १९७५ को प्रतिनिधिगण दूर-दूर से श्री पद्मप्रभु स्वामी की छत्रछाया में समाजोत्थान पर विचार विमर्श करने के लिये एकत्र हुए। प्रथम बार दक्षिण भारत के प्रतिनिधियों की उपस्थिति भी महत्त्वपूर्ण रही। परिषद् का दक्षिण भारत में प्रवेश हो गया। इसी अधिवेशन से परिषद् की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने हेतु एक स्थायी कोष करने की शुरुवात हुई। भेंट के रुप में परिषद् को विभिन्न बोलियों तथा नकरों के माध्यम से उल्लेखनिय राशि प्राप्त हुई। जावरा अधिवेशन में चांदी के सिक्के निर्मित करवाने का जो निर्णय किया गया था, वे सिक्के भी इस अधिवेशन में प्रसारित कर दिये गये। इस अवसर पर 'शाश्वत धर्म' का एक विशेषांक भी प्रकाशित हुआ। पारित किये गये प्रस्तावों में राजेन्द्र बचत योजना संचालित कर समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक विकास के उद्देश्य की परिप्राप्ति की दिशा में ठोस कार्य करने का कदम उठाया गया। शाखा वार प्रगति का आकलन किया गया।

ये दोनों अधिवेशन परिषद् के लिये वरदान बन गये। पाठशालाओं को अनुदान दिया जाना प्रारम्भ किया गया। इससे कई शाखाओं द्वारा संचालित लड़खड़ाती धार्मिक पाठशालाओं को सम्बल मिल गया। परिषद् के माध्यम से गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति एवं गुप्तदान भी मिलने लगा।

तीर्थंकर श्री महावीर देव के २५०० वें निर्वाण वर्ष की स्मृति में परिषद् द्वारा 'शाश्वत धर्म' ने चार सौ पृष्ठों का एक विशाल विशेषांक निकाला जो अपने आप में जैन साहित्य के मध्य उल्लेखनीय स्थान स्थापित करने में सफल हुआ।

शाखाओं की गति को त्वरण देने के उद्देश्य से दि. ७ नवम्बर १९७६ से १६ नवम्बर ७६ तक महामंत्री श्री सी. बी. भगत ने मालव व निमाड़ क्षेत्रीय शाखाओं का दौरा किया। आपके साथ दौरे में भू. पू. अध्यक्ष - श्री सौभाग्यमलजी सेठिया तथा कोषाध्यक्ष - श्री शान्तिलालजी सुराणा भी रहे।

परिषद् पुनः एक सशक्त संगठन के रुप में सामने आ गयी। केन्द्रीय परिषद् ने सिलाई केन्द्रों को मशीनें अनुदान के रुप में दी। धर्मार्थ औषधालयों का निर्माण व संचालन भी परिषद् शाखाएँ करती रही। अस्पतालों में बिमारों को निःशुल्क दवा वितरण कर मानव कल्याण की भावना को जीवन्त किया। पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के रजत सिक्के प्रसारित किये गए। जालोर के स्वर्णगिरि पर प्याऊ संचालन हेतु केन्द्रीय परिषद् ने अनुदान दिया।

परिषद् का ग्यारहवां अधिवेशन निम्बाहेड़ा (राजस्थान) में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन को सानिध्य पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर', पूज्य मुनिराज श्री विनय विजयजी तथा पूज्य मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी महा. ने प्रदान किया एवं परिषद् के अध्यक्ष श्री डॉ. प्रेमसिहंजी राठौड़ ने इसकी अध्यक्षता की। निम्बाहेड़ा अधिवेशन में शाखाओं की प्रवृत्तियों को प्रगति का आयाम प्राप्त हुआ। इस अधिवेशन के उपरान्त प्रगति का दौर बढ़ता गया। परिषद् द्वारा धार्मिक रेकार्डस तैयार करवाई गई। जिनमें गुरुदेव की आरती तथा नमस्कार मंत्र धुन सम्मिलित हैं। सिलाई केन्द्रों की संख्या बढ़ गई। श्री भंवरलालजी छाजेड़ नव अवधि के लिये अध्यक्ष निर्वाचित हुए और उन्होंने अपना कार्यभार सम्हाला। बारहवां अधिवेशन श्री भंवलालजी छाजेड़ की अध्यक्षता में भिवण्डी (महाराष्ट्र) में सम्पन्न हुआ।

इसी वर्ष पूज्य मुनिराज श्री जयंतविजयजी महा. 'मधुकर' की निश्रा में रतलाम चातुर्मास में केन्द्रीय परिषद् द्वारा स्थानीय स्तर पर धार्मिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। साथ ही धार्मिक निबन्ध प्रतियोगिता भी सम्पन्न हुई। परिषद् ने धार्मिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता की प्राथमिक सफलता से उत्साहित होकर इसे अखिल भारतीय स्तर पर संचालित करने की घोषणा कर दी। रतलाम चातुर्मास के अन्तर्गत एक दस दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन परिषद् ने श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक ट्रस्ट कार्यकर्तागण रतलाम के सहयोग से किया। इस शिविर में तीस छात्रों ने दस दिनों तक ज्ञान की आराधना की। परिषद द्वारा आगामी शिविर जालोर में आयोजित किया गया। साथ ही 'राजेन्द्र ज्योति' के रुप मे एक उल्लेखनीय ग्रंथ प्रकाशित किया। तेरहवां अधिवेशन श्री भाण्डवपुर तीर्थ पर हुआ। बाद की प्रगति इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित की गई है।

परिषद् युवकों की जीवन गंगा बन गई है। समाज के कायाकल्प का प्रतिबिम्ब इसकी हिल्लोरों के साथ धरातल पर चमक रहा है। जीवन के क्षेत्रों से जुड़ी, जीवन के क्षेत्रों में मिली व जीवन के क्षेत्रों से उठी परिषद् एक स्थायी शक्ति के रुप में विकसित हो रही है। युवकों की पंक्तियां इसे अपना रही हैं। युवकों का उन्नत उल्लास इसका श्रृंगार कर रहा है। बाधाओं और प्रतिरोधों की चट्टानें परिषद् प्रवाह की मार से बिखर कर विलुप्त हो रही हैं। पूज्य गुरुदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का स्वप्न निरर्थक नहीं है, उसका सामाजिक परिपक्व होता जा रहा है। समाज, अब समाज के लिये जिन्दा हो रहा है।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैननवयुवक परिषद के अधिवेशन

क्रम	वर्ष	स्थान	सानिध्य	अध्यक्ष
१.	१९५९	श्री मोहनखेड़ा तीर्थ (म.प्र.)	पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
२.	१९६०	रतलाम (म.प्र.)	पू. मुनिराज कल्याण विजयजी, श्री सौभाग्यविजयजी महाराज आदि	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया
३.	१९६१	खाचरोद (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री सौभाग्य विजयजी महा., पू. मु. श्री देवेन्द्र विजयजी महा. आदि	श्री सौभाग्यमलजी सठिया
४.	१९६२	आकोली (जि. जालोर राज.)	संघ प्रमुख पू. मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज आदि	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया.
५.	१९६४	मोहनखेड़ा तीर्थ (म.प्र.)	पू. आचार्य श्रीमद्विजयविद्याचंद्रसूरीश्वरजी महाराज	श्री. सौभाग्यमलजी सेठिया.
६.	१९६६	रानापुर जि. झाबुआ (म.प्र).	पू. मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज	श्री शांतिलालजी भण्डारी (संयोजक)
७.	१९७०	श्री मोहनखेड़ा तीर्थ (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज	श्री भंवरलालजी छाजेड़ (संयोजक)
८.	१९७१	उज्जैन (म.प्र.)	पू. आचार्य श्रीमद्विजयविद्याचंद्रसूरीश्वरजी महाराज	श्री महेन्द्रकुमारजी भण्डारी (संयोजक)
९.	१९७४	जावरा (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री जयंत विजयजी महाराज	डॉ. श्री प्रेमसिंहजी राठौड़
१०.	१९७५	श्री लक्ष्मणी तीर्थ (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज	डॉ. श्री प्रेमसिंहजी राठौड़
११.	१९७७	निम्बाहेड़ा (राज.)	पू. मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज	डॉ. श्री प्रेमसिहंजी राठौड़.
१२.	१९८०	भिवण्डी (महाराष्ट्र)	पूज्य मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज	श्री भंवरलालजी छाजेड़
१३.	१९८५	श्री भाडंवपुर तीर्थ	पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज	श्री तगराजजी हीराणी
१४.	१९८८	श्री. भाडंवपुर तीर्थ	पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज	श्री जीतमलजी हीराणी
१५.	१९९१	जावरा (म. प्र.)	पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज	श्री सेवंतीलालजी एम. मोरखिया

आ श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा,
जि. गांधीनगर

परिषद के नए पदाधिकारियों का परिचय

श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया

अ.भा.श्री रा. जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवंतीलालभाई मणीलालभाई मोरखिया व्यवहार कुशल हसमुख आकर्षक तथा निष्ठावान व्यक्तित्व के धनी है। आपका जन्म ७ मई १९४० को गुजरात राज्य जिला बनासकांठा के ग्राम थराद में हुआ। आप प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात बम्बई पहुंचे जहां आपने काफी व्यावसायिक सफलता अर्जित की। साथ ही सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में भी आपने अपना स्थान बनाया। आप वर्तमान में बम्बई में ही व्यवसायरत हैं। आपका बहुभाषी के रुप में गुजराती, मराठी, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं पर अच्छा अधिकार है आपश्री सीमन्धर स्वामी जैन मन्दिर पेढ़ी - मेहसाना (गुजरात) के अध्यक्ष, श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र - कोबा (गुजरात) के ट्रस्टी, अ. भा. श्री राजेन्द्र फाऊन्डेशन ट्रस्ट - अहमदाबाद के ट्रस्टी, श्री नवकार मंत्र तीर्थ ट्रस्ट छत्राल (गुजरात) के ट्रस्टी, श्री थराद जैन भोजनशाला - थराद (गुजरात) के ट्रस्टी, श्रीमती आर.सी. पारिख हॉस्पिटल, थराद (गुजरात) के ट्रस्टी तथा अ.भा. कॉपर प्रेस ट्यूब असोसिएशन (बम्बई) के संचालक, बॉम्बे मेटल एक्सचेंज असोसिएशन चेरिटेबल ट्रस्ट बम्बई के ट्रस्टी पर हैं।

सौधर्म वृहत्तपागच्छीय श्वे. जैन त्रिस्तुतिक संघ बम्बई के अध्यक्ष, श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट एवं श्री राजेन्द्रसूरि जन कल्याण ट्रस्ट के ट्रस्टी, श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर - मेघनगर (म.प्र.) के ट्रस्टी तथा परिषद भवन - राजगढ़ (म.प्र) के अध्यक्ष पद का भी निर्वाह कर रहे हैं।

आप बॉम्बे मेटल एक्सचेंज एसोसियशन बम्बई के अध्यक्ष, इन्डियन मर्चेन्ट चेम्बर कमेटी के सदस्य तथा कस्टम सलाहकार समिति बम्बई के सदस्य पद पर कार्य कर चुके है। आपको धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं का अच्छा अनुभव है। आपमें कार्य करने की उत्तम भावना है।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वरिष्ट उपाध्यक्ष पद पर आपको श्री भांडवपुर तीर्थ अधिवेशन में नियुक्त किया गया था। बाद में श्री जीतमलजी हिराणी पूर्व अध्यक्ष के स्वर्गवास पर आपने परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष का पद भार सम्हाला। पुनः १९९१ के जावरा अधिवेशन में आपको अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया है।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप - रतलाम

म.प्र. के युवा उद्योगपतियों में रतलाम (म.प्र.) निवासी श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप के नाम की सन्मान के साथ गणना की जाती है। आपकी कुशल प्रबंधन क्षमता तथा कुशाग्र मेधा के बल पर आपने अपने व्यवसाय का चहुंओर विस्तार किया है। पैतृक व्यवसाय की समुन्नति के साथ ही आपने औद्योगिक क्षेत्र में दृढ़ता से पांव जमाएं हैं। बदनावर का कश्यप स्वीटनर्स अपनी दक्षता का उदाहरण है। अपने दादा श्री कन्हैयालालजी कश्यप (अ.भा. त्रिस्तुतिक समाज के अग्रणीय) के पदचिन्हों पर चलते हुए आप सामाजिक व धार्मिक कार्यों में गहन अभिरुचि के साथ सक्रिय हैं। अपने पिता श्री अशोक कुमारजी के उदारता के गुणों को भी आपने गुणाकार कर अपनाया है। श्री चैतन्यकुमारजी ने रतलाम स्थित जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को 'श्री कन्हैयालाल कश्यप वाणिज्य महाविद्यालय' में उन्नत करने के लिये इसी वर्ष दो लाख रुपये का दान दिया। साथ ही अपनी दादीमां साहब झमकुबाई की ओर से ग्यारह लाख रुपये के परोपकारी न्यास की घोषणा की। आप रतलाम विधि महाविद्यालय के संरक्षक, श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर पेढ़ी मोहन खेड़ा के कोषाध्यक्ष, श्री सौधर्म वृहत्पागच्छीय त्रिस्तुतिक ट्रस्ट मंडल - रतलाम के अध्यक्ष, श्री स्वर्णगिरि जैन तीर्थ जालोर के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। किचन किंग गैस स्टोव निर्माण में आपको स्वर्णपदक प्राप्त हुआ है। बड़नगर जैन संघ द्वारा आपको 'युवारत्न' की उपाधि प्रदान की। वर्तमान में आप अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्पागच्छीय जैन श्वे. संघ के कोषाध्यक्ष भी हैं। समाज ने आपके रुप में एक निष्ठावान, प्रतिभाशाली, सुयोग्य युवा व्यक्तित्व की प्राप्ति की हैं।

उपाध्यक्ष श्री मीठालालजी हीराणी - मद्रास

रेवतड़ा के हीराणी परिवार का नाम अ.भा त्रिस्तुतिक समाज में सुनहरे अक्षरों सें अंकित है। इसी परिवार ने पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज का चातुर्मास करवाया। अ. भा. परिषद को भी स्व. श्री तगराजजी तथा स्व. श्री जीतमलजी के रुप में दो कर्मठ व सफल अध्यक्ष प्रदान किए। श्री उकचंदजी के सुपुत्र श्री मीठालालजी हीराणी (५०) मद्रास में विगत अड़तीस वर्षों से व्यवसाय कर रहे हैं। आपने अपनी कठोर मेहनत से व्यावसायिक सफलताएं अर्जित की हैं। आप सुमधुर, शांत स्वभावी तथा मिलनसार हे। सामाजिक क्षेत्रों में आप महत्वकांक्षा से अधिक महत्व कर्तव्य को देते हैं। इस कर्तव्य शीलता ने ही आपको अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के उपाध्यक्ष पद पर सुशोभित किया है। आप उदारमना व धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं।

उपाध्यक्ष (महिलाप्रभारी) - डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय - खाचरोद (म.प्र.)

श्रीमती कोकिला भारतीय का जन्म २ अप्रेल १९४८ को थांदला नगर जिला झाबुआ (म. प्र.) में श्री बजेचंदजी भंडारी के यहां हुआ। आपका विवाह प्रख्यात स्वतन्त्रता सेनानी सर्वहारा वर्ग के मसीहा कामरेड भैरव भारतीय के सुपुत्र श्री बाबुलालजी बोहरा एडव्होकेट के साथ हुआ. विवाह पश्चात भी आपका अध्ययन जारी रहा और आपने प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करते हुए एम. ए. पी. एच. डी, एवं एल. एल. बी. की उपाधियां प्राप्त की। नागदा महाविद्यालय में आपने व्याख्याता का कार्य किया। आपने कई शोध पत्रों का लेखन तथा वाचन किया है। आप अ. भा. श्री रा. जै. न. प. की केन्द्रीय सहमहामंत्री पद पर वर्षो तक रहीं। दहेज प्रथा, मृत्युभोज जैसी कुरीतियों के विरूद्ध परिषद के संघर्ष में सक्रिय योगदान दिया। स्थानीय बाल मेला समिति लायंस क्लब आदि संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। वर्तमान में आप भारतीय स्मृति समिति न्यास की अध्यक्ष, केन्द्रीय व प्रान्तीय शासन द्वारा निर्मित 'उपभोक्ता संरक्षण फोरम जिला उज्जैन' शोध अध्येता-विश्व विद्यालय अनुदान आयोग - नई दिल्ली की सदस्या हैं। आपकी कार्य के प्रतिनिष्ठा एवं कर्मठता के फलस्वरूप ही आपको गत जावरा अधिवेशन में परिषद की महिलाविभाग की उपाध्यक्षा निर्वाचित किया गया है। आपको परिषद की ओर से 'परिषद रत्न' से विभूषित किया गया।

आपने सांस्कृतिक क्षेत्र में भी कई कार्यक्रमों का सफल संचालन किया है।

महामंत्री - श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा - मन्दसौर (म. प्र.)

श्री सुरेन्द्र लोढ़ा का जन्म मन्दसौर में ११ अप्रेल १९४५ के दिन हुआ आपके पिता श्री राजमलजी लोढ़ा जैन समाज के अग्रणी समाज सेवी धार्मिक विधिकारक, विद्वान, पत्रकार तथा प्रभावशाली वक्ता हैं. श्री सुरेन्द्र लोढ़ा को जन्म से ही पारिवारिक वातावरण में धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए हैं। आप एम. एस. सी., बी. एड की उपाधि प्राप्त है। और चौदह वर्ष की उम्र से ही अ. भा. श्री रा. जै. न. प. के माध्यम से समाज सेवा से जुड़े हुए है। विभिन्न धार्मिक शिविरों में अध्ययन कर प्राविण्य सूची में प्रथम स्थान व सर्वश्रेष्ठ वक्ता के पुरस्कार प्राप्त किये। सत्रह वर्ष की उम्र में आपको शाश्वत धर्म के सम्पादक मंडल में सम्मिलित किया गया। अठारह वर्ष की उम्र में आपकी प्रथम पुस्तक प्रकाशित हुई। आपने कई शिविरों का सफल संचालन किया है। आपकी शिविर संचालन की क्षमता को कई शिविरों में स्वर्णपदक तथा अभिनन्दन पत्र से सम्मानित किया है। स्थानीय शिक्षण संस्थाओं में भी आप प्राचार्य संरक्षक आदि पदों पर कार्य कर रहे हैं। परिषद द्वारा प्रकाशित राजेन्द्र ज्योति नामक

ग्रंथ के सम्पादक मंडल में भी आप सदस्य थे। आप मन्दसौर जिले के सार्वजनिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में अपना प्रभावपूर्ण स्थान रखते है। पूर्व में आप अ. भा. श्री रा. जैन. प. के केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के पद पर निर्वाचित किये गये थे। गत जावरा अधिवेशन में आपको महामंत्री के पद पर निर्वचित किया गया है। श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. अभिनंदन ग्रंथ के आप प्रधान सम्पादक है। लेखक वक्ता विचारक तथा विनम्र समाज सेवी श्री सुरेन्द्र लोढ़ा वर्तमान में मन्दसौर प्रेस क्लब के अध्यक्ष पद पर है। आप धार्मिक प्रवृति के मिलनसार व्यक्ति है। रात्रिभोजन त्याग, चाय-पान का स्पर्श तक नहीं जैसे नियमों का पिछले २५ वर्षों से निष्ठापूर्वक पालन करते आ रहे है।

सह - महामंत्री - श्री पारसमलजी भगवानजी कोठारी - मद्रास

मूलतः सियाणा निवासी युवा कार्यकर्ता श्री पारसमलजी भगवानजी कोठारी (४३ वर्ष) मद्रास में सफल व्यवसायी के रुप में माने जाते हैं। आपकी अभिरुचि मानव कल्याण तथा धार्मिक शिक्षा उत्थान के प्रति है। आपके विचार प्रगतिशील हैं तथा उदारता के गुण से सम्पन्न हैं। आप जो भी कार्य हाथ में लेते हैं, उसे उत्साह से पूर्ण करने का प्रयत्न करते हैं। निराशा आप में नहीं हैं। पाठशालाओं तथा धार्मिक शिक्षणशिविरों में आप रुचिपूर्वक भाग लेते हैं। गुरुभक्ति का आप में अनुपम संगम हैं।

सहमहामंत्री - श्री नवीनचन्द्रभाई हालचंदजी देसाई - थराद

थराद के शिक्षाशास्त्री के रुप में आपका व्यापक परिचय क्षेत्र है। आप जनता हाईस्कुल के प्राचार्य पद पर हैं। मिलनसार, व्यवहार कुशल, सामाजिक प्रेरणाओं से परिपूर्ण श्री नवीन चंद्रभाई देसाई अच्छे प्रशासक तथा अध्यापक के रुप में उभरे हैं। आपकी समाजिक गतिविधियां विशेष उल्लेखनीय हैं। धर्म के प्रति आस्था समान रुप से आप में प्रगाढ़ है। आपके जीवन का उद्देश्य समाज सेवा के लिये समर्पित रहना है। समाज की परिषद के माध्यम से काफी सेवा करना आपने संकल्प के रुप में ग्रहण किया है। पूरे गुजरात में आपका विशाल प्रशंसक वर्ग है।

सह - महामंत्री - (महिला प्रभारी) श्रीमती कान्ताबहन आंचलिया - रतलाम

इकतालीस वर्षीय श्रीमती कांताबहन आंचलिया विगत पन्द्रह वर्षो से परिषद से जुड़ी हुई है। सन १९८० में आपने परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ जालोर जिले के चालीस ग्रामों का उन्नीस दिनों में दौरा सम्पन्न किया। आपका जन्म २८ जनवरी १९५० को श्री जेठमलजी लुणावत के यहां हुआ। आपको माता श्रीमती मांगीबाई से ही धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए। सत्रह वर्ष की आयु में मेट्रिक उत्तीर्ण की। विवाह के पश्चात भी अध्ययन जारी रखकर आपने बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में आप जैन कन्या माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक के पद पर नियुक्त है। आप धार्मिक पाठशाला में अध्यापन कार्य भी करती रहीं। परिषद की रजतजयंती पर आपको 'परिषद श्रेष्ठ' की उपाधि से विभूषित किया गया। श्रीमती कांताबहन का उद्‌घोष है कि '- मेरा सम्पूर्ण जीवन परिषद के लिए समर्पित है।'

संगठनमंत्री - श्री कांतीलालजी भण्डारी - राजगढ़

श्री कांतिलालजी भंडारी बचपन से ही परिषद में सक्रिय रुप से कार्यरत् है। आप चौदह वर्ष तक निरन्तर परिषद शाखा - राजगढ़ के मंत्री पद पर रहे। निम्बाहेड़ा अधिवेशन में आपको केन्द्रीय कार्यसमिति में सन्मानित किया गया। भिवण्डी अधिवेशन में आप मध्यप्रदेश के प्रचारमंत्री पद पर निर्वाचित हुए। भांडवपुर अधिवेशन में आपको मध्य प्रदेश इकाई का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। दक्षिण भारत सम्मेलन में आपने मालवा का प्रतिनिधित्व किया। आपने केन्द्रीय अध्यक्ष के साथ तीन बार संपूर्ण मालवा का दौरा किया। राजगढ़ स्थित परिषद भवन व्यवस्था समिति के सदस्य, श्री राजेन्द्र बचत योजना राजगढ़ के बारह वर्षो तक सचिव, श्री तीर्थ यात्रा व्यवस्थापिका समिति राजगढ़ के १९८१ से सचिव, सरस्वती शिशु मंदिर राजगढ़ के १९८७ से व्यवस्थापक सचिव, म. प्र. बिजली कर्मचारी संघ राजगढ़ संभाग के १९७८ से अध्यक्ष तथा १९९० से धार वृत्त उपाध्यक्ष पद पर आप हैं। आप कला में स्नातक हैं। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ तथा विद्यार्थी परिषद आपका बचपन से कार्यक्षेत्र रहा हैं। आपातकाल के दौरान आपने 'मीसा' के अन्तर्गत जेलयात्रा की। आप धार्मिक वृत्ति के हैं। २८ वर्ष की आयु से चतुर्थ व्रत आपने धारण कर लिया है तथा सन् १९७३ से आप चौविहार पच्चखाण कर रहे हैं। आप परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री पद पर गत जावरा अधिवेशन में मनोनीत किये गये हैं।

अल्पबचतमंत्री - श्री जवाहरलालजी जैन - अलीराजपुर

जिला झाबुआ (म.प्र.) के अलीराजपुर निवासी - श्री जवाहरलालजी जैन धार्मिक संस्कारों में पले हुए युवा कार्यकर्ता हैं। आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की हैं। आप जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, पूरे उत्साह से उसे पूरा करने में जुट जाते है। आप सफल व्यवसायी हैं। आपके बड़े भाई श्री कुन्दनलालजी काकड़ीवाला परिषद के कई पदों पर केन्द्रीय स्तर तक रहे हैं। श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ के विकास में आपकी विशेष अभिरुचि है। श्री जवाहरलालजी जैन की कार्य करने की स्फूर्ति से परिषद को आपसे कई आशाएँ हैं। श्री राजेन्द्र जैन बचत योजना अलीराजपुर के अध्यक्ष पद पर आप रहे तथा दस वर्षों से उससे जुड़े हुए हैं। समाज की एकता के लिए आप कटिबद्ध है।

मध्यप्रदेश अध्यक्ष - डॉ. सोहनलालजी सुराणा - दलौदा

डॉ. सोहनलालजी सुराणा का स्थान सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में विशिष्ट है। आप कर्तव्य परायण, निष्ठावान तथा कर्मठ समाजसेवी गुरुभक्त हैं। आप दलौदा में श्रीशीतलनाथ जैन मन्दिर तथा गुरुमन्दिर निर्माण हेतु प्रयत्नशील है। आप सम्बन्धित ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं दलौदा पंच पद पर हैं। फतेहगढ़ स्थित जिनमन्दिर की आशातना दूर करने के लिए आपने भरसक प्रयत्न किया। दलौदा में त्रिस्तुतिक समाज को सुसंगठित करने में आपका संपूर्ण योगदान है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी सुराना भी समानरुप से धार्मिक प्रवृत्ति तथा समाजिक अभिरुचिवाली महिला है। डॉ. सुराना अपने व्यवसाय चिकित्सा के माध्यम से भी मानवसेवा में जुटे हुए हैं।

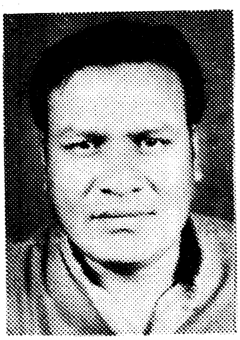

आप परिषद की मध्य प्रदेश ईकाई के अध्यक्ष पद पर गत तीन वर्षों से कार्यरत है। आपकी सक्रियता के कारण ही आपको पुनः इस पद पर गत जावरा अधिवेशन मेन निर्वाचित किया गया है। आपने अध्यक्ष के रुप में मालवा का दौरा भी किया।

राजस्थान - अध्यक्ष - श्री पारसमलजी एच. भंडारी - सूरत

युवा नेता श्री पारसमलजी भंडारी का सियाना जिला जालोर जैन समाज में व्यापक प्रभाव है। आप कांग्रेस इ के माध्यम से राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेते रहे हैं। आपका केन्द्रीय व प्रान्त स्तर के मंत्रियों से निकट सम्पर्क रहा। इस कारण समाज के कार्यों में प्रशासकीय स्तर पर काफी सहयोग मिला आप अच्छे वक्ता तथा कुशल समाजसेवी हैं। मुलतः सियाणा के श्री भंडारीजी परिषद से वर्षों से जुड़े हुए हैं। आप श्री भांडवपुर तीर्थ अधिवेशन में राजस्थान

इकाई के मंत्री मनोनीत हुए थे । जावरा अधिवेशन में आपको प्रदेश अध्यक्ष पद पर सुशोभित किया गया । वर्तमान में आप सूरत में व्यवसायरत हैं, आप हंसमुख, व्यवहारकुशल तथा गुरुभक्त युवा हैं ।

गुजरात अध्यक्ष - श्री चन्द्रकांतभाई वोरा - (थराद) - बम्बई

श्री चन्द्रकांतभाई भूदरभाई वोरा का जन्म थराद में हुआ । आप वर्तमान में बम्बई में व्यवसाय रत हैं । आप थराद त्रिस्तुतिक जैन समाज तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के कई पदों पर कार्यरत हैं तथा रह चुके हैं । श्रीमद् राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट एवं जन कल्याण ट्रस्ट के भी ट्रस्टी हैं । आप बम्बई त्रिस्तुतिक जैन समाज के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं । समाज की गतिविधियों में उल्लास के साथ भाग लेना आपकी अभिरुचि है । आपके पिता श्री भूदरभाई भी धर्मनिष्ठ गुरुभक्त थे । उन्हीं के पदचिन्हों पर आप सामाजिक, उपलब्धियों के लिये कर्तव्यशील हैं । श्री चंद्रकांतभाई अपने विचारों में दृढ़ तथा चारित्र में उन्नत हैं । परिषद की गुजरात इकाई के अध्यक्ष पद पर आपको मनोनीत किया गया हैं । निस्संदेह श्री चंद्रकांत भाई का जीवन समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं ।

उत्तर प्रदेश अध्यक्ष - श्री कन्हैयालालजी बांठिया - कानपुर

अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा के अच्छे लेखक श्री कन्हैयालालजी बांठिया समाज में वर्षो से कार्य कुशलता का परिचय दे रहे हैं । आपका जन्म मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले के लालगढ़ में हुआ जहां आपके परिवार ने एक लघु चैत्यालय का निर्माण भी करवाया आपने इन्दौर से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की व्यावसायिक कारणों से आपने अफ्रिका तथा यूरोप के देशों व ब्रिटेन की यात्रा भी की । आप शांति तथा ज्ञान के लिये कार्य करना चाहते हैं । आप जैनाचार्य स्व. श्रीमद् विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के सम्पर्क में आए तता आपने कई धार्मिक ग्रंथों का अद्ययन किया । वर्तमान में आप जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज से प्रभावित हैं । इन दिनों आपका निवास कानपुर (उ.प्र.) में हैं, जहां आप काफी कुछ संगठनात्मक कार्य करने के लिये उत्सुक हैं ।

अधिवेशन को सफल बनाने में जुटे कर्मवीर

अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा जावरा द्वारा परिषद के अ.भा. अधिवेशन को सफल बनाने के लिए निम्नानुसार समितियों का गठन किया गया -

१) निमंत्रण-पत्र वितरण समिति

श्री दिलीपजी चोरडीया - **संयोजक**
श्री श्यामलालजी जैन - **सहसंयोजक**
श्री दिनेश दसेड़ा - **सदस्य**
श्री निलेश दसेड़ा - **सदस्य**
श्री संजय जैन (राजेन्द्र वॉच) - **सदस्य**
श्री प्रदीप दसेड़ा - **सदस्य**
श्री सुरेश तांतेड़ - **सदस्य**
श्री रविन्द्र कर्नावट - **सदस्य**
श्री महेन्द्र सुराणा
श्री शैलेष कांठेड़ - **सदस्य**
श्री सन्दीप जागीरदार - **सदस्य**
श्री अशोक संचेती - **सदस्य**
श्री दिलीपजी दसेड़ा - **सदस्य**
श्री अनोखी नाहर - **सदस्य**
श्री मनोज रुणवाल - **सदस्य**

२) पंजीयन समिति

श्री सुरेश सुराणा - **संयोजक**
प्रदीप मेहता - **सहसंयोजक**
श्री रमणीक मेहता - **सदस्य**
श्री श्रेणीकजी दसेड़ा - **सदस्य**
श्री राजमलजी सगरावत - **सदस्य**
श्री पारसी चपड़ोद - **सदस्य**
श्री श्रेणीक धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री राजेश जागीरदार - **सदस्य**
श्री हंसराजजी चोरड़ीया - **सदस्य**
श्री सुरेशजी धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री सुनील चोरड़िया - **सदस्य**
श्री राजेन्द्रजी मेहता (चोपटी) - **सदस्य**
श्री सुरेन्द्रजी पोखरना - **सदस्य**
श्री बाबुलालजी रुणवाल - **सदस्य**
श्री श्रीपालजी ओस्तवाल - **सदस्य**

३) नगर सजावट एवं साज सज्जा समिति

श्री विजयजी आंचलिया - **संयोजक**
श्री सुभाषजी धाड़ीवाल - **सहसंयोजक**
श्री पारसजी दसेड़ा - **सदस्य**
श्री पारसजी सुराणा - **सदस्य**
श्री शांतिलालजी रुणवाल - **सदस्य**
श्री संजय चोरड़िया - **सदस्य**
श्री अशोक चोरड़िया - **सदस्य**
श्री यशवन्त चोरड़िया - **सदस्य**
श्री महेन्द्र कोलन - **सदस्य**
श्री रमणीक मेहता - **सदस्य**
श्री नगीन सकलेचा - **सदस्य**
श्री समीरमलजी बरमेचा - **सदस्य**
श्री सुनिल छाजेड़ - **सदस्य**
श्री तेजमलजी चण्डालिया - **सदस्य**
श्री निर्मलकुमार चत्तर - **सदस्य**

४) प्रचार - प्रसार समिति

श्री मदनजी धारीवाल -**संयोजक**
श्री अभय मेहता -**सहसंयोजक**
श्री प्रकाशजी कांठेड़ - **सदस्य**
श्री अशोक धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री शांतिलालजी धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री अभय ललवानी -' **सदस्य**
श्री अरुण ओस्तवाल - **सदस्य**
श्री शैलेष धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री अशोकजी धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री सुनिल धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री अशोकजी कावड़िया - **सदस्य**
श्री वर्धमानजी - **सदस्य**
श्री जितेन्द्र कोठारी - **सदस्य**

५) मंच एवं पाण्डाल व्यवस्था समिति

श्री हस्ती सी. कर्नावट - **संयोजक**
श्री कनकमलजी सेठिया - **सह संयोजक**
श्री अजित पिपाड़ा - **सदस्य**
श्री मॉंगीलालजी चोरड़िया - **सदस्य**
श्री महेन्द्र सुराणा - **सदस्य**
श्री पुखराज धाड़ीवाल (रद्दी सेठ) - **सदस्य**
श्री मानमल लुक्कड़ - **सदस्य**
श्री सुरेद्र कोलन - **सदस्य**
श्री अशोक कटारिया - **सदस्य**
श्री माणकलालजी चत्तर - **सदस्य**
श्री सुभाषजी चोपड़ा - **सदस्य**
श्री राजेन्द्र मेहता - **सदस्य**
श्री गजेंद्र चोरड़िया - **सदस्य**
श्री शिव सेठिया - **सदस्य**
श्री हिम्मतजी धाड़ीवाल - **सदस्य**

६) स्वागत समिति

श्री डॉ. सुरेश मेहता - **संयोजक**
श्री योगेन्द्रजी मेहता - **सह संयोजक**
श्री इन्दरमलजी दसेड़ा **(सदस्य)**
श्री समरथमलजी दसेड़ा - **सदस्य**
श्री फकीरचंदजी किमती - **सदस्य**
श्री विजयकुमारजी ऑर्चलिया - **सदस्य**
श्री रमेशजी धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री सरदारमलजी धाड़ीवाल - **सदस्य**
श्री हिम्मत धाड़ीवाल (चौपाटी) - **सदस्य**
श्री बंसतीलाल टुकड़िया - **सदस्य**
श्री शांतिलालजी सुराणा - **सदस्य**
श्री राजेशकुमारजी बरेड़ा - **सदस्य**
श्री आनन्दीलालजी चोरड़िया - **सदस्य**

७) बैठक व्यवस्था समिति

श्री अभयजी सुराणा - **संयोजक**
श्री सुनील हरण - **सह संयोजक**
श्री सन्दीप किमती **सदस्य**
श्री विजय तांतेड़ - **सदस्य**
श्री मनोज मेहता - **सदस्य**
श्री संजय सगरावत - **सदस्य**
श्री राधेश्यामजी सुराणा - **सदस्य**
श्री यतीद्रजी सखलेच - **सदस्य**
श्री अजय करनावट - **सदस्य**
श्री अनील दसेड़ा - **सदस्य**
श्री दिनेश दसेड़ा (कोठीबाजार) - **सदस्य**
श्री बाबुलालजी चोरड़िया - **सदस्य**
श्री प्रदीप सिसोदिया - **सदस्य**

श्री सुजानमलजी दसेड़ा

श्री भीकमचंदजी चोपड़ा

श्री प्रकाशचंद्रजी चोरड़िया

८) भोजन व्यवस्था समिति

श्री विजय दसेड़ा - **संयोजक**

श्री सुरेश चोरड़िया - **सह संयोजक**

श्री मिश्रामलजी चपड़ोद - **सदस्य**

श्री समीरमलजी ऑचलिया

• श्री रमेशचंद्रजी मारवाड़ी

श्री अरुण मेहता

श्री मदनलालजी धाड़ीवाल (रौजाना)

श्री अशोकजी सुराणा

श्री कान्तिलालजी (बोदीनावाला)

श्री रमेशजी चोपड़ा

श्री माँगीलालजी चत्तर

श्री अजीत कोलन

श्री शैलेन्द्र कर्नावट

श्री पुखराज कावडिया

श्री अशोकजी नान्देचा

श्री प्रकाशजी चत्तर

श्री सुरेशजी चत्तर

श्री ललित मेहता

श्री पारस सकलेचा

९) चल समारोह व्यवस्था समिति

श्री दिलीपजी धाड़ीवाल - **संयोजक**

श्री संजय कांठेड़ - **सह संयोजक**

श्री पारसजी चपड़ोद - **सदस्य**

श्री बाबुलालजी मेहता

श्री राजकुमार मारवाड़ी

श्री नरेशजी मारवाड़ी

श्री अशोकजी मारवाड़ी

श्री अनिल धाड़ीवाल

श्री पंकज काँठेड़

श्री कैलाशजी चोपड़ा

श्री सुरेश पगारिया

श्री राकेश चोरड़िया

श्री नगीन सकलेचा

श्री शांतिलाल सुराना (शुक्रवारिया)

श्री राजेन्द्र ऑचलिया

श्री धर्मेंद्र कोलन

१०) आवास व्यवस्था समिति

श्री राजेश मेहता - **संयोजक**

श्री भँवरलाजी सुराणा - **संयोजक**

श्री प्रकाशजी मारवाड़ी - **सदस्य**

श्री श्रीपाल दसेड़ा - **सदस्य**

श्री प्रकाशजी संचेती - **सदस्य**

श्री दिलीप कटारिया - **सदस्य**

श्री पारसजी सकलेचा - **सदस्य**

श्री प्रदीप दसेड़ा - **सदस्य**

श्री अशोकजी चोरड़िया - **सदस्य**

श्री रामचंद्रजी सुराणा - **सदस्य**

श्री प्रकाशचंदजी चत्तर - **सदस्य**

श्री अशोक बोरदिया - **सदस्य**

श्री निर्मल जैन - **सदस्य**

श्री संतोष चोरड़िया - **सदस्य**

श्री पारसजी विनायका - **सदस्य**

श्री राजेश रुणवाल - **सदस्य**

श्री नवीनजी कोठारी - **सदस्य**

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद राष्ट्रीय कार्यसमिति

(परिषद के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्यों के नाम एवं पते)

श्री सेवंतीलाल एम. मोरखिया
अध्यक्ष - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
द्वारा - रसीकलाल कान्तिलाल एन्ड कम्पनी
१४५, कीका स्ट्रीट / गुलालवाड़ी
बम्बई - ४०० ००४.

श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप
वरिष्ठ उपाध्यक्ष - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
विशाजी मेंशन
महात्मा गांधी मार्ग,
रतलाम - ४५७ ००१ (म.प्र.)

Shri Mithalalji Hirani
Vice - Precident,
A.B.Shri. R.J.N.P.
C/o. Shri M.G. Corporation
3 - Devraj Mudli Street,
1 st Floor,
Madras - 600 003. (T.N.)

डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय
उपाध्यक्ष (महिलाप्रभार) - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
४७, सागरमल मार्ग **खाचरोद** - ४५६ २२४.
जि. उज्जैन (म.प्र.)

श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा
महामंत्री - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
मन्दसौर (ण.प्र.) ४५८००१.

Shri Parasmalji Bhagawanji Kothari
Joint Secretary, A.B.Shri. R.J.N.P.
43, Strotten Muthia Mudali St.
Frist Floor,
MADRAS - 600 079. (T.N.)

श्री नवीनचन्द्रभाई हालचंदजी देसाई
सहा. महामंत्री - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
देसाई शेरी, **थराद** - जिला - बनासकांठा
(उ.गुजरात) ३८५ ५६५.

श्रीमती कान्ताबहन घेवरचंदजी आंचलिया
सहा. महामंत्री (महिला प्रभार)-
अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
४३, साहू बावड़ी - **रतलाम** (म.प्र.) ४५७००१

श्री प्रकाशचंदजी कांठेड़
कोषाध्यक्ष - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
७८, बजाजखाना **जावरा**
जिला - रतलाम (म.प्र.) ४५७ २२६.

श्री कांतिलालजी भंडारी
संगठन मंत्री - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
C/o. भंडारी टेन्ट हाऊस,
बस स्टॅन्ड
राजगढ़ - जिला धार (म.प्र.) - ४५४ ११६

श्री जवाहरलालजी जैन
अल्पबचत मंत्री - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
२६२, महात्मा गांधी मार्ग,
अलीराजपुर जि. झाबुआ (म.प्र.) ४५७८८७

डॉ. श्री सोहनलालजी सुराणा
अध्यक्ष (म.प्र. ईकाई) - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
चौपाटी, **दलौदा स्टेशन**,
जिला - मंदसौर (म. प्र.)

श्री पारसमलजी भंडारी
अध्यक्ष (राजस्थान) - अ.भा.श्री रा.जै.न.प.
१) C/o. श्री पारसमलजी हेमराजजी भंडारी
सियाणा जिला - जालोर (राज.)
२) १६, गुरुदर्शन अपार्टमेन्ट,
पुरानी अदालत के पास,
गोपीपुरा, **सुरत**
(गुजरात) ३९५ ००१.

श्री चंद्रकांत भाई वोरा
अध्यक्ष (गुजरात) - अ. भा. श्री रा. जै. न. प.
C/o. फुलचंद ॲन्ड सेटीयाॲन्ड कं.
६७/७१ - धनजी स्ट्रीट,
बम्बई - ४०००० ३.

श्री कन्हैयालालजी बाठिया
अध्यक्ष (उ.प्र.) - अ. भा. श्री रा. जै. न. प.
८१/१३ आचार्यनगर
कानपुर (उ.प्र.).

Shri Bhanmalji Jain
President (W. Bengal)
A.B. Shri. R.J.N.P.
C/o. R.K. Import Co.
168, Synagogue Street
CALCUTTA - 70001 (W.B.)

Shri Ambalalji Indermalji Jain
Precident (South India)
A.B. Shri. R.J.N.P.
C/o. Vishal Agencies
Main Raod,
PEDDAPURAM 533 437. (A.P.)

श्री सौभाग्यमलजी सेठिया एडव्होकेट
पदेन सदस्य - अ. भा. श्री रा. जै. न. प.
निम्बाहेड़ा जिला - चित्तौड़ (राज.) ३१२ ६०१.

श्री भंवरलालजी छाजेड़
पदेन सदस्य - अ. भा. श्री रा. जै. न. प.
शास्त्रीनगर कालोनी - **नीमच**
जिला मन्दसौर ४५८४४१ (म.प्र.)

सदस्य मध्य प्रदेश

श्री अनिल कुमारजी जैन
२११, महात्मा गांधी मार्ग,
अलिराजपुर
जि. झाबुआ (म.प्र.) ४५७८८७

श्री ज्ञानचंदजी जैन,
मु. पो. **जोबट**
जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री सुरेश समीरजी,
मु.पो. **रानापुर**
जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री मनोहरलालजी शांतिलालजी भण्डारी,
मु.पो. **झाबुआ** (म.प्र.)

श्री प्रदिपकुमार महेन्द्रसिंहजी जैन,
मु. पो. **मेघनगर**
जि.- झाबुआ (म.प्र.)

श्री उमेशकुमारजी पिचा
C/o. श्री बाबुलालजी नानालालजी पिचा
मु. पो. **थांदला**
जिला - झाबुआ (म. प्र)

श्री प्रकाशचंदजी लुणावत जैन,
मु. पो. **बामानिया**
जि.- झाबुआ (म.प्र.)

श्री प्रकाशचंदजी लुणावत जैन,
मु. पो. **पेटलावद**
जि. झाबुआ (म. प्र.)

श्री प्रकाशचंदजी चौधरी,
तिलकमार्ग,
कुक्षी, जि.- धार (म.प्र.) ४५४३३१

श्री अमृतलालजी मगनलालजी जैन,
मु. पो. **बाग**
जिला - धार (म.प्र.)

श्री अशोककुमारजी श्री श्रीमाल,
बस स्टेण्ड, **टाण्डा**,
जि.- धार (म.प्र.)

श्री शांतिलालजी जैन केमिस्ट,
रिंगनोद
जिला - धार (म.प्र.)

श्री बाबुलालजी रुनवाल,
रुनवाल मेडिकल स्टोअर्स
रतलामी गेट,
जावरा ४५७ २२६.

श्री नगीनजी सकलेचा पत्रकार
लालागली
जावरा (म.प्र.) ४५६ २२४
श्री भिकमचंदजी आजाद सम्पादक लोक प्रमुख
९५, बजाजखाना **जावरा** -४५७२२६
श्री धरमचंदजी नांदेचा,
नांदेचा पानभंडार सदर बाजार,
खाचरौद जि. उज्जैन ४५६ २२४
श्री गजेन्द्र कुमारजी हिंगड
शाह चिमनलालजी चंपालालजी
हिंगड़ बस स्टॅंड
मंदसौर (म.प्र.) ४५८ ००१
श्री अनिल कुमारजी सुराना, पत्रकार
दलौदा जि. मंदसौर (म.प्र.)
श्री जिनेंद्र कुमारजी नांदेचा
पिपलौदा जि. रतलाम (म.प्र.)
श्री बाबुलालजी बोहरा
बोहरा ऑटो पार्टस,
१७० जवाहर मार्ग
नागदा जंक्शन
जि.- उज्जैन (म.प्र.) ४५६ ३३५
श्री प्रतापजी मेहता एडवोकेट,
छोटा सराफा, **उज्जैन** (म.प्र.) ४५६ ००६
श्री नरेन्द्र कुमार धडिया, पत्रकार,
महिदपुर सिटी जि.- उज्जैन (म.प्र.)
श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन ठेकेदार
मु.पो. **खवासा** जि.- झाबुआ (म.प्र.)
श्री राजमलजी डुंगरवाल,
राजेन्द्र चिप्स उद्योग,
दशहरा मैदान **नीमच** (म.प्र.) ४५८ ४४१
श्री ज्ञानचंदजी पोरवाल,
पोरवाल स्टेशनरी स्टोअर्स
नीमच सिटी (म.प्र.)
जि.-मंदसौर ४५८ ४४१

श्री चंदनमलजी गरेचा किराना व्यापारी
नारायणगढ़ जिला - मंदसौर (म.प्र.)
श्री प्रकाशचंदजी छाजेड़
छाजेड़ वस्त्रालय
मु.पो. **पारा** जि.झाबुआ (म.प्र.)
श्री विमलचंदजी नाहर
मु.पो. **दसई** जिला - धार (म.प्र.)
श्री शांतिलालजी गिरिया
मु.पो. **भाटपचलाना** जि.उज्जेन (म.प्र.)
श्री एस.के. जैन
१५, बीमानगर कालोनी
पालासिया **इंदौर** (म.प्र.)

सदस्य - राजस्थान

श्री भंवरलालजी विजयराजजी मुथा
C\O. विजय इंडस्ट्रीज
सिंधी केम्प बस स्टेण्ड के पास
जयपुर (राजस्थान)
श्री दलीचंदजी भूरमलजी भण्डारी
मु.पो. **मेंगलवा** जि.- जालौर (राज.)
श्री सुमेरमलजी नाहर
माघ कालोनी मु.पो. **भिनमाल**
जि.- जालौर (राज.)
श्री भानमलजी हिंमताजी
मु.पो. **सांथु** जि.- जालौर (राज.)
श्री हीराचंदजी चैलमलजी बागरा वाला
द्वारा श्री जुगराजजी चौधरी तपावास
मु.पो. **जालौर** (राज.)
श्री सुखनराजजी पुखराजजी
मु.पो. **पावा** जि.- पाली (राज.)
श्री मोहनलालजी **भट्टारक**
द्वारा श्री शेषमलजी धुलाजी
मु.पो. **शिवगंज** जिला सिरोही - (राज.)
श्री शेषमलजी जैन,
नया **जोगापुरा** जि.- सिरोही (राज.)

श्री अचलचंदजी जैन
गांधी मुथों का वास
सायला जि.- जालोर (राज.) पो. जालौर
श्री सुमेरचंदजी प्रभुदयालजी
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भवन,
नीमगेट, **भरतपुर** (राज.)
श्री ज्ञानचंदजी राजमलजी कर्नावट
मु. पो. **मदनगंज** - किशनगढ (राज)
श्री वाक्तावरमलजी
मु. पो. **पांथेडी,** जि.- जालौर (राज.)
श्री शांतिलालजी चुन्नीलालजी जैन
मु. पो. **आकोली** जि.- जालौर (राज.)
श्री हीराचंदजी मालचंदजी
मु. पो. **राणी** जिला - पाली (राज.)
श्री गौतमकुमारजी बागरेचा
नाकोडा पेकिंग्ज ११६ नीम्बड़ी स्ट्रीट,
बालोतरा जि.- बाडमेर (राज.)
श्री कन्हैयालालजी सेठिया,
रतलाम रोड **कुशलगढ़**, जि.- बांसवाडा (राज.)
श्री विद्यार्थीचंदजी भण्डारी,
द्वारा - कैलाशचंद्रजी भण्डारी
शिववाडी मोती चौक
जोधपुर (राज.) - ३४२००२.

सदस्य - महाराष्ट्र

श्री जे.के. संघवी.
द्वारा - कुंदनमलजी भूताजी एण्ड कं.
जामली नाका **थाने** (महाराष्ट) ४०० ६०१.
श्री अनोखीललजी नाहर,
सम्राट ज्वैलर्स
३७, किर्तिकर मार्केट **दादर, (W) बंबई** २८
श्री निहालचंदजी जैन
द्वारा शाह तिलोकचंद मायाचंद एण्ड कं.
११६, गुलालवाडी किका स्ट्रीट,
बम्बई - ४०० ००४.
श्री सुखराजजी चमनाजी कबदी
द्वारा गोल्डन प्लास्टिक
७४, तीसरा भोईवाडा **बम्बई** - ४०० ००४.
श्री अम्बालालजी जैन
मु.पो. **भिवण्डी** जि. थाने महाराष्ट्र ४२१३०२
श्री बालचंदजी विजयराजजी
मु. पु. **भिवण्डी** जि. थाने (महाराष्ट्र) ४२१३०२
श्री चंदनमलजी मिश्रीमलजी,
चंदन स्टील हाऊस,
७८४ शुक्रवार पेठ **पूना** ४११ ००२ (महाराष्ट्र).
जयंतीभाई वोरा
द्वारा सर्वोदय प्रिंटिंग प्रेस शिवाजी चौक
कल्याण जि. थाने महाराष्ट्र ४२१३०१.
श्री **दूद्**मलजी लालचंदजी माण्डोत
द्वारा मंगल आर्ट
तीसरा भोईवाड़ा ५३, दोषी बिल्डिग
बंबई ४००००४.
श्री सोहनराज जी चंदनमलजी
C/o. चुन्नीलालजी लालचंद एण्ड कं.
२४१, शनिवार पेठ **कराड़**
जिला सतारा (महाराष्ट्र)
श्री मोहनलालजी हस्तीमलजी जैन,
दीपक टेक्सटाईल्स
एस. व्ही. रोड़
जोगेश्वरी (वेस्ट) **बंबई** - ४०० १०२.
श्री नेमीचंदजी झुमरमलजी जैन
C/o. चम्पालाल एण्ड ब्रदर्स
बाजार पेठ तीन बत्ती नाका,
भिवण्डी जि. थाने महाराष्ट्र

सदस्य - दक्षिण भारत

Shree Bhanwarlalji Kataria
C/o. Milan Distrubuters,
Shriram Market -
Banglore
(Kearnataka) - 560053.

Shree Ghisulalji Jain
C/o. Kantilal & Bros.
37-6-15 Tilak Street,
Kakinanda (A.P.)

Shree Hirachand Kanaji
Lalaji Ramesh Kumar
Tobaco Merchenct
Volkat Dodulane
GUNTER - 3 (A.P).

Shree Aothmalji Traders
Shanker Market
Cheek Petha,
Banglore (Karnataka) 560 052

Shree Chatraji Chatarmalji,
Premaji & Co.
215, Nagarth Petha,
Banglore - 560002. (Karnataka) - 52

Shree Mangilalji Ramani
C/o. Shantilal Jewelars, Chinna Bazar
(Nellore)

Shree Parasmalji Jethamalji
C/o. Sunlight Electricals,
67/3 Narayan Muddli Street,
Madras Pin 600 0079 (Tamilnadu)

Shree Hastimalji Dharmaji
Kashee Chatti Lane
Madras (Tamilnadu) 60 00 01

Shree Kapoor chandji Pratapji
C/o. Kapoorchand & Co.
28 A Kashee Chatti Lane,
Madras, 600001. (Tamilnadu)

Shree O.C. Jain
2/4 Pillppa Lane
Nagrarath Peth -
Banglore - 560002.

परामर्शदाता

श्री जैनरत्न सेठ गगलदासभाई,
हालचंदभाई संघवी,
६३, नगरसेठ मार्केट,
रतनपोल अहमदाबाद,
(गुजरात) ३८०००१.

श्री सोमतमलजी सावलचंदजी दोषी
सदर बाजार **भिनमाल**
जि. जालोर. (राज.)

पधारिये ! अवश्य पधारिये !!

बाग (जिला-धार म. प्र.) नगरे

निश्रा – जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी आदि ठाणा

प्रथम प्रवेश मुहूर्त – मगसर सुदि १० सोमवार दिनांक १६–१२–१९९१
द्वितीय प्रवेश मुहूर्त – मगसर सुदि १२ बुधवार दिनांक १८–१२–१९९१

संपर्क सूत्र
संघवी रूपचंद मोतीलालजी
पोस्ट – बाग (जिला – धार)
(मध्यप्रदेश)

निवेदक
शा. केसरीमल, रुपचंद, चांदमल
राजमल पोसीत्रा परिवार

समाचार दर्शन

आचार्य श्री की पावन निश्रा में नागदाजंक्शन से नागेश्वर छ 'रि' पालित संघ

नागदाजंक्शन :– जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में शा हस्तीमल धीरजमल नान्देचा और परिवार की ओर से नागदा जंक्शन से नागेश्वर छ 'रि' पालित संघ का प्रस्थान २७ नवम्बर को दोपहर हुआ। ३० तारीख को संघ नागेश्वर पहुंचा जहाँ तीर्थमाल का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आचार्यश्री मुनिमंडलसह जावरा में यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर विहार करते हुए पीपलोदा, उबरवाडा, बोरखेडा, सरसी, वडावदा होते हुए २५ तारीख को खाचरौद पधारे। वहाँ उजमणा करवा कर २७ तारीख को प्रातः नागदा जंक्शन पधारे।

आचार्यश्री के ५ डिसम्बर तक क्रमशः पुनः जावरा पधारने की संभावना है।

अ. भा. त्रिस्तुतिक संघ अधिवेशन एवं ग्रंथ विमोचन

महामंत्री श्री भँवरलाल छाजेड ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि अ. भा. सौधर्मबृहत्तपागच्छ त्रिस्तुतिक जैन संघ का अधिवेशन जावरा (म. प्र.) में आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी आदि मुनि मंडल की निश्रा एवं जैन रत्न, संघ अध्यक्ष श्री गगलभाई हालचंद संघवी की अध्यक्षता में शनिवार ७ दिसम्बर को होने जा रहा है।

रविवार ८ दिसम्बर को भारत के उपराष्ट्रपति महामहीम श्री. शंकरदयाल शर्मा के शुभ हस्ते अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा आचार्य श्री के पचासवें वर्ष के उपलक्ष में प्रकाशित 'श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन किया जायेगा। इस अवसर पर प्रदेश मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा आदि कई गणमान्य व्यक्ति पधारेंगे।

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की मन्दसौर जिला इकाई का गठन

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की मंदसौर रतलाम इकाई का गठन जावरा में दिनांक १० नवम्बर १९९१ को साहित्य मनीषी, मधुर प्रवचनकार, परम पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में एवं सौधर्म तपागच्छिय त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री. भँवरलाल छाजेड़, परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री. सुरेन्द्र लोढ़ा प्रदेश इकाई के अध्यक्ष डा. सोहनलाल सुराणा की उपस्थिती में मन्दसौर तथा रतलाम जिले की पृथक पृथक कार्य कारिणी सर्वानुमति से घोषित की गई।

मन्दसौर जिला इकाई की कार्य कारिणी में सर्वश्री ज्ञानचंद डूँगरवाल (जमुनिया कला) अध्यक्ष घोषित किये गये। उपाध्यक्ष – श्री बाबूलाल जैन (धुंधडका), महामंत्री –

श्री. पारसमल सेठिया (नीमच) उपमंत्री – श्री चतरसिंह पितलिया (नयागॉव) कोषाध्यक्ष – श्री. नरेन्द्र कुमार खाबिया (मन्दसौर) शिक्षामंत्री – श्री. महेन्द्रकुमार जैन (धुंधड़का) प्रचारमंत्री – श्री. रिखबचंद लोढ़ा (निम्बाहेड़ा) संगठन मंत्री – श्री. मोहनलाल जैन कचनारा महिला प्रतिनिधी – श्रीमती कमला छाजेड़ नीमच तथा श्रीमती तारादेवी सुराणा दलौदा को मनोनित किया गया प्रत्येक शाखा परिषद के अध्यक्षगण कार्यकारिणी के सदस्य रहेंगे।

जिले के राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं प्रदेश इकाई के पदाधिकारी व सदस्य गण जिला परिषद के सम्मानित सदस्य रहेंगे परिषद के मार्गदर्शक परम पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. ने परिषद शाखाओं से उपस्थित पदाधिकारी गणों व सदस्यों को मार्गदर्शन देते हुए अपने उद्‌बोधन में मुख्य रूप से तीन बातें कही –

१) प्रत्येक शाखा परिषद में धार्मिक पाठशाला अनिवार्य रुप से शुरु करे तथा नियमित चलायें।

२) प्रत्येक शाखा परिषद एक स्वयं सेवक दल का गठन करे जो अनुशासित एवं सेवाभाव की भावना से अग्रसर हो।

३) प्रत्येक शाखा परिषद एक शाकाहार प्रकोष्ठ का गठन कर शाकाहारी जीवन कितना श्रेयसकर है का प्रचार प्रसार करें।

श्री. भँवरलाल छाजेड़, श्री. सुरेन्द्र लोढ़ा श्री. डा. सोहनलाल सुराणा ने भी प्रेरक सम्बोधन प्रस्तुत किया। मन्दसौर, नीमच, नयागॉव, जमुनियाकला, दलौदा, कचनारा, धुंधड़का, निम्बाहेड़ा आदि शाखा परिषदो ने भाग लिया।

प्रेषक – पारसमल सेठिया (नीमच)

शाश्वत धर्म को भेंट

१०१/– आहोर निवासी शा. छगनराजजी अमृतलालजी बुटा – गुन्टुर की ओर से श्रीमान एवं श्रीमती अमृतलालजी बुटा की मासक्षमण की तपस्या निमित्त सप्रेम भेंट।

५१/– श्री. जैन श्वे. संघ कवर्धा की ओर से पू. मुनिराज श्री. सतीशमुनिजी की प्रेरणा से सप्रेम भेंट।

६००/– जालोर श्री संघ की ओर से पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा की प्रेरणा एवं निश्रा में सम्पन्न कन्या धार्मिक शिबिर के समापन समारोह पर सप्रेम भेंट।

३००/– गुरुणीजी श्री हेतश्रीजी की शिष्या साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी को पद प्रदान महोत्सव के उपलक्ष में श्री राजस्थान जैन संघ – कोयम्बतूर द्वारा सप्रेम भेंट।

परिषद अध्यक्ष श्री मोरखिया, महामंत्री - श्री लोढा, उपाध्यक्ष - श्री कश्यप आदि पदाधिकारियों का मंदसौर एवं रतलाम जिले में दौरा दलौदा एंव रिंगनोद में शिलान्यास

(महामंत्री कार्यालय द्वारा)

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने मध्यप्रदेश के मंदसौर तथा रतलाम जिले की परिषद शाखाओं का दो दिवसीय दौरा कार्यक्रम श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप के नेतृत्व में सम्पन्न किया। आपके साथ अ.भा.श्री सौधर्मवृहत्यागच्छीय श्वे. त्रिस्तुतिक संघ के महामंत्री - श्री भंवरलालजी छाजेड़.उपाध्यक्ष - श्रीमती डॉ.कोकिलाबहन भारतीय, महामंत्री - श्री सुरेन्द्रजी लोढा,कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी कांटेड़ भी थे ।राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य बम्बई निवासी श्री वाड़ीलालभाई गगलभाई संघवी तथा श्री चन्दूभाई वोरा विशेष अतिथियों के रूप में साथ थे। परिषद की म.प्र. इकाई के अध्यक्ष - डॉ.सोहनलालजी सुराना, सहमंत्री - श्री महावीरकुमारजी जैन, पूर्व केन्द्रीय प्रचारमंत्री - श्री भीखमचंदजी जैन, श्री सरदारमलजी संघवी, अ.भा.महिला समिति की सदस्याएं - श्रीमती पारसमणिजी मारवाडी तथा श्रीमती तारादेवीजी सुराना ने भी दौरे में भ्रमण किया। दो दिन में लगभग परिषद की दस शाखाओं कार्यक्रमों के में भाग लिया, कार्यकर्ताओं से सम्पर्क किया , पाठशालाओं का निरीक्षण किया एवं दलौदा व रिंगनोद में आयोजित शिलान्यास समारोह में मुहुर्त किया।

केन्द्रिय अध्यक्ष - श्री सेवंतीलालभाई मोरिखिया ने अपना दौरा कार्यक्रम २२ अक्टुबर १९९१ को जावरा में विराजमान परिषदप्राण पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज तथा मुनिमण्डल से आर्शीवाद प्राप्त कर प्रारंभ किया। यहां से आपने मंदसौर में विराजमान साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी, साध्वी श्री दर्शकलाश्रीजी तथा साध्वीश्री जीवनकलाश्रीजी के दर्शन किए तथा आप निम्बाहेडा के लिए रवाना हो गए। मंदसौर में श्री सुरेन्द्रजी लोढा तथा नीमच में श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने अपने निवास स्थानों पर सभी का स्वागत किया। निम्बाहेड़ा पहुंचते ही नगर के बाहर से बैंड-बाजों के साथ भव्य जुलूस निकाला गया। श्री सेवंतीभाई मोरखिया तथा श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप का नगर में स्थान-स्थान पर पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया। जुलूस श्री राजेन्द्र पौषधशाला में आकर एक स्वागत समारोह में परिणत हो गया। पाठशाला की बालिकाओं ने प्रार्थना की। गुरुदेवश्री के चित्र के सन्मुख दीप प्रज्जवलन श्री मोरखियाजी ने तथा माल्यार्पण श्री कश्यपजी ने किया। श्री मोरखियाजी, श्री कश्यपजी, तथा श्री वाड़ीभाई संघवी को साफे बांधकर सन्मानित किया गया। सभी अतिथियों का मालाओं से स्वागत किया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन श्री चांदमलजी वीराणी ने किया। उपरांत श्री मोरखियाजी को परिषद के स्थानीय अध्यक्ष - श्री राजमलजी बडारा ने, श्री कश्यपजी को श्री मनोहरलालजी विराणी ने, श्री वाड़ीभाई संघवी को श्री रतनसिंहजी पारख ने तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा को श्री सज्जनसिंहजी लोढा ने अभिनन्दन पत्र भेंट किए। श्री वडाडाजी ने स्वागत भाषण दिया। पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेट किए गए। श्री सौभाग्यमलजी सेठिया, श्री सज्जनसिंहजी लोढा तथा श्री

मनोहरलालजी वीराणी ने भाषण दिए। पाठशाला के छात्र-छात्राओं को श्री मोरखियाजी ने पारितोषिक तथा प्रमाण-पत्र वितरित किए । श्री कश्यपजी ने कहा कि समारोह अभिनंदनीय है। कार्यकर्ताओं को धार्मिक संस्थाओं में कार्य करने के लिए आगे आना चाहिए। समाजशिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति महत्वपूर्ण है। डॉ. कोकिलाजी भारतीय ने निम्बाहेड़ा महिला परिषद के पुनर्गठन की घोषणा की। श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने सभी पदाधिकारियों का परिचय दिया। श्रीमती पारसमणी मारवाडी ने बालिका परिषद गठित किए जाने की घोषणा की।

निम्बाहेड़ा में निर्माणधीन श्रीमद् राजेन्द्रसूरि जैन गुरु मंदिर में श्री मोरखियाजी ने श्री मणीलाल प्रेमचंद मोरखिया की ओर से ग्यारह हजार एक रुपये, पाठशाला में श्री कश्यपजी ने पांच पंखे, श्री वाडीभाई ने ग्यारह सौ एक रुपये तथा श्री चंदूभाई वोरा ने ग्यारह सौ एक रुपये दिए जाने की घोषणा की। अंत में सचिव ने आभार प्रदर्शन किया। पदाधिकारियों ने निर्माणाधीन गुरु मंदिर प्रतिमा के दर्शन किये।

नयागांव में परिषद के पदाधिकरियों ने श्री डुंगरवालजी के निवास स्थान पर समाज के अग्रणियों तथा युवाओं से भेंट की। यहां निर्णय किया गया कि नयागांव स्थित अर्न्तप्रान्तीय सीमा पर स्वागत सूचक एक होडिंग लगाया जाए। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने सभी से सुसंगठित होने की अपील की। वे नीमच रवाना हो गये। श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप के मुख्य अतिथ्य में यहां परिषद शाखा का गठन किया गया। पदाधिकारियों व कार्यसमिती का मनोनयन किया गया।

नीमच में रात्रि को साढे ग्यारह बजे तक समाज के अग्रणीय नर-नारी तथा पाठशाला के छात्र-छात्रा एकत्रित हुए थे। श्री राजेन्द्र पौषधशाला में आयोजित कार्यक्रम में बालिकाओं ने स्वागत गीत गाया। अतिथियों को माल्यार्पण किया गया। बालक महेन्द्र नांदेचा ने परिषद छन्द पढा। मनीष आदि छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम दिए। परिषद के स्थानीय अध्यक्ष - श्री शातिलालजी बोकड़िया ने शाखा का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। श्री अभयकुमार नांदेचा का भाषण हुआ। श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने कहा कि परिषद के माध्यम से नई गति लाएं, नए कार्यक्रम बनाएं डॉ. श्रीमती कोकिलाजी भारतीय ने आव्हान किया कि नारी शक्ति अगुवाई कर समाज को उन्नत करने हेतु आगे बढे। श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप ने प्रसन्नता प्रकट की कि नीमच शाखा ने कई कार्य किये हैं। श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने कहा कि पिछले वर्षों में परिषद ने समाज की ओर मोड़ लिया है। श्री भंवरलालजी छाजेड ने आभार प्रदर्शन तथा श्री पारसमलजी सेठिया ने संचालन किया।

अर्धरात्रि के पश्चात पदाधिकारीगण जमुनिया कलां पहुंचे जहां संघ के अग्रणीय महानुभावों ने श्री मोरखियाजी व श्री कश्यपजी का स्वागत किया। श्री माधवलालजी डूंगरवाल के नेतृत्व में कार्यकर्ता उपस्थित थे यहां छत के निर्माण के लिये श्री मोरखियाजी ने ग्यारह सौ एक रूपये तथा श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप ने ग्यारह सौ एक रूपये प्रदान किए। पदाधिकारीगण रात्रि ढाई बजे दलौदा में रात्रि विश्राम के लिए पहुंचें।

दिनांक २३अक्टुबर को प्रातः ६ बजे दलौदा में श्री सेवन्तीभाई ने श्री चैतन्य कुमारजी

कश्यप के मुख्य अतिथ्य में श्री शीतलनाथ जिन मंदिर एवं श्रीमद् राजेन्द्रसूरि गुरू मंदिर का शिलान्यास जय-जयकार के नारों के मध्य किया। क्रिया विधान श्री राजमलजी लोढा मंदसौर निवासी ने किया। उपरांत दलौदा के निरंतर कार्यक्रम के मध्य ही सभी पदाधिकारीगण धुंधड़का परिषदशाखा के निमंत्रण पर धुंधड़का पहुंचे। वहां ढोल के साथ ग्राम के बाहर मंदसोर जिला परिषद इकाई के प्रधानमंत्री व पूर्व सरपंच श्री बापुलालजी जैन, श्री महेन्द्रकुमारजी जैन तथा समाज के अग्रणीय महानुभवों ने अगवानी की। यहां परिषद ने संयुक्त रुपसे जैन समाज के तपस्वियों के बहुमान का कार्यक्रम आयोजित किया था। श्री मोरखियाजी तथा श्री कश्यपजी के हाथों तपस्वियों का बहुमान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री हस्तीमलजी भटेवरा एडवोकट ने किया। डॉ.कोकिला भारतीय ने महिला परिषद के गठन की घोषणा। श्री मोरखिया ने कहा कि आप लगातार प्रगति करते रहिए।

पुनः दलौदा आगमन पर म.प्र. परिषद इकाइ के अध्यक्ष डॉ. सोहनलालजी सुराणा के निवास पर पदाधिकारियों व अतिथियों का स्वागत किया गया। श्री मोरखियाजी को साफा बंधवाया गया। कम से कम पचास स्थानों पर श्री मोरखियाजी को तिलक, श्रीफल व सिक्कों से सन्मानित किया गया। स्थान-स्थान पर स्वागत द्वार बनाए गए थे व पताकांए लगी थी। पग-पग पर रेशमी हार लिए महानुभाव खड़े थे। यहां से सभी निर्माणाधीन जिनालय के सभागृह में पहुंचे जहां बहुमान का कार्यक्रम था। श्री मोरखियाजी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया जिसका वाचन स्थानिय परिषद अध्यक्ष श्री रमेशचंद्रजी मेहता ने किया। विभिन्न महानुभावों ने सभी अतिथियों का स्वागत साफे व माला से किया। श्री मोरखिया श्री कश्यपजी, श्री वाड़ीभाई, श्री चन्दूभाई तथा श्री राजमलजी लोढा का स्वागत शाल व साफे से किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सोहनलालजी सुराना को भी साफे से सन्मानित किया गया। उत्साहपूर्ण सहयोग के लिए श्री हीरालालजी जैन का सन्मान साफे तथा शाल से किया गया। समारोह में काफी भीड़ उपस्थित थी। श्री मोरखियाजी, श्री कश्यपजी तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने अपने भाषणों में शुभकामनाएं अर्पित की। संचालन श्री मोहनलालजी जैन ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. सुरानाजी, हीरालालजी जैन, रमेशजी मेहता, मोहनलालजी जैन, जमनालालजी जैन, रूपचंदजी जैन, कांतिलालजी पोरवाल, आदि जुटे हुए थे। कार्यक्रम में स्थानकवासी तथा दिगम्बर समाज के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे जिन्होंने श्री मोरखियाजी व श्री कश्यपजी का स्वागत किया।

दलौदा जिन मंदिर व गुरू मंदिर निर्माण में श्री मोरखियाजी ने इक्यावन हजार रु. श्री चैतन्यकुमारजी कश्यपजी ने ग्यारह हजार रुपये तथा श्री वाड़ीभाई संघवी ने पांच हजार रुपये प्रदान किए। इसका करतल ध्वनि के साथ स्वागत किया गया। कार्यक्रम काफी प्रभावशाली रहा।

दलौदा से बिदा लेकर पदाधिकारियों के कदम कचनारा की ओर बढे। यहां श्री राजेन्द्र पौषधशाला में समाज के अग्रणीय महानुभावों ने सभी का भावभीना स्वागत किया। यहां से रिंगनोद (जि. रतलाम) के लिए सभी रवाना हुए। मार्ग में ढोढ़र में श्री शांतिलालजी जैन ने श्री मोरखियाजी का स्वागत किया।

रिंगनोद (जि. रतलाम) में श्री राजेन्द्र उपाश्रय का शिलान्यास श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप

के करकमलों से श्री सेवन्तीभाई मोरखिया के मुख्य अतिथ्य में आयोजित किया गया। शिलान्यास विधि जय-जयकार के नारों के मध्य सम्पन्न हुई। श्री कश्यपजी ने शिलारोपण किया। बाद में पूरे ग्राम में एक भव्य जुलूस निकला जिसमें स्थान-स्थान पर श्री मोरखियाजी तथा श्री कश्यपजी का स्वागत किया गया। सभी ने नगर के जिन मंदिरों के दर्शन किए। वहां से पुनः निर्माणाधीन उपाश्रय प्रांगण में पहुंचे जहां स्वागत समारोह हुआ। श्री कश्यपजी ने गुरूदेव के चित्र को माल्यार्पण किया तथा श्री सेवन्तीभाई ने दीप प्रज्ज्वलित किया। धूप श्री वाडीभाई ने लगाई। समारोह श्री सुरेन्द्रजी श्रीमाल के मंगलाचरण के साथ प्रारंभ हुआ। स्वागत गीत अंतिम चौपड़ा व राजुल मेहता ने गाया। स्वागत भाषण श्री भीखमचंदजी चौपड़ा ने दिया। श्री चौपड़ाजी ने उपाश्रय निर्माण के बारे में योजना प्रस्तुत की। यह भूमि आपके परिवार द्वारा ही प्रदत्त है। कार्यक्रम में श्री मोरखियाजी, श्री कश्यपजी, श्री भंवरलालजी छाजेड़, श्री सुरेन्द्रजी लोढा, डॉ. कोकिलाजी भारतीय तथा डॉ. सोहनलालजी सुराना के भाषण हुए। केन्द्रीय परिषद की ओर से स्थानिय पाठशाला को अनुदान स्वीकृत किया गया। पदाधिकारियों तथा अतिथियों का बहुमान भी किया गया स्थानिय परिषद अध्यक्ष - श्री शांतिलालजी डूंगरवाल ने अभार प्रदर्शन किया।

रिंगनोद उपाश्रय निर्माण में चैतन्यकुमारजी कश्यप ने इक्कीस हजार एक रुपये तथा श्री सेवंतीभाई मोरखिया ने ग्यारह हजार एक रु. प्रदान करने की घोषणा की।

पदाधिकारियों ने परिषद द्वारा संचालित पाठशाला का भी निरीक्षण किया। छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। अध्यापन कार्य श्री सुरेन्द्रजी श्रीमाल कर रहे हैं। श्री मोरखियाजी के करकमलों से पाटशाला के छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरण करवाया गया। श्री भीखमचंदजी चौपड़ा ने अपने निवास स्थान पर सभी का स्वागत किया।

रिंगनोद से रवाना होकर पदाधिकारीगण तथा अतिथिगण पुनः जावरा पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज की सेवा में आशीर्वाद तथा निर्देशन प्राप्त करने के लिए पहुंचे। वहां एक घण्टे तक पूज्य आचार्यदेवश्री ने मार्गदर्शन किया।

अध्यक्ष श्री - मोरखियाजी, श्री वाड़ीभाई संघवी, श्री चंदूभाई वोरा, उपाध्यक्ष - डॉ. कोकिलाजी भारतीय, महामंत्री - श्री सुरेन्द्रजी लोढा तथा म.प्र. सहमंत्री - श्री महावीरकुमारजी जैन सायं खाचरोद पहुंचे जहां अल्प समय में श्री धर्मचंद्रजी नांदेचा तथा स्थानीय परिषद के पदाधिकारियों ने सभी का स्वागत किया। परिषद की गतिविधियों से अवगत किया। जहां सभी ने साध्वीजी श्री कल्पोरेखाश्रीजी के दर्शन लिए। पदाधिकारियों ने स्थानीय परिषद के प्रति आभार माना।

यहां से सभी नागदा जंक्शन रवाना हुए लेकिन समय के अभाव में यहां कार्यक्रम में भाग न ले पाए। न ही कार्यकर्ताओं से भेंट की। पदाधिकारियों ने नागदा जंक्शन समाज व शाखा परिषद से उनकी असुविधा के लिए क्षमायाचना की है।

इस प्रकार नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का द्विदिवसीय प्रवास आशातीत् सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सुरेन्द्र लोढा

जालोर नगर में
श्री राजेन्द्र–जयन्तसेन सम्यग्ज्ञान कन्या शिक्षण शिविर

प. पू. तीर्थ प्रभावक साहित्यमनीषी प्रशमरस महोदधि मधुर मृदुल भाषी वर्तमानाचार्य देवेश श्रीमद्विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. 'मधुकर' की शुभाज्ञानुवर्तिनी वयोवृद्धा सरलस्वाभाविनी साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. विदुषी डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं विदुषी डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. सा. की पावन निश्रा में दिनांक २५–१०–९१ से प्रारंभ दस दिवसीय आध्यात्मिक कन्या ज्ञान शिविर जालोर में सौल्लास निर्विघ्न दिनांक ३–११–९१ को समापन समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रातः ९ बजे समापन–समारोह का कार्यक्रम पूज्या साध्वीजी महाराज सा. द्वारा मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। सरस्वती वंदना भाव विभोर होकर कु. ममता, कु. रुचिका व कु. मंगलप्रभा आदि द्वारा की गई।

समारोह का अध्यक्ष पद स्थानिय निवासी श्री. एम. बी. जैन सेवानिवृत मुख्य अभियन्ता राजस्थान सरकार ने सुशोभित किया। श्रीमान भंवरलालजी चौपडा ने मुख्य अतिथि पद व श्रीमान नैनमलजी जैन एडवोकेट ने विशिष्ठ अतिथि का पद सुशोभित किया। इनका स्वागत तिलक, माल्यार्पण व नारियल भेंट के द्वारा कु. सीमा मेहता, कु. रीमा मेहता, कु. अनिता, कु. प्रेमलता, कु. पिंकी जैन आदि कन्याओं द्वारा किया गया।

तत्पश्चात् शिविरार्थिनी छात्राओं ने अपने शिविरानुभव भाषण सुनाए। जिनमें कु. रुचिका – पाली, कु. अंजु भंडारी, कु. सीमा मेहता – जालोर एवं कु. ममता जैन – पाली के विचार सशक्त, उद्बोधक एवं प्रेरणादायक रहे। छात्राओं ने आयोजकों के प्रति आभार प्रकट करते हुए प्रतिवर्ष ऐसे शिविर लगाने का समाज से आग्रह किया। कविता पाठ कु. मंजु – जालोर व प्रेरणादायक गजल कु. मनीषा – पारा (म. प्र.) ने पेशकर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। पू. साध्वीजी डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी ने मनुष्य को कर्तव्यनिष्ठ बनने के लिए प्रेरित किया। पूज्या डॉ. सुदर्शनाश्रीजी ने अपने प्रवचन में संयम का सरल एवंम् विशाल स्वरुप समझाया।

समारोह अध्यक्ष श्रीमान एम. बी. जैन द्वारा शिविर कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया गया। त्रिस्तुतिक समाज के अध्यक्ष श्री कानराजजी मेहता द्वारा शिविर–संचालक श्री सुकनचन्दजी जैन, धार्मिक अध्यापक रानी निवासी का बहुमान समाज की तरफ से किया। शिविर काल में भोजन व्यवस्था में आर्थिक सहयोग देनेवाले भाग्यशालीयों का भी बहुमान किया गया। मुख्य अतिथि श्री. चौपडा व विशिष्ठ अतिथि श्री. नैनमलजी ने अपने उद्बोधन में बताया कि युवावर्ग में धार्मिक भावना जागृत करने के लिए इस तरह के शिविर नियमित रूप से आयोजित होने चाहिऐ। इस शिविर में जालोर, आहोर, पाली, किशनगढ़, राणी, बालोतरा, पंचपदरा एवंम् पारा (म. प्र.) आदि विभिन्न नगरों की ८७ छात्राओं ने भाग लिया। तत्पश्चात् शिविर परिक्षा – परिणाम घोषित

हुआ। जिसमें 'अ' ग्रुप में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान कु. ममता – पाली, द्वितीय स्थान कु. अनिता आहोर एवं तृतीय स्थान कु. पिंकी पाली ने प्राप्त किया। 'ब' ग्रुप में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान कु. सीमा मेहता – जालोर, द्वितीय स्थान कु. प्रेमलता – आहोर व तृतीय स्थान कु. रीमा मेहता – जालोर ने प्राप्त किया। अन्त में विदाई गीत कु. अनिता – आहोर कु. ललिता – जालोर इत्यादि छात्राओं ने सुरीले स्वर में गाया।

इसके साथ ही शिविरकाल में समस्त छात्रा विनय, विवेक, संयम, सदाचार, अनुशासन एवं स्वावलम्बी जीवन – कर्तव्य पालन का पाठ सीखकर अपने जीवन में कुछ न कुछ नियम लेकर विदा हुई। यह शिविर की महान उपलब्धि रही। शिविरकाल में समस्त छात्राओं को भोजन इत्यादि समस्त सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई।

(चित्र विवरण पृष्ठ 68)

शोक श्रद्धांजली

- **इन्दौर** – श्री. मोहनखेडा तीर्थ निर्माता संघवी सेठ लूणाजी के प्रपौत्र राजमल जमींदार की धर्मपत्नी एवं साध्वीजी श्री. प्रियदर्शनाश्रीजी, सुदर्शनाश्रीजी, आत्मदर्शनाश्रीजी, सम्यग्दर्शनाश्रीजी की संसारी माताजी श्रीमती पूनीवाई का स्वर्गवास तीर्थयात्रा के दरम्यान उंझा (गुजरात) में दिनांक ११ अक्टूबर को हुआ। आप धर्मनिष्ठ कर्तव्यपरायण महिला थी।

- **मन्दसौर** – त्रिस्तुतिक जैन समाज के अग्रणीयत था नगरपालिका के पूर्व पार्षद श्री. सूरज मलजी छिंगावत का दुःखद निधन हो गया। श्री. छिंगावत अ. भा. प्रीरा जै. न. परिषद एवं नगर की कई सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध थे। वे एक निष्ठावान कर्मठ तथा इमानदार समाज सेवी थे।

- **निम्वाहेड़ा** – गुरुभक्त संगीतज्ञ एवं गायक श्री. मोड़सिंहजी (भंवरलालजी) बोहरा का २६–९–९१ को हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। आपके निधन पर शोकसभा आयोजित कर भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की गई।

- **मन्दसौर** – अ. भा. श्री. रा.जैन प. के पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री. मदनलालजी मेहता का दुःखद निधन हो गया। आप एक कर्मठ तथा निष्ठावान व्यक्ति थे। आपने अपने जीवन काल में कई संस्थाओं का विकास एवं संचालन किया।

- **राजगढ़ (धार)** – राजगढ़ निवासी श्री. बाबुलालजी मामा की धर्मपत्नि श्रीमती सुनन्दाबाई का अचानक श्री. केशरियाजी तीर्थ पर देहावसान हो गया। वे श्री सम्मेत शीखरजी की यात्रा हेतु गई थी। श्रीमती सुनंदाबाई महिला परिषद की सदस्या थी।

गर्भपात ! मातृत्व की हत्या है।

समाचार – सार

- **इन्दौर** – श्री. तिलकेश्वर जैन युवासंघ तिलकनगर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी अध्यक्ष – श्री. उत्सवलाल जैन, उपाध्यक्ष – श्री. किरणकुमार डूंगरवाल, सचिव – श्री. प्रमोद पोरवाल, कोषाध्यक्ष – श्री. महावीर कोठारी सर्व सम्मति से निर्वाचित किये गये।

- **इन्दौर** – श्री. तिलकेश्वर पार्श्वनाथ जैन धार्मिक पाठशाला की कार्यकारिणी के वार्षिक चुनाव भी सम्पन्न हुए।

- **इन्दौर** – श्री. तिलकेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ तिलकनगर में पू. चन्द्रोदयाश्रीजी आदि की निश्रा में ओलीजीपर्व के अन्तर्गत आयम्बिल एवं श्रीपालरास के वाचन के साथ ही २१६ घंटे का अखण्ड नवकार मंत्र का जाप एक युगल द्वारा किया गया।

- **प्रतापगढ़ (राज.)** – स्थानीय दिगम्बर जैन नयामंदिर के प्रांगण में दिनांक ८ नवम्बर से १४ नवम्बर तक पू. आचार्य श्री. पुष्पदंत सागर जी महाराज की निश्रा में धार्मिक ज्ञानशिबिर का आयोजन विभिन्न कक्षाओं (विभागों) एवं ध्यानयोग के प्रशिक्षण के साथ किया गया।

- **रतलाम** – दिगम्बर जैन संत पू. मुनिश्री योगीन्द्रसागरजी महाराज की प्रेरणा से अनेक लोगों ने मांसाहार का त्याग किया। शीघ्र ही मुनिश्री की प्रेरणा से एक अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा शाकाहार विश्व धर्मसम्मेलन का आयोजन किये जाने का हेतु कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार की जा रही है।

- **सारंगी (झाबुआ)** – दि.२३–१०–९१ को प्रातः ६–३५ बजे स्थानीय मन्दिर के मुलनायक प्रभु श्री. कुंथुनाथजी एवं गुरुदेव मंदिर के जिर्णोद्धार हेतु भूमिपूजन एवं शिलारोपण का कार्यक्रम श्री मोतीलालजी हरण के हाथों सम्पन्न हुआ। क्रियाकारक श्री. भंवरलालजी नांदेचा थे। इस अवसर पर स्थानीय समाज के अतिरिक्त राजगढ़ श्री संघ एवं परिषद के कार्यकर्ता गण भी उपस्थित थे। श्री हरण द्वारा यथा शक्ति सहयोग दिया गया।

- **राजगढ़ (धार)** – श्री श्वे. जैन तीर्थयात्रा व्यवस्थापिका समिति एवं श्री यतीन्द्र यात्रा मंडल राजगढ़ द्वारा संचालीत यात्रा संघ श्री सम्मेतशिखरजी एवं पावापुरी के लिए क्रमशः ३२ दिन एवं १८ दिन के लिए प्रस्थान कर गए।

- **थाने** – श्रीमती बदामबाई तेजराजजी बोराणा की ओर से दिनांक १९ नवम्बर को पालीतणा तीर्थ एवं नवाणु यात्रा हेतू आचार्य श्री अरिहंतसिद्धसूरीश्वरजी म. एवं साध्वी श्री ललितप्रज्ञाश्रीजी की निश्रा में तीर्थ यात्रा का आयोजन किया गया दिनांक २०–११–९१ को नवाणु यात्रा के आराधकों का पालीतणा में प्रवेश एवं स्वागत किया गया।

- **थाने** – कोकण शत्रुंजय थाना तीर्थ में प्रथमबार भव्य नवकार गहुंली, सूत्र लेखन एवं रंगोली का प्रदर्शन दिनांक ११–११–९१ से २१–११–९१ तक किया गया।

• **मुलुन्ड (बम्बई)** – श्री कच्छीदशा ओसवाल जैन सर्वोदय मंडल (रजि.) मुलुन्ड के उपक्रम ज्ञाति के छट्ठे वस्ती पत्रक का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री. शांतिलाल मूलजी शीयाल ने की।

• **खिमेल (राज.)** – खिमेल नगर में पू. आचार्य श्रीमद्विजयसुशीलसूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी आदि ठाणा तथा पू.सा. श्री रत्नयशाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में 'सुशील महाकाव्यम' (हिन्दी) ग्रंथ का विमोचन समारोह एवं ऐतिहासिक चातुर्मास में सम्पन्न विविध आराधना के अनुमोदनार्थ त्रिदिवसीय श्री अर्हद्महापूजन युक्त पंचान्हिका जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन दिनांक १०–११–९१ से १४–११–९१ तक किया गया।

• **उदयपुर (राज.)** – पू. मुनिराज श्री रत्नसेनविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री. नारायणलाल भंवरलाल शोभावत (चोरड़िया) परिवार द्वारा उदयपुर से श्री. केशरीयाजी महातीर्थ की यात्रा हेतु 'छ' री पालित यात्रा संघ का प्रमाण २६–११–९१ को किया गया संघमाला का कार्यक्रम १–१२–९१ को किया गया।

• **पूणे** – पूज्य गणिवर्य मुनिराज श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. की निश्रा में दिनांक ५–१२–९१ से उपधान तप किये जाने का निर्णय लिया गया है। उपधान तप में प्रथम प्रवेश ५–१२–९१ को एवं द्वितीय प्रवेश ९–१२–९१ को होगा तथा मालमहोत्सव २४–१–९२ को होगा।

• **बीकानेर** – अ. भा. श्री साधुमार्गी जैन संघ का २९ वां तीन दिवसीय वार्षिक सम्मेलन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा के प्रेरक उद्बोधन और महत्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न हुआ।

• **गुन्टुर (आ.प्र)** – पू. मुनिराज श्री नंदनविजयजी म. सा. आदि ठाणा एवं पू. मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास काल में सम्पन्न विविध तपश्चर्याओं एवं आराधनाओं के अनुमोदनार्थ परमात्मभक्तिमय अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन १३–१०–९१ से २०–१०–९१ तक किया गया।

• **मद्रास** – मद्रास नगर में पू. आचार्य श्री राजयशसूरीश्वरजी म. सा., पू. विमलसेन विजयजी म. सा. तथा मुनिश्री नंदिभूषण विजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास दौरान विविध तपश्चर्याओं के साथ २३५ मासक्षमण की तपस्या सम्पन्न हुई सभी तपस्वियों का पारणा एवं बहुमान एक ही स्थान पर आचार्य श्री. एवं पू. मुनिराजों के सानिध्य में एक महोत्सव के रूप में किया गया। इस उपलक्ष में एक भव्य चल समारोह का आयोजन किया गया था। श्री भक्तामर महापूजन, श्री सिद्धचक्र पूजन एवं पू. आचार्य श्री विक्रमसूरीश्वरजी म. सा. की ५ वीं पुण्यतिथी निमित्ते महोत्सव भी आयोजित किया गया।

• **दलौदा (म. प्र.)** – तीर्थ प्रभावक प्रज्ञापुरुष परमपूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज सा. की

प्रेरणा से प्रस्तावित श्री जिनमन्दिर – गुरूमन्दिर का शिलारोपण माननीय श्री सेवंतीलालभाई एम. मोरखिया (बम्बई) अध्यक्ष – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के कर कमलों द्वारा दिनांक २३–१०–९१ को सम्पन्न हुआ। शिलारोपण के पश्चात शोभा यात्रा निकाली जाकर श्री मोरखियाजी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

- **गुन्टुर** – श्री राजेन्द्र सूरि जैन सेवा समिति एवं शा. पीरचंद महावीर कुमार के सहयोग से ८ वां निःशुल्क नेत्रशिविर का उद्‌घाटन एवं श्री राजेन्द्र फ्री हॉस्पिटल की छट्टी वर्ष गांठ १८ अक्टोबर को श्री. एम्. नागार्जुन (जिलाधिश) के मुख्य आतिथ्य तथा प्रो. डॉ. आर बी. कृष्णमूर्ति (सुपरिन्टेन्डेन्ट सविल हॉस्पिटल) एवं श्री. पसुपुलेट्टी गोपाया (प्रभारी चेयरमेन म्युनिसिपालिटी) की उपस्थिति में एक समारोह के साथ किया गया। जीवबन्धु श्री पिलारामकृष्ण ने पशु पक्षीयों के प्रति प्रेम रखने एवं मांसाहार तथा पशुबली छोड़ने हेतु ओजस्वी भाषण दिया। जिससे प्रभावित होकर श्री. गौपय्याजी ने मांसाहार छोड़ने की घोषणा सभा में की। सभा में उनकी इस घोषणा का हर्ष ध्वनि से स्वागत किया एवं अन्य १५ लोगों ने भी मांसाहार छोड़ने की प्रतिज्ञा की, सभी का सभा में सम्मान किया गया।

- **ब्यावर (राज.)** – पूज्य जैनाचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी महाराज के सानिध्य में १८–१०–९१ को उपधान तप का प्रथम प्रवेश मुहूर्त एवं २०–१०–९१ को द्वितीय प्रवेश मुहूर्त तथा २२–१०–९१ को तृतीय प्रवेश मुहूर्त हुआ। आचार्य श्री की प्रेरणा से उत्तर भारत, राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र में युवक–युवतियों में आध्यात्मिक जागृति हेतू दिनांक २०–१०–९१ को व दक्षिण भारत में २७–१०–९१ को खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसका संचालन आध्यात्मिक शिक्षणकेन्द्र ब्यावर से श्री ताराचंदजी छाजेड़ द्वारा किया गया।

- **भीनमाल** – मुनिराज श्री भुवनविजयजी, श्री जयानन्द विजयजी आदि ठाणा की निश्रा में साठ भाई–बहनों ने नाण समक्ष व्रत उच्चारित किये। सभी का बहुमान शाल अर्पण कर शा देवीचंदजी छगनराजजी द्वारा किया गया।

- **कोयम्बतूर** – पू. साध्वीजी श्री मुक्तिश्री जी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मासान्तर्गत विविध तपश्चर्या एवं आराधना के अनुमोदनार्थ श्री नवपद ओलीजी एवं विविध महापूजन सहित नवान्हिका परमात्मभक्ति महोत्सव दिनांक १५–१०–९१ से २३–१०–९१ तक सानन्द मनाया गया।

- **सिरोही (राज.)** – श्री नेनमलजी सुराणा सम्पादक 'सुशील संदेश द्वारा राजस्थान के पेंतीस तीर्थों की विडियो फिल्म 'राजस्थान तीर्थ दर्शन' का निर्माण किया जा रहा है। यह फिल्म शीघ्र ही प्रदर्शित किए जाने की कार्यवाही चल रही है।

- **अजमेर** – पू. आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में पंजाब केशरी आचार्य श्री वल्लभ सूरीश्वरजी म. सा. की प्रतिमा का अनावरण, जैन आराधना भवन का

उद्घाटन एवं अजमेर नगर में प्रथम बार संक्रांति महोत्सव समारोह लाखन कोटड़ी स्थित श्री आत्मवल्लभ तपागच्छ उपाश्रय में चातुर्मास पश्चात सम्पन्न होगा।

- **भिवंडी** – मुनिराज श्री विश्वानंद विजयजी आदि ठाणा की निश्रा में विविध तपों की अनुमोदना एवं विजयरामचंद्रसूरीश्वरजी के संयम जीवन अनुमोदनार्थ लघुशान्ति स्नात्रसह पंचान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया। मुनिराज श्री जिनेन्द्रविजयजी द्वारा दो बार नव–नव उपवास के पारणे उनकी धारणा अनुसार आहोर निवासी झुमरमलजी के सुपुत्र चम्पालालजी व नेमीचंदजी ने सजोडे चार–चार महिने का ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार कर करवाये।

- **दिल्ली** – तपस्वी पू. मुनिराज श्री अभय मुनिजी के ३१ उपवास की तपस्या के उपलक्ष में आयोजित समारोह में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि संतसमाज स्वयं में चलता फिरता एक ज्ञान–साधना, त्याग–वैराग का अनुपम भंडार है। इनका जीवन ही एक खुली किताब के समान मानव मात्र के लिए सत्साहित्य का काम करता है। इसी अवसर पर राष्ट्रपति ने क्रांतिकारी युवा संत श्री कमलमुनि म. को साहित्य की प्रतियां भेंट की।

- **दिल्ली (अशोक विहार)** – पू. आचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज के सानिध्य में विश्व मैत्री एवं क्षमापना दिवस समारोह का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री. पी. व्ही. नरसिंहरावजी द्वारा किया गया एवं अध्यक्षता डा. दौलतसिंहजी कोठारी द्वारा की गई।

- **मद्रास** – पू. आचार्य श्री. राजयश सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री सर्वोदयाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में पू. गुरुदेव श्री. लब्धिसूरीश्वरजी म. सा की तीसवी पुण्य तिथी के उपलक्ष में पू. आचार्य श्री विक्रमसूरीश्वरजी म. सा. के संकल्प की सिद्धिस्वरूप २१६ मासक्षमण की तपश्चर्या की गई, जिसके अनुमोदनार्थ १५–९–९१ को एकविशाल चल समारोह का आयोजन किया जाकर सभी तपस्वियों का बहुमान किया गया।

- **बम्बई (प्रार्थना समाज)** – मुनिश्री विमलसागर जी एवं मुनिश्री पद्मविमलसागरजी म. सा. आदि ठाणा के सानिध्य में निगोद आयुक्षम तप इत्यादि विविध तपश्चर्याओं के अनुमोदनार्थ एवं पर्युषण पर्व की सानन्द सम्पन्न आराधना निमित्त सात महापूजनोंसह ग्यारह दिवसिय भव्य प्रभुभक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया।

- **सारंगी (म. प्र.)** – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रीय संगठन मंत्री श्री कांतिलालजी भंडारी की उपस्थिति में यहां प्रथम बार शाखा परिषद का गठन किया गया, जिसमें नगर के सभी युवाओं ने उत्साह से भाग लिया। सर्वानुमति से पदाधिकारियों का चयन किया गया।

- **श्री बालदा तीर्थ** – सिरोही जिले में स्थित बालदा तीर्थ में मगसर सुदि ६ से उपधान तप आचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी की निश्रा में प्रारंभ हुआ है।

- **फालना** – श्री नेमिनाथ जैन तीर्थ,

अम्बाजी नगर–फालना में आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में मागसर सुदि ६ से उपधान तप प्रारंभ हुआ है।

- **दादर** – आचार्यश्री कीर्तिचंद्रसूरीश्वरजी की प्रथम पुण्यतिथि निमित्त एकादशान्हिका महोत्सव का आयोजन मुनिश्री हरीशभद्रविजयजी एवं आचार्य श्री भद्रंकरसूरीश्वरजी की निश्रा में किया गया है। २७ दिसम्बर को आप की निश्रा में थाना तीर्थ हेतु छ 'रि' पालित संघ प्रस्थान करेगा, जो २९ तारीख को थाना तीर्थ में पहुंचेगा।

- **राजमहेन्द्री** – आंध्रप्रदेश जीवरक्षा संघ के संयुक्त सचिव श्री भुपेन्द्रकुमार जैन ने सूचना प्रसारण मंत्री को पत्र लिखकर डा. मीचाइल टोवीयाज द्वारा केलिफोर्निया में बनी 'अहिंसा' विषयक फिल्म दूरदर्शन पर दिखाने की मांग की है।

- **अलीराजपुर** – कार्तिक पूर्णिमा का मेला श्री लक्ष्मणतीर्थ पर श्री सिद्धचक्र पट्ट दर्शन, भाता वितरण, नवाणुप्रकारी पूजा, स्वामीवात्सल्य, आरती एवं रात्रि भक्ति आदि आयोजनों के साथ संपन्न हुआ। जिसमें आलीराजपूर श्री संघ, ट्रस्ट मंडल, अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद, बाल–बालिका परिषद का सहयोग रहा। (प्रेषक – कुन्दनलाल काकडीवाला)

- **दिल्ली** – यहाँ आयोजित होनेवाले 'विश्व पुस्तक मेले' में जैन साहित्य विक्री हेतु प्रकाशक इस पते पर पत्रव्यवहार कर सकते हैं – गीता जैन, १२ हीराभुवन, वी. पी. रोड, मुलुंड (प) बम्बई–८०

- **दिल्ली** – 'सहजानन्द' पत्रिका के सम्पादक डॉ. अशोक जैन ने अपने पू. पिताजी एवं माताजी के स्मृति में 'केलादेवी सुमतिप्रसाद ट्रस्ट' की स्थापना की है, जिसके द्वारा प्रतिवर्ष जैनविद्या क्षेत्र में कार्यरत एक विद्वान को पुरस्कृत किया जायेगा। पुरस्कार में इक्कावन सौ रुपये व स्मृतिचिन्ह भेंट का प्रावधान है। इस वर्ष मद्रास के डॉ. रविन्द्रकुमार जैन को यह पुरस्कार संभवतः फरवरी १९९२ में प्रदान किया जायेगा।

- **थाना तीर्थ** – आचार्य श्री भद्रंकरसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में छ 'रि' पालित संघ सायन (बम्बई) से ३० नवम्बर को यहाँ पहुंचा। २०० यात्रिकों की उपस्थिती में संघपति श्री हंसमुखभाई धीरजलाल परिवार का बहुमान एवं तीर्थमाल का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बम्बई में जिनशासन रक्षा समिति का गठन........

वर्तमान जैन शासन में शिथिलाचार की कुछ दुःखद घटनायें पिछले दिनों प्रकाश में आयी हैं। प्रवर्तमान क्षतियों को गंभीरता से लेकर योग्य उपाय के द्वारा दूर कर शासन रक्षा एवं प्रभावना के भगीरथ कार्य को करने के दृढ़ संकल्प को लेकर उपरोक्त समिति का गठन किया गया है।

१) मुख्य अतिथी - (म. प्र.) मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा. आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. से आशिर्वाद ग्रहण करते हुए।

२) अ. भा श्री रा. जै. न. प. के अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई गोरखीया उद्‍वोधन देते हुए ।

३) म. प्र. मुख्यमंत्री श्री पटवाजी मुनिश्री नित्यानंदविजयजी म. व्दारा लिखित पुस्तक 'समर्पण' का विमोचन करते हुए।

४) श्री पटवाजी आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी की तस्वीर को माल्यार्पण करते हुए ।

१) परिषद अध्यक्ष श्री सेवन्तीभाई मोरखीया आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. से वासक्षेप ग्रहण करते हुए ।

२) मुख्यमंत्री श्री पटवाजी का शाल श्रीफल व्दारा अभिनंदन करते हुए श्री त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष श्री गगलदासभाई संघवी एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए श्री चातुर्मास समिती के अध्यक्ष श्री शांतीलालजी दसेड़ा।

३) श्री लक्ष्मीचंदजी जैन 'सरोज' का शाल एवं श्रीफल व्दारा अभिंनदन करते हुए परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप ।

४) विशालचल समारोह का एक दृष्य ।

१) प्रार्थना करती हुई शिविरार्थिनी छात्राएं

२) सामायिक लेती हुई शिविरार्थिनी छात्राएं

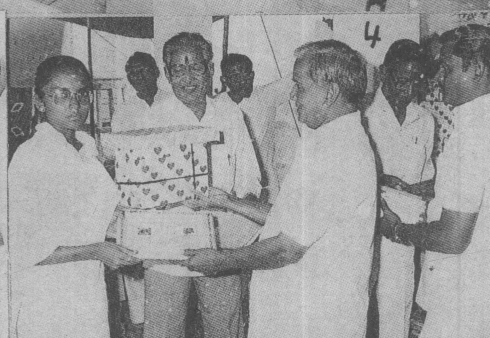

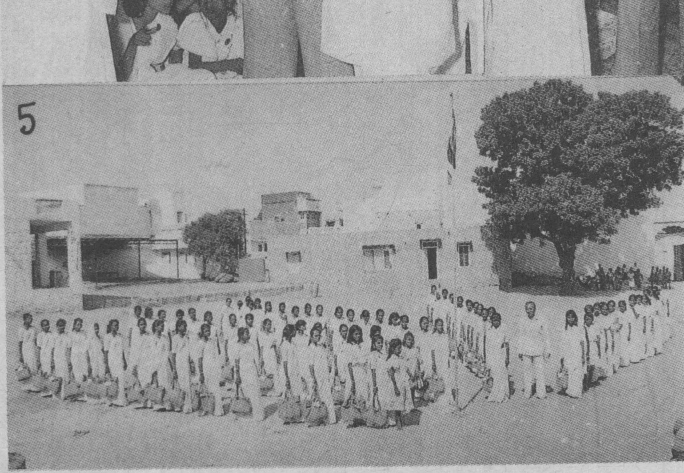

3) A. ग्रुप में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती हुई कु. ममता पाली

४) B. ग्रुप में पुरस्कार प्राप्त करती हुई कु.सीमा मेहता जालोर

५) ध्वजवंदन करती हुई छात्राएं

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल,बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भैंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल,कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ-आणंद

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट - टूथपाउडर

नये युग की हर्बल-लहर जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और चमकता रखे.

अमर टूथपाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. **रु. ७.५०**
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. **रु. ८.५०**
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. **रु. ११.५०**

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माता: स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्री: ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

संपादक - **जे.के.संघवी** अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।